गुरुदत्त
उपन्यास साहित्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ोसी

43

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167929
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ोसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ोसी

गुरुदत्त

Central Library
167929
Gurukul Kangri (Deemed) University, Haridwar
081
167929

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© भारती साहित्य सदन

R
089.9143
GUR-P

मो० 7065618655, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. पी. सरस, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य : ८५ रुपये मात्र

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
३०-पी, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१
फोन : ३३६३५५७
संस्करण : १९९८
मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम अध्याय

: १ :

लखनऊ से बनारस के लिए पैसेंजर गाड़ी प्रातः आठ बजे छूटती थी। दिसम्बर के महीने में क्रिसमस की छुट्टियों में पूर्व की ओर जा रहे विद्यार्थियों को वही गाड़ी सबसे अधिक उपयुक्त रहती थी। उस गाड़ी से जाने पर स्टेशनों से दूर गाँवों को जानेवालों को दिन रहते घर पहुँचने का सुभीता रहता था। यही कारण था कि चौबीस दिसम्बर के प्रातःकाल भारी संख्या में लड़के अपना-अपना सामान उठाए स्टेशन के मुख्य द्वार से उस प्लेटफॉर्म को जाते दिखाई दिए जिस पर बनारस की गाड़ी खड़ी थी।

प्रायः सब स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थी थे और छोटी-बड़ी सब श्रेणियों में पढ़नेवाले थे। रेल के थर्ड क्लास के और इंटरक्लास के विद्यार्थी भारी संख्या में थे। कुछ सैकण्ड क्लास में यात्रा करनेवाले भी थे।

रेल के कर्मचारी समझ गए थे कि विद्यार्थी छुट्टियों पर घर जा रहे हैं। वे देख रहे थे कि कोई जानेवाला रह न जाए। इस कारण उस दिन गाड़ी दस मिनट देरी से छोड़ी जा रही थी।

इसपर भी जब गाड़ी सीटी बजा रही थी, एक विद्यार्थी प्लेटफॉर्म नम्बर एक से प्लेटफॉर्म नम्बर सात की ओर अपना अटैची-केस हाथ में लटकाए हुए भागा चला आता दिखाई दिया। गार्ड सीटी मुख में रखे बजाते-बजाते रुक गया।

विद्यार्थी हाँफता हुआ गार्ड के समीप से गुज़रा तो गार्ड ने मुस्कराते हुए कहा, ''जल्दी करो बाबू साहब! आज आप लोगों के लिए खास रियायत हो रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी ने गार्ड के समीप खड़े हो घूमकर पीछे को देखा। इसपर तो गार्ड को कुछ क्रोध चढ़ आया। उसने कह दिया, ''तुमको जाना नहीं है क्या?'' और इतना कहकर उसने सीटी बजा दी।

विद्यार्थी के मुख से निकल गया, ''थैंक्यू।'' और वह भागकर सामने खड़े फर्स्ट क्लास के डिब्बे में सवार हो गया। इस डिब्बे में एक यात्री पहले बैठा था। उसने उस विद्यार्थी को हाँफते हुए दरवाज़े के समीप खड़े बाहर को झाँकते देखा तो कह दिया, ''बैठ जाओ भाई! क्या कुछ पीछे छूट गया है?''

''जी।'' उसका उत्तर था। गाड़ी चल पड़ी थी और उस समय प्लेटफॉर्म से बाहर निकल रही थी। लड़का अभी भी पीछे लालच-भरी दृष्टि से देख रहा था। सहयात्री ने पुनः लड़के से पूछ लिया, ''क्या कुछ छूट गया है?''

''एक साथी था।''

''कहाँ रह गया है?''

''उसके पास सामान था। कुली मिला नहीं और स्वयं वह उठा नहीं सका, इस कारण वह प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर ही खड़ा है।''

''उसे जल्दी आना चाहिए था।''

''कुछ लाभ न होता।''

''होता क्यों नहीं? जल्दी आने सें कुली मिल जाता। यदि न भी मिलता तो तुम दोनों मिलकर कई बार में सब सामान ले आते।''

लड़का इस समय सहयात्री के समीप बैठ गया था। वह यात्री की युक्ति को समझ रहा था और अपने समय पर न आ सकने का दोष दूसरे पर डालने के विचार से कहने लगा, ''ऐसा हो नहीं सकता था।''

यात्री मुस्कराते हुए पूछने लगा, ''क्यों नहीं हो सकता था? किसी आवश्यक कार्य में लगे हुए थे जो होस्टल से जल्दी नहीं चल सकते थे?''

विद्यार्थी ने समझ लिया कि उसकी हँसी उड़ाई जा रही है। इस कारण उसने व्यंग्यात्मक भाव में कह दिया ''साहब! सर्दी का मौसम है। कॉलेज-होस्टल रेल के स्टेशन से तीन मील के अन्तर पर है। लखनऊ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ताँगे भी ठुकर-ठुकर चलते हैं और फिर रेल बाबू भी तो टिकट जल्दी बनाकर नहीं देता।''

''ओह, यह सब तो मुझको ज्ञात नहीं था!'' यात्री ने व्यंग्य के भाव में कह दिया। उसका विद्यार्थी की युक्ति से समाधान नहीं हुआ था। वह जानता था कि लड़कों का घर जाने का कार्यक्रम एकाएक तो बना नहीं होगा। छुट्टियाँ आरंभ होने से कई दिन पहले ही ये तैयार हुए होंगे। यदि दूरदृष्टि से काम लिया होता तो ये सब बहाने बनाने का अवसर न होता। परन्तु इसके अतिरिक्त भी कुछ बात थी। इस कारण यात्री ने पूछ लिया, ''किस स्कूल में पढ़ते हो?''

''स्कूल नहीं, साहब! गवर्नमेंट कॉलेज के सैकण्ड ईयर में पढ़ता हूँ।''

''ओह! पर तुम तो अभी छोटी आयु के ही प्रतीत होते हो?''

''क्या आयु समझते हैं आप मेरी?'' विद्यार्थी की आँखें शरारत से चमकने लगी थीं।

यात्री ने लड़के को भली-भाँति देखकर कहा, ''यही सात-आठ वर्ष।''

''जी नहीं, मैं अठारहवाँ वर्ष पार कर रहा हूँ।''

''तब तो तुम युवक कहे जा सकते हो।'' सहयात्री हँस पड़ा। उसने पूछ लिया, ''तुम्हारा साथी?''

''वह सहपाठी है।''

''दोनों एक ही स्थान के रहनेवाले हो?''

''जी नहीं। मैं तो प्रतापगढ़ उतरनेवाला हूँ। वह जंघई तक जानेवाला था।''

''क्या नाम है?''

''मेरा या उसका?''

यात्री मुस्कराते हुए बोला, ''दोनों का।'' यात्री हँस रहा था।

लड़के ने साथी का नाम बताने से बचने के लिए कह दिया, ''आप किसी स्कूल-कॉलेज में पढ़े मालूम नहीं होते, जो इस तरह पूछ रहे हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि पढ़ा होता तो किस तरह पूछता?"

"देखिए, मैं बताता हूँ। मैं आपको कहता—जी, मैं चन्दनसिंह हूँ। सरवरगंज का रहनेवाला हूँ। पिता जी का नाम दिलजीतसिंह है। हम मध्यम श्रेणी के ज़मींदार हैं। इस प्रकार अपना परिचय देकर मैं आशा करता और आप भी अपना परिचय दे देते।"

"और यह तरीका तुम्हारे स्कूल-कॉलेज में सिखाया जाता है?"

"जी, मैं काल्विन स्कूल में पढ़ा हूँ और उसमें सभ्य व्यवहार का तरीका सिखाया जाता है। यह वहाँ ही बताया गया है।"

"तब तो ठीक है। तुम्हारे मास्टर बहुत ही योग्य लोग मालूम होते हैं। मगर व्यवहार में यह चल नहीं सकता। मान लो कि मैं अपना नाम बता भी देता और तुम अपना और अपने साथी का नाम बताना नहीं चाहते तो झूठ बोल देते। कुछ नकली नाम बता देते। झूठ बोलनेवाला या झूठ बोलने में प्रोत्साहन देनेवाला तो पाप का भागी होता है। इससे मैं यह तरीका गलत समझता था। अब तुम कहते हो कि यह तुम्हारे मास्टर ने सिखाया है। यदि ऐसा है तो यह जरूर ठीक मानना चाहिए। मास्टर तो योग्य व्यक्ति ही होते हैं।

"क्यों चन्दनसिंहजी! तुम क्या कहते हो?"

"परन्तु आपके तरीके से भी तो बतानेवाला इच्छा न होने पर झूठ बोल सकता है।"

"हाँ, बोल तो सकता है। परन्तु उसके बोलने में प्रोत्साहन नहीं मिलता। मैं नाम बता दूँ तो सभ्य व्यवहार के विचार से तुमको भी कोई नाम बताना चाहिए। असल नाम तुम बताना नहीं चाहते, इस कारण प्रश्नकर्त्ता की ओर से झूठ बोलने के लिए प्रेरणा हो जाएगी।

"जैसे मैंने पूछा है, वह तो एक प्रकार से प्रार्थना मात्र है। तुमको नाम बताने की विवशता नहीं। तुम कई प्रकार से इन्कार कर सकते हो। तुम कह सकते हो—'जी, मुझ नाचीज के विषय में जानकर क्या करिएगा?' तुम यह भी कह सकते हो कि 'श्रीमान्! मैं सैकड़ों-लाखों में एक हूँ। नाम बताने का क्या लाभ?' यदि तुममें साहस हो तो तुम कह सकते हो, 'क्षमा करें, गुमनाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना चाहता हूँ', इत्यादि। यह अधिक मानयुक्त व्यवहार होता।''

चन्दनसिंह देख रहा था कि सहयात्री देहाती पहरावे में होता हुआ भी युक्ति करने में चतुर है। इसपर भी उसने बच्चों की-सी चपलता का प्रदर्शन करते हुए पूछ लिया, ''आप बताइए कि आप मेरा नाम-धाम किसलिए पूछ रहे हैं?''

''इसलिए,'' सहयात्री का सतर्क उत्तर था ''कि तुममें रुचि उत्पन्न हो गई है। तुम्हारे हृदय में अपने साथी के लिए इतनी सहानुभूति देख कि तुम घूम-घूमकर उसकी ओर देख रहे थे, परन्तु उसके लिए यह गाड़ी छोड़ नहीं सके, तुम्हारे विषय में और अधिक जानने की इच्छा हो गई है। इसपर भी यदि तुम बताना न चाहो तो कई तरीकों से टाल भी सकते हो। उन तरीकों में से कुछ मैंने अभी-अभी बताए हैं।

''देखो चन्दनसिंह! तुम्हारे मास्टरवाला तरीका कुछ ठीक प्रतीत नहीं होता। मेरे तरीके से तुम बताने से इन्कार भी कर सकते हो, परन्तु उस तरीके से तो तुम झूठ-सत्य कुछ-न-कुछ बताने के लिए विवश हो जाते।

''यदि तुम बताने से इन्कार कर देते तो मैं तुमसे पूछने के लिए क्षमा माँग लेता और तुम्हारी इच्छाओं का मान करता।

''सबसे बड़ी बात यह है—तुम कह रहे हो कि वह तुम्हारा साथी है, सहपाठी है और प्रतापगढ़ तक सहयात्री भी हो सकता था। इसपर भी तुम्हें उसको पीछे छोड़, भागकर गाड़ी पकड़ते देख तुम्हारे मन के एक और रूप का पता चलता है।''

सहयात्री इतना कहकर लड़के का मुख ताकने लगा। चन्दनसिंह इतने लम्बे व्याख्यान से व्याकुलता अनुभव करने लगा था। इसपर भी अभी कुछ और कहे जाने का नोटिस सुन पूछने लगा, ''जी, क्या पता चला है?''

''यही कि तुम्हारे घर में कोई उस साथी से भी प्रिय तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। तुम्हारा विवाह हो चुका है?''

चन्दनसिंह हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, ''जी नहीं। अभी नहीं हुआ।''

''तो माँ होगी, जिसका स्नेह पाने के लिए उतावले हो रहे होगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दनसिंह को अपनी माँ से किसी प्रकार का विशेष स्नेह नहीं था। इस कारण वह मुस्कराकर चुप रहा।

दोनों में वार्तालाप आरम्भ हुआ तो फिर चलता ही रहा। अनेकानेक विषयों पर बातचीत होती गई और चन्दनसिंह को और भी अधिक ज्ञात होता गया कि यह यात्री पढ़े-लिखे लोगों के संसार से अनभिज्ञ है। इसपर भी उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहता था जब वह उसको बात-बात पर निरुत्तर कर देता था।

स्टेशन पर स्टेशन आते गए और गुज़रते गए। नौ बजे के लगभग रायबरेली स्टेशन आया। सहयात्री का नौकर एक लोटे में जल लाया और सहयात्री के हाथ धुला ऊपर की सीट पर रखे कटोरदान में से खाना परसने के लिए अपने मालिक के सम्मुख पत्तल बिछाने लगा। सहयात्री ने चन्दनसिंह की ओर संकेत कर कहा, ''इनके लिए भी लगा दो।''

चन्दनसिंह ने कहा, ''जी नहीं। आप अल्पाहार लीजिए। मैं कुछ ले चुका हूँ और शेष घर जाकर ले लूँगा।''

''परन्तु तुम घर पर तो चार बजे के लगभग पहुँचोगे।''

''मुझे इस प्रकार यात्रा करने का स्वभाव है।''

''परन्तु, तो भी, भूखे रहने का अर्थ क्या है?''

''मैं यही विस्मय कर रहा हूँ कि आप मुझमें बहुत अधिक रुचि और सहानुभूति दिखा रहे हैं। मैं समझ नहीं सका कि क्यों?''

''देखो, पहले हाथ धो लो। फिर खाते हुए बात कर लेंगे।''

चन्दनसिंह के लिए इन्कार करना सम्भव नहीं रहा। वह गाड़ी से प्लेटफॉर्म पर निकला और नौकर से जल ले हाथ धोने लगा।

हाथ धो, रूमाल से पोंछ गाड़ी में आ बैठा तो नौकर ने उसके सामने भी पत्तल बिछा दी। नौकर ने दोनों पत्तलों पर मिठाई, पूरी, साग लगा दिया और पीने के लिए दो कुल्हड़ों में जल डालकर रख दिया। दोनों यात्री खाने लगे तो नौकर सामने खड़ा रहा। गाड़ी फिर चल पड़ी और उन दोनों में पुनः रुचिकर वार्तालाप चलने लगा।

''मैं आपकी अपने में रुचि का कारण समझ नहीं सका।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो एक बहुत ही सरल-सी बात है। तुम सहयात्री हो, मनुष्य हो, कुमार हो। और फिर तुम्हारे साथी की परिभाषा जानने में अभिरुचि बनी ही है।"

"साथी तो साथ रहनेवाला ही होता है।"

सहयात्री हँस पड़ा। हँसते हुए पूछने लगा, "यह तुमने साथी के अर्थ बताए हैं अथवा उसका पर्याय बताया है ? मैं समझता हूँ कि दोनों में एक भी नहीं।"

इसपर चन्दनसिंह ने बता दिया, "साथी वह है जो साथ-साथ चले। साथी वह है जो एक ही कमरे, मकान, मुहल्ले, प्रान्त अथवा देश में रहे। कभी-कभी साथी पूर्व और पश्चिम के रहनेवालों में भेद बताने के लिए भी प्रकट किया जाता है।"

"और हम-मज़हब साथी नहीं होते क्या ?" सहयात्री ने पूछ लिया।

"मज़हब मूर्खों के बनाए हुए हैं। इनसे साथी और न-साथी का पता नहीं चलता।"

"यह भी तुम्हारे मास्टर ने ही बताया है ?"

"जी।"

"बात यह भी दोषपूर्ण है। साथी अधिकतर हम-मज़हबों में ही मिलते हैं। परिवार, मुहल्ले, गाँव, प्रान्त, देश तथा भूमण्डल में तो साथी बहुत कम पाए जाते हैं।"

ये सब चन्दनसिंह के लिए नवीन बातें थीं। वह विचार करने लगा। बातों-बातों में खाना भी समाप्त हो गया। फिर स्टेशन पर स्टेशन पार करते हुए डेढ़ बजे के लगभग वे प्रतापगढ़ पहुँचे।

: २ :

चन्दनसिंह के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि उसका सहयात्री भी प्रतापगढ़ स्टेशन पर ही उतर रहा है। इसपर उसके मन में यह जानने की उत्सुकता उत्पन्न हुई कि यह कौन व्यक्ति है ? अभी तक वह समझ रहा था कि यह बनारस जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दनसिंह पहले गाड़ी से उतरा। प्लेटफॉर्म पर उतर वह यात्री को नमस्ते कहने के लिए घूमा तो वह यात्री भी नीचे उतर आया और उसका नौकर उसका सामान नीचे उतारने लगा। इसपर विस्मय में चन्दनसिंह ने पूछ लिया, "तो आप भी यहीं उतर रहे हैं?"

यात्री मुस्कराया और चन्दनसिंह के साथ स्टेशन के द्वार की ओर चल पड़ा। नौकर सामान इकट्ठा कर लाने के लिए पीछे रह गया। द्वार पर चन्दनसिंह ने सैकण्ड क्लास का टिकट बाबू को दिया और बाहर निकल गया। सहयात्री ने टिकट नहीं दिया। नौकर कुछ पीछे रह गया था।

चन्दनसिंह अपने गाँव तक जाने के लिए इक्का करने लगा तो सहयात्री उसको भाव-ताव करते देखता रहा। स्टेशन के बाहर एक सर्वथा नई शिवर्ले मोटरगाड़ी खड़ी थी। सहयात्री ने चन्दनसिंह का किसी भी इक्केवाले से भाव न बनते देख कह दिया, "इधर आओ चन्दनसिंह! मैं तुम्हारे लिए सवारी का प्रबन्ध कर देता हूँ।"

चन्दनसिंह ने प्रश्न-भरी दृष्टि से सहयात्री के मुख पर देखा तो सहयात्री ने नौकर से कह दिया, "इन बाबू साहब का सामान मोटर पर रख दो।"

नौकर ने चन्दनसिंह का अटैची-केस पकड़ा और उसको गाड़ी के कैरियर पर रख दिया।

"तो यह गाड़ी आपकी है?"

"नहीं, परन्तु मैं इसमें चढ़ सकता हूँ और किसी अन्य को चढ़ा भी सकता हूँ।"

इसपर तो चन्दनसिंह को दुःख लगने लगा कि उसने छः घंटे तक इस महानुभाव के साथ यात्रा की है, बातें की हैं, परन्तु यह नहीं जाना कि यह कौन है। अब गाड़ी में बैठते हुए वह जानने की योजना बनाने लगा। उसको सन्देह होने लगा था कि यह कोई इसी इलाके का रईस हो सकता है। फिर वह विचार करता था कि इसने तो कहा है कि यह गाड़ी इसकी अपनी नहीं है। इसपर भी वह इसमें यात्रा कर सकता है और किसी को चढ़ा भी सकता है। यह किसी रईस का मेहमान भी हो सकता है। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसने इस दिशा में पूछने का निश्चय कर लिया।

दोनों गाड़ी में बैठे तो नौकर आगे ड्राइवर के पास बैठ गया और गाड़ी चल पड़ी। चन्दनसिंह अपने मन की उत्सुकता शान्त करने का अभी ढंग ही सोच रहा था कि सहयात्री ने एक अन्य विषय पर बात आरम्भ कर दी। उसने पूछ लिया, ''तुम्हारे पास तो सैकण्ड क्लास का टिकट था और तुम यात्रा कर रहे थे फर्स्ट क्लास में?''

इसपर चन्दनसिंह को हँसी सूझी। उसने कह दिया, ''पर साहब! आपके पास तो किसी भी दर्जे का टिकट नहीं था और आपने पूर्ण यात्रा फोकट में ही की है। मैं विस्मय कर रहा हूँ कि बाबू ने आपसे टिकट माँगा क्यों नहीं? कदाचित् इस बढ़िया गाड़ी के रोब में वह टिकट नहीं माँग सका।''

सहयात्री हँस पड़ा और उसने साथ आए नौकर से पूछ लिया, ''बेनी! बाबू को टिकट दिया कि नहीं?''

''दिया है, महाराज!''

''चन्दनसिंह, मैंने तो टिकट खरीदा है और द्वार पर बाबू को दिया भी है। यदि सन्देह हो तो लौटकर पूछ सकते हो।''

''टिकट तो मैंने भी खरीदा था और बाबू को दिया है। मैं सैकण्ड क्लास के डिब्बे में जानेवाला था। फर्स्ट क्लास का डिब्बा खाली समझ उसमें चढ़ आया था। वहाँ, आपको तो भीतर आने पर ही देखा था। इसपर भी वहाँ छः के लिए स्थान था और हम दो ही थे।''

''यह भी तुम्हारे मास्टर ने बताया है कि जब कोई जगह खाली हो तो वहाँ बैठ जाना चाहिए भले ही वहाँ बैठने का अधिकार न हो?''

''जी, यह कायदा है।''

''तो एक दिन ऐसा करना कि कहीं प्रोफेसर देर से आए तो उसके प्रयोग के लिए रखी कुर्सी खाली देख उसपर बैठ जाना और फिर क्लास को पढ़ाना आरम्भ कर देना। देखना, फिर क्या होता है!''

चन्दनसिंह झेंप रहा था। उसकी झेंप को मिटाने के लिए सहयात्री ने कहा दिया, ''अच्छा, छोड़ो इस बात को। बताओ, कब लौटनेवाले हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहाँ?" बात बदलती देख चन्दनसिंह को सुख मालूम हुआ। इस कारण उसने बात को लम्बा करने के लिए व्यर्थ का प्रश्न पूछ लिया।

सहयात्री ने अपना अभिप्राय बताने के लिए कह दिया, "कॉलेज को।"

"दूसरी जनवरी को हाजिर होना है। पहली जनवरी को गाँव से चलूँगा।"

"गाँव में तो इक्का मिलता नहीं होगा?"

"जी, वहाँ से पैदल चला आता हूँ। सामान किसी घर के नौकर से उठवाकर ले आता हूँ।"

"अगर मानो तो तुम्हारे लौटने के लिए सवारी का प्रबन्ध कर दूँ?"

"कैसे कर देंगे?"

"यह गाड़ी तुम्हें गाँव में लेने के लिए जा सकती है।"

"परन्तु आप रहते कहाँ हैं?"

"कहीं भी रहता हूँ। मोटर तो यहाँ से कलकत्ता भी जा सकती है।"

"परन्तु आपने तो कहा था कि गाड़ी आपकी नहीं है?"

"तो सब अपनी गाड़ी में ही चढ़ते हैं? भाड़े पर भी तो गाड़ी मिल सकती है।"

"तो इस गाड़ी का आप भाड़ा देंगे? पर मेरे पास तो भाड़ा देने के लिए दाम नहीं है।"

सहयात्री ने मुस्कराते हुए कहा, "कुछ हरज नहीं हुआ। पहले भी तो सैकण्ड क्लास का टिकट लेकर फर्स्ट क्लास के डिब्बे में यात्रा की है। जब वह हो सकी है तो मोटरगाड़ी की यात्रा फोकट में क्यों नहीं हो सकती? तुम्हारा विचार था न कि मैंने फोकट में ही यात्रा की है, अतः तुम फोकट में मोटरगाड़ी में यात्रा कर सकते हो। मोटर में भी तो चार यात्री चढ़ सकते हैं और हम हैं दो ही।"

चन्दनसिंह इन व्यंग्यों से इतना घबराया कि वह आँखें नीची किए सुनता रहा। वह मन में सहयात्री का नाम-धाम पूछने का विचार रखता था परन्तु पूछ नहीं सका। वह अपने संकल्प की पूर्ति नहीं कर सका। सहयात्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने फिर उसकी ताड़ना आरम्भ कर दी। उसने कहा, ''देखो चन्दनसिंह! तुम्हारे साथ आने पर मुझ अनपढ़ को कितना लाभ हुआ है! मुझको अनेक नई बातों का पता चला है। एक बात तो तुमने यह बताई है कि यदि किसी का नाम-धाम पूछना हो तो अपना नाम-धाम बता देना चाहिए। दूसरी बात तुमने यह बताई है कि यदि कोई स्थान रिक्त हो तो उसपर जा बैठना चाहिए। तीसरी बात यह बताई है कि 'साथी' परिवार के सदस्य, मित्र, मुहल्ले, गाँव, नगर, प्रान्त अथवा देश में रहने से होते हैं। इनके अतिरिक्त भी तुमने बहुत-सी बातें बताई हैं और वे सब-की-सब बातें तुम्हारे मास्टर जी ने बताई हैं। बताओ न, बिना स्कूल गए, बिना वहाँ की फीस दिए तथा बिना मास्टरों की डाँट-डपट खाए यह सब-कुछ तुमसे सीख गया हूँ। कितना लाभ हुआ है तुम्हारे साथ बात करने का! इसी के प्रतिकार में मैं यह गाड़ी तुमको स्टेशन तक ले-जाने के लिए भेज दूँगा। बताओ, किस समय घर से चलोगे?''

''मैं पैदल ही चलूँगा और ढाई घंटे स्टेशन तक पहुँचने में लगते हैं। अत: मैं ठीक एक बजे घर से चल दूँगा जिससे साढ़े चार बजे की गाड़ी सुगमता से पकड़ सकूँ।''

''धन्यवाद! यत्न करूँगा कि उस दिन फिर तुम्हारी संगत का लाभ उठाऊँ।''

''आप मेरी हँसी उड़ा रहे हैं।''

''नहीं, चन्दन जी! मैं आपका शिष्य हो गया हूँ।''

अब चन्दन ने चुप रहना ही उचित समझा। वह समझने लगा था कि कुछ भी बात की जाए, वह यात्री इतना चतुर है कि उसकी हँसी उड़ा देगा।

उसे चुप देख सहयात्री ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, ''चन्दनसिंह जी! आपकी कितनी भूमि है?''

''मैं ठीक-ठीक नहीं जानता।''

''अर्थात् तुम अपनी जमींदारी में रुचि नहीं लेते। अच्छा बताओ, कितने गाँव हैं तुम्हारे पिता जी के पास?''

''दस गाँव हैं। इनमें एक ऐसा कस्बा भी है जहाँ सनकुकड़ा होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। वह नीची भूमि है। आसपास का पानी वहाँ एकत्रित हो जाता है और बढ़िया सन पैदा होता है।''

''तुम कितने भाई हो?''

''हम तीन भाई हैं। एक मुझसे बड़ा है और एक छोटा है। हमारे साथ हमारी ताई के लड़के भी रहते हैं।''

''तुम्हारे साथ तुम्हारी ताई के लड़के रहते हैं अथवा तुम ताई के लड़कों के साथ रहते हो?''

चन्दनसिंह इन दो बातों में अन्तर नहीं समझ सका। अतः वह सहयात्री का मुख देखता रह गया। उसने गाड़ी खड़ी करने के लिए ड्राइवर को कह दिया। गाड़ी खड़ी हुई तो उसने चन्दनसिंह से पूछ लिया, ''तुम्हारा बड़ा भाई क्या काम करता है?''

''वह ज़मींदारी का काम देखता है।''

''उसका विवाह हुआ है अथवा नहीं?''

''हो चुका है। सुना है, भाभी के लड़का हुआ है।''

सहयात्री ने ड्राइवर को कहा, ''इन बाबू साहब को सरवरगंज पहुँचा आओ। और बेनी, इनका सामान उठा इनके घर छोड़ आना।''

सहयात्री उतर पड़ा और सड़क से आधा फर्लांग पर एक बड़ी-सी हवेली की ओर चल दिया। मोटर आगे को चल पड़ी। चन्दनसिंह जानता था कि वह हवेली महोना के बाबू साहब की है। इससे उसे सन्देह हुआ कि वहाँ के बाबू साहब ही उसके सहयात्री थे।

: ३ :

जब गाड़ी सरवरगंज की ओर चली, चन्दनसिंह ने नौकर से पूछ लिया, ''ये बाबू साहब महोना थे?''

बेनी ने उत्तर दिया, ''नहीं, उनके छोटे भाई हैं।''

''क्या नाम है?''

''बाबू लक्ष्मणसिंह।''

चन्दनसिंह मौन हो गया। उसे एक सन्तोष था कि उसने एक बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने साथ यात्रा करनेवाले बाबू लक्ष्मणसिंह से नहीं बताई। वह थी अपने साथी का नाम। वह साथी उसके होस्टल का रूम-मेट नहीं था। वह एक लड़की थी। उसका नाम था निर्मला।

निर्मला उसकी मौसी की लड़की थी। उसका मौसा हजरतगंज में मोटरों की दूकान करता था और मौसी का कोई लड़का न होने से वह चन्दनसिंह को बहुत प्यार करती थी। वह उनके घर बहुत आता-जाता रहता था।

निर्मला दसवीं श्रेणी में पढ़ती थी और प्राय: अपनी मोटर ले चन्दन को होस्टल से लेने जाया करती थी। प्राय: प्रत्येक शनिवार चन्दनसिंह रात को मौसी के घर रह जाया करता था। चन्दनसिंह की कोई बहन नहीं थी। अत: दोनों में घनिष्ठता बढ़ती जाती थी। इसका आरम्भ बहिन-भाई की भावना से ही हुआ था और अब दोनों में युवा होने के कारण बहिन-भाई के अतिरिक्त भी लगाव उत्पन्न हो गया लगता था।

तेईस दिसम्बर को कॉलेज के समय के उपरान्त चन्दन मौसी से मिलने आया था। वह बताने आया था कि अगले दिन प्रात: सात बजे की गाड़ी से वह गाँव जा रहा है। इस अवसर पर निर्मला ने कह दिया, 'चन्दन भैया! इन होलियों में तुम सब लोग लखनऊ आ जाओ तो बहुत मज़ा रहेगा।'

'क्या मज़ा रहेगा?'

'बहिन-भाई होली खेलेंगे। भाभी को भी ले आओ तो फिर सोने पर सुहागा हो जाएगा। वह आएगी तो उसका बेबी भी आएगा।'

'ठीक है, कह दूँगा। परन्तु माँ कहेगी कि तुम लोग तो वहाँ आते ही नहीं।'

इस पर निर्मला की माँ सरस्वती ने कह दिया, 'एक बार तुम यहाँ आओ तो फिर हम प्रत्येक वर्ष वहाँ जाया करेंगे।'

'मौसी! आपका सन्देश दे दूँगा।'

इस प्रबन्ध से निर्मला की आँखों में चमक दौड़ गई। चन्दनसिंह ने देखा और चकित रह गया। इस पर निर्मला ने कह दिया, 'कल मैं गाड़ी ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपको स्टेशन तक पहुँचाने के लिए आऊँगी।'

'क्या लाभ होगा इससे?'

'आपके दर्शन हो जाएँगे।'

चन्दनसिंह चुप रहा। इस पर भी वह विचार कर रहा था कि यदि प्रातः ड्राइवर की नींद नहीं खुली तो उसकी तो गाड़ी छूट जाएगी।

यों तो डाकगाड़ी मध्याह्न के एक बजे छूटती थी और साढ़े तीन बजे प्रतापगढ़ पहुँचती थी, परन्तु प्रतापगढ़ स्टेशन से कोई इक्का उस समय सरवरगंज जाने के लिए मिलना कठिन होता था। अतः उसके लिए गाँव समय पर पहुँचने के लिए प्रातःकाल की गाड़ी ही ठीक रहती थी।

उस दिन चन्दनसिंह अपने कमरे के साथी को बताने लगा, 'कल मैं प्रातः सात बजे की गाड़ी से घर जा रहा हूँ।'

उसके साथी सुरेश का कहना था, 'मेरी गाड़ी नौ बजे छूटती है।'

'निर्मला ने कहा है कि वह मोटरगाड़ी लाएगी और मुझे स्टेशन पर छोड़ने के लिए आएगी।'

'जिस प्रकार यह लड़की तुम्हारे पीछे पड़ी है, मुझे विश्वास हो रहा है वह तुमसे प्रेम करने लगी है।'

'कैसे विश्वास हो गया है तुमको?'

'उसकी आँखों में प्रेम की झलक दिखाई देती है।'

'मुझे तो दिखाई नहीं देती!'

'तुम बुद्धू जो हो!'

चन्दनसिंह के मन में सुरेश की यह बात सुन बहुत उल्लास हुआ था परन्तु उसने उसे सुरेश के सामने प्रकट नहीं होने दिया। वह अब मन में विचार कर रहा था कि उसे इस विषय पर निर्मला से बात करनी चाहिए। परन्तु किस प्रकार, इसका निर्णय नहीं कर सका था।

अगले दिन वह उठा और अपना सूटकेस तैयार कर साढ़े पाँच बजे ही चलने के लिए तैयार हो गया। सुरेश की गाड़ी दो घंटे बाद में जाती थी। इस कारण वह अभी भी रजाई में लिपटा पलँग पर पड़ा था।

उसके मन में फिर वही विचार आया कि यदि निर्मला गाड़ी न ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकी तो उसकी छुट्टी का एक दिन व्यर्थ चला जाएगा। अत: साढ़े पाँच बजे ही होस्टल से निकल वह इक्का लेने के लिए चल पड़ा। स्टैंड पर कोई इक्का नहीं था। वह किसी इक्का के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

वह अभी वहाँ खड़ा ही था कि निर्मला मोटरगाड़ी में वहाँ आ पहुँची। निर्मला ने चन्दनसिंह को वहाँ खड़ा देख लिया था। उसने गाड़ी उसके समीप लाकर खड़ी कर दी।

गाड़ी से उतरकर उसने कहा, 'तो इक्का ढूँढने के लिए खड़े थे न? मैंने तो आपको कहा था कि मैं लेने के लिए आऊँगी?'

'तुम्हारा तो विश्वास था परन्तु ड्राइवर की नींद खुल सकेगी, इस विषय में सन्देह था। खैर....'

'तो चलिए, जल्दी करिए। माता जी आपके लिए चाय तैयार किए प्रतीक्षा कर रही हैं।'

'तो वहाँ भी जाना होगा?'

'हाँ, मैं विश्वास दिलाती हूँ कि समय से पहले आपको स्टेशन पर पहुँचा दूँगी।'

दोनों गाड़ी में होस्टल जा पहुँचे। वहाँ से सूटकेस लेने के लिए चन्दन अपने कमरे में गया तो निर्मला भी उसके साथ वहाँ जा पहुँची। सुरेश ने जब चन्दनसिंह से बात करते किसी लड़की की आवाज़ सुनी तो हड़बड़ाकर उठ बैठा और फिर निर्मला को देख रजाई में ही बैठे-बैठे नमस्ते करने लगा। चन्दन ने कह दिया, 'इस लेट-लतीफ से नमस्ते नहीं करना, निर्मला!'

इसपर भी निर्मला ने मुस्कराकर सुरेश की नमस्ते का उत्तर दिया।

दोनों मोटर में सवार हो हजरतगंज राजबहादुरसिंह के घर जा पहुँचे। सरस्वती चाय बनाकर टोस्ट पर मक्खन लगा रही थी। राजबहादुर अभी शौचादि से निवृत्त नहीं हुआ था। चन्दन ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया। इसपर भी आधा घंटा इस काम में लग गया।

वहाँ से वे मोटरगाड़ी में ही रेल के स्टेशन पर पहुँचे। उस समय सात बज रहे थे। चन्दनसिंह ने टिकट खरीदा और प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि गाड़ी खड़ी है और लोग आराम से गाड़ी के बाहर टहल रहे हैं। उसने विचार किया कि गाड़ी अभी रुकेगी और सीटी बजते ही वह भागकर गाड़ी पर जा चढ़ेगा। इस कारण वह प्लेटफॉर्म पर खड़ा हो निर्मला से बातें करने लगा।

एकाएक उसको विचार आया कि वह सुरेश के अनुमान का वर्णन कर उसकी प्रतिक्रिया निर्मला के मुख पर देखे।

उसने एकदम साधारण बातों को बन्द कर कह दिया, 'निर्मला! एक बात कहूँ, नाराज़ तो न होगी?'

'नहीं जी, मैं आपसे नाराज़ नहीं हो सकती।'

'मेरे कमरे का साथी सुरेश एक बात करता था।'

'क्या?'

'यह कि तुम मुझसे प्रेम करने लगी हो।'

निर्मला मुस्कराती हुई चन्दनसिंह के मुख पर देख रही थी। चन्दन आँखें नीची किए कह रहा था। इस कहने पर निर्मला खिलखिलाकर हँस पड़ी और हँसते हुए बोली, 'सुरेश बहुत बदमाश मालूम होता है।'

'यही मैं विचार करता हूँ कि...'

निर्मला ने बीच में ही बात काटकर कहा, 'मगर कहता वह ठीक है।'

चन्दन ने इन परस्पर-विरोधी भावों को सुनकर पूछ लिया, 'ठीक कहता है तो फिर बदमाश कैसे हो गया?'

'तो क्या बदमाश ठीक बात नहीं कर सकते?'

'वह तो मुझको मूर्ख भी मानता है।'

'यह उसकी बुद्धिमत्ता का एक और प्रमाण है।'

'तो तुम मुझसे प्रेम करने लगी हो? मतलब यह कि एक मूर्ख से प्रेम करती हो?'

'परन्तु इन दो बातों में परस्पर विरोध कहाँ है? मैं एक चन्दनसिंह से पिछले सात वर्ष से प्रेम कर रही हूँ। चन्दनसिंह इतना सरलचित्त है कि वह यह जान तक नहीं सका। इसलिए वह बुद्धू है और उसका मित्र चतुर है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
167329 R08.9.9143 GUR-P

'इसपर भी वह बदमाश कैसे हो गया?'

'वह बदमाश इस कारण है कि एक कुमारी लड़की की अन्तरात्मा की बात को जानकर बक गया है। उसे यह बात प्रकट नहीं करनी चाहिए थी।'

चन्दनसिंह इस मीमांसा को सुन भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। इस समय रेल ने सीटी बजाई तो निर्मला ने उसे सचेत कर दिया, 'आपकी गाड़ी छूट रही है।'

चन्दनसिंह भागा। जब वह गार्ड के पास पहुँचा तो कुछ निश्चिन्त हो पीछे की ओर घूमकर देखने लगा। इसपर गार्ड ने उद्विग्न होकर कह दिया, 'तुमको जाना नहीं है क्या?'

इसपर चन्दनसिंह ने गार्ड को धन्यवाद दिया। गार्ड ने सीटी बजाई और गाड़ी चल पड़ी। सामने फर्स्ट क्लास का डिब्बा था और वह उसीमें चढ़ गया।

लक्ष्मणसिंह उसे प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर एक लड़की से बातें करते देख आया था। इस कारण जब चन्दनसिंह ने झूठ बोला कि उसका एक साथी पीछे रह गया था जिसके पास बहुत सामान था तो लक्ष्मणसिंह उसकी हँसी उड़ाने लगा था, परन्तु उसकी इस लड़के में रुचि का एक अन्य कारण भी था।

: ४ :

चन्दनसिंह गाँव के भीतर गाड़ी को ले गया। जब वह गाड़ी से उतरा तो गाँव के बच्चे चन्दनसिंह के पीछे 'मोटर हो! मोटर हो!' कहते हुए चल पड़े। इससे चिढ़कर चन्दनसिंह खड़ा हो उनकी ओर घूरने लगा तो वे डरकर भाग खड़े हुए।

चन्दनसिंह घर पर पहुँचा तो उसका पिता दिलजीतसिंह और माता पद्मावती घर की भीतरी बैठक में बैठे बातें कर रहे थे। वे चन्दनसिंह की प्रतीक्षा तो कर रहे थे, परन्तु अभी तो दो घंटे तक उसके आने की आशा नहीं करते थे। दिलजीतसिंह पत्नी से बातें करता हुआ हुक्का पी रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब चन्दनसिंह को बैठक में आते देख हुक्के की नाल मुख से निकाल पूछने लगा, ''किस गाड़ी से आए हो? अभी तो गाड़ी के आने का समय नहीं हुआ?''

चन्दनसिंह ने माँ को 'पाँव लागूँ' कहा और पिता जी को हाथ जोड़कर नमस्ते कह सूटकेस को दीवार के साथ रख बोला, ''पिता जी, उसी गाड़ी में आया जिसमें आया करता हूँ। हाँ, आज महोने के बाबू साहब के छोटे भाई गाड़ी में मिल गए थे और वे अपनी मोटर गाड़ी में मुझे गाँव तक छोड़ गए हैं। इस प्रकार दो घंटा जल्दी यहाँ पहुँच गया हूँ।''

''सत्य?''

''हाँ, माँ! बहुत ही मजेदार आदमी है।''

''बाबू लक्ष्मणसिंह की बात कर रहे हो?'' दिलजीतसिंह ने पूछ लिया।

''हाँ, पिता जी!''

इसपर माँ ने पूछ लिया, ''तुमको पसन्द है?''

चन्दनसिंह उसकी बातें बतानेवाला था। परन्तु पसंद की बात सुन इसका अर्थ समझने के लिए माँ का मुख देखने लगा। माँ ने बताया, ''लक्ष्मणसिंह की पत्नी इन्द्रमणि आई थी और अपनी लड़की का विवाह तुमसे करना चाहती है।''

इसपर चन्दनसिंह को लक्ष्मणसिंह का उसकी हँसी उड़ाना स्मरण आ गया। उसने कह दिया, ''माँ! यह बहुत कठिन है।''

वह अपने मन में निर्मला के कथन पर चिन्तन कर रहा था। वह स्वयं भी निर्मला पर रीझा हुआ था।

माँ ने कठिनाई की बात का अर्थ समझने के लिए पूछ लिया, ''क्यों? कुछ बात हुई है?''

''इस विषय पर बातचीत नहीं हुई। मैं तो अपने मन की बात बता रहा हूँ कि वह कुछ पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं है। साथ ही वह कुछ मैले रंग का आदमी है और उसकी लड़की भी उसी के रंग की होगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उस लड़की को देख चुकी हूँ। उसका रंग गोरा तो नहीं परन्तु वह मैला भी नहीं कहा जा सकता। यदि उसे बादामी रंग की कहूँ तो अधिक उपयुक्त होगा।"

"नहीं, माँ! मेरा विवाह यहाँ नहीं होगा।"

"पर बात क्या है? कुछ बताओ भी तो! वह तुमको अपनी मोटरगाड़ी में गाँव तक छोड़ने के लिए आया है तो निस्सन्देह उसके मन में विचार पक्का प्रतीत होता है।"

"मुझे तो कुछ उलट बात प्रतीत होती है।"

इसपर दिलजीतसिंह ने कह दिया, "हमने तो बात पक्की कर रखी है। अब विवाह तो होगा ही। विवाह के बाद यह लड़की पसन्द नहीं आई तो दूसरा विवाह कर लेना।"

चन्दनसिंह अभी बताना नहीं चाहता था कि उसकी निर्मला के प्रति क्या भावना है, इस कारण उसने बात बदल दी। कहा, "माँ, मौसी ने निमन्त्रण दिया है कि इस बार होलियों में हम सब उनके यहाँ चलें।"

"वहाँ क्या है?"

"कुछ खास बात नहीं। बहिन-भाई इकट्ठे होली खेलेंगे।"

"पहले वे यहाँ आएँ, फिर हम वहाँ चलेंगे।"

"माँ, मैंने कहा था। परन्तु मैं विचार करता हूँ कि वे आएँगे तो उनको रखोगी कहाँ?"

इसपर माँ चुप हो गई। चन्दनसिंह का बड़ा भाई मोहनसिंह घर पर नहीं था। चन्दनसिंह उठा और सूटकेस उठाकर अपने कमरे में चला गया। वह मन में विचार कर रहा था कि वे अपने मकान को नगरों के मकानों की भाँति सुन्दर और सुखदायक क्यों नहीं बना सकते? वह जानता था कि धन का अभाव तो नहीं है; धन तो पिता जी के पास है, परन्तु किसी कारण से वह धन तोशाखाने में पड़ा रहता है। उससे सुख-सुविधा के साधन निर्माण नहीं किए जाते। एक बार दो-तीन वर्ष पहले तोशाखाने के निरीक्षण का अवसर उसे मिला था। बनिया फसल का दाम देने के लिए आया था और उसका पिता उन रुपयों को चन्दन की सहायता से उठवाकर तोशाखाने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ले गया था। यहाँ उसने उसीसे रुपया रखवाया था और पहले जमा के हिसाब में लिखवाया था। पहले चन्दन की माँ, पद्मा लिखा करती थी। इस बार चन्दनसिंह ने बही पर, जो वहीं पर रखी थी, नई रकम लिखी और जमा करके पिता को बताया था कि कितना हो गया है। नकद रुपया तीस हज़ार से अधिक था। साथ ही सोना था और मुहरें थीं। कुछ आभूषण भी थे।

पिता ने बताया था कि यह कई पीढ़ियों से इकट्ठी हो रही जमापूँजी है। उसने चन्दन को समझाया था, "मेरे पिता अपने बाप के अकेले बेटे थे और बाबा भी अपने पिता के एकमात्र पुत्र थे। तब हम दो भाई हो गए। बड़े भाई की मृत्यु हो गई है, परन्तु उसके चार लड़के हैं।"

चन्दनसिंह ने कहा, "बाबा! अब तो यह बँटेगी?"

"मैं समझता हूँ कि यह बँटनी नहीं चाहिए। मैं इस विषय में विचार कर रहा हूँ।"

चन्दनसिंह समझ नहीं सका कि क्या विचार किया जा रहा है। इसपर भी वह चुप था। वह देख चुका था कि एक लाख रुपए के लगभग परिवार की सम्पत्ति है, परन्तु उसका पिता न तो व्यय करना चाहता है न ही उसको अधिकारियों में बाँटना चाहता है।

कितनी ही देर वह इस सम्पत्ति और इसके प्रयोग के विषय में चिन्तन करता रहा। एकाएक उसे विचार आया कि ताई से मिलना चाहिए। उसका अपनी ताई से बहुत स्नेह था। वह भी उससे अति वात्सल्य का व्यवहार रखती थी। इस विचार के आते ही वह उठा और ताई के रहने के स्थान की ओर चल पड़ा।

उसकी विधवा ताई अपने लड़कों के साथ हवेली के एक भाग में रहती थी। उस भाग में जिसमें उसका पिता रहता था और उस भाग में जहाँ उसकी ताई राजरानी रहती थी, दोनों के बीच एक खुला प्रांगण था। प्रांगण पार कर कमरे थे और उनमें वह अपने चार लड़कों के साथ रहती थी।

चन्दनसिंह प्रांगण में पहुँचा तो ताई का सबसे छोटा लड़का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जवाहरसिंह बकरी के गले की रस्सी पकड़कर बाहर जा रहा था। उसने चन्दनसिंह को देखा तो आवाज़ दी, "चन्दन दादा! जैराम जी की!"

"ओह जवाहर! कहाँ लिये जा रहे हो इसे?"

"इसे पानी पिलाने के लिए ले-जा रहा हूँ। यह मैं-मैं कर रही थी।"

चन्दनसिंह हँस पड़ा और बोला, "तो मैं-मैं के अर्थ पानी हैं?"

"अभी आया दादा! माँ पिछले आँगन में धान कूट रही है।"

"अच्छी बात है, इसकी मैं-मैं को तुम तृप्त कर आओ। मैं तब तक ताई जी को पाँव लागूँ कह लूँ।"

चन्दनसिंह कमरों के पिछले आँगन में जाने के मार्ग में पहुँचा तो ताई के धान कूटने की आवाज़ आने लगी। चन्दन ने आवाज़ दे दी "ताई! पाँव लागूँ कहता हूँ। मैं चन्दन हूँ।"

ताई ने कहा, "ठहरो चन्दन! मैं बाहर ही आती हूँ।"

चन्दन समझ गया कि उचित कपड़ा नहीं किए होगी, अतः उसे भीतर आने से मना कर दिया है। जब वह देहात में पढ़ता था तब तो वह उससे संकोच अनुभव करती नहीं थी, परन्तु जब से वह लखनऊ पढ़ने के लिए जाने लगा, ताई उचित कपड़ों में ही उसके सामने आती है।

चन्दनसिंह मार्ग में ही ठहर गया और ताई के आने की प्रतीक्षा करने लगा। उसे अधिक काल तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

राजरानी मुस्कराती हुई आई, "चन्दन भैया! आ गए हो?"

"हाँ ताई! अभी ही आया हूँ। माता-पिता जी को पाँव लागूँ कह सीधा इधर ही आया हूँ। विचार आया कि ताई जी की सेवा में तुरन्त हाज़िर होना चाहिए।"

"चन्दन! लखनऊ जाकर बहुत बातें करना सीख गए हो। आओ इधर!"

वह उसे अपने घर की बैठक में ले गई और वहाँ बिछी चटाई पर बैठाकर पूछने लगी, "बताओ, दूध पियोगे?"

"ताई! लखनऊ में तो इस समय चाय पीते हैं।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो लखनऊ से एक डिब्बा चाय का लेते आते ?''

''माँ बना रही है, ताई! आओ, तुम भी पीकर देखो कैसी होती है।''

''कहते हैं सीना जला देती है।''

''नहीं ताई! इसके पीने से चुस्ती आती है और दूध पीने से सुस्ती।''

''पर मैं तो दूध पीकर पाँच टोकनी धान कूट सकती हूँ। मुझे तो सुस्ती नहीं आती।''

चन्दन को इसका उत्तर नहीं सूझा। ताई ने ही बात बदलते हुए कहा, ''यहाँ सब तुम्हारे लिए बहू लाने का प्रबन्ध कर रहे हैं।''

''पर ताई, दादा कर्मजीतसिंह के विवाह की चिन्ता क्यों नहीं करते ? वह तो मोहन दादा से भी बड़ा है।''

''यह तुम अपने पिता जी से पूछना। अब घर में वे ही बड़े हैं। जिसे चाहें आगे बिठाएँ, जिसे चाहें पीछे कर दें।''

''पर ताई! तुम क्यों नहीं कहतीं ?''

''चन्दन! मैंने आज तक कुछ नहीं कहा। कभी कुछ नहीं माँगा। मेरा जोर तो तुम्हारे ताया जी पर था। वे अब रहे नहीं। मैं जानती हूँ कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।' समझते हो ?''

''ताई! यह पुराने जमाने की बात है। आज तो अपना हक सब माँगते हैं।''

''किससे माँगते हैं ?''

''जो हक को दबाए बैठा हो।''

''जो दबाए बैठा है वह क्या माँगे से देगा, बेटा ? मैं उससे माँगती हूँ जो सबको अनायास ही दे रहा है।''

''वह कौन है ?''

''है एक। वह देगा।''

''परन्तु देने की सामर्थ्य तो पिता जी में भी है।'' चन्दनसिंह को तोशाखाने के धन की याद आ गई।

''उनमें सामर्थ्य होती तो वे दे देते और कर्मजीत का अब तक विवाह हो चुका होता।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

चन्दन जानता था कि कर्मजीत मोहन से एक वर्ष बड़ा है और मोहन के घर में एक लड़का हो चुका है। वह स्वयं तो कर्म के छोटे भाई धर्मजीत से भी एक वर्ष छोटा है और ताई के लड़कों के विवाह की बात छोड़ उसके विवाह की चर्चा हो रही है। इस सबमें उसको कुछ अटपटा महसूस हो रहा था।

एक बार उसके पिता ने कहा था कि उनकी संपत्ति बँटनी नहीं चाहिए और वे यत्न कर रहे हैं कि यह न बँटे। वह इस समस्या को समझ नहीं पा रहा था। इस कारण उसने बात बदलकर पूछ लिया, "ताई, कर्म दादा कहाँ है?"

"वह अभी पंडित जी से पढ़कर नहीं आया। अब तो तीनों जाते हैं। जवाहर को पढ़ाई पसन्द नहीं। इस कारण वह बकरी चराता है।"

"तो जवाहर स्कूल नहीं जाता?"

इस समय जवाहर बकरी को जल पिला पुनः बाँधकर चन्दन के समीप आ बैठा था। उसने कह दिया, "दादा! माँ कहती है कि संस्कृत पढ़ूँ। मुझे वह पसन्द नहीं।"

"तो तुम स्कूल में पढ़ते हो क्या?"

"मैं पढ़ने में रुचि नहीं रखता। मैं किसान बनूँगा।"

"पर ताई! दादा इत्यादि को संस्कृत पढ़ाती हो, इससे तो वे अनपढ़ रह जाएँगे।"

राजरानी हँस पड़ी। हँसकर बोली, "तुम्हारा भाई मोहन पढ़ गया है न? ऐसी पढ़ाई मैं कर्म को पढ़ने नहीं दूँगी।"

"ताई! क्या किया है उसने?"

"अपनी माँ से पूछना। उसकी बहू क्यों मायके चली गई है?"

"तो वह मायके गई है? तभी, मैं सोच रहा था कि वह दिखाई क्यों नहीं दी।"

"देखो चन्दन! वह पुत्र बनकर लखनऊ से आया है। मेरा बेटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन वैसा नहीं होगा—यही आशा करती हूँ।''

''तो कर्मजीत पशु नहीं बनेगा?''

''आशा तो नहीं। उसको मानवों की शिक्षा मिल रही है।''

चन्दनसिंह समझ नहीं रहा था। उसका चित्त नलिनी भाभी के विषय में विचार कर रहा था। वह मौन था।

इस समय चन्दन का छोटा भाई मदन आया और चन्दन से बोला, ''दादा, माँ बुला रही है। चाय तैयार है।''

''चलो ताई! आज पीकर देखो।''

राजरानी उठी और बोली, ''चलो, तुम्हारे आने की खुशी में आज चाय पी लूँ।''

राजरानी, चन्दन और जवाहरसिंह मदनसिंह के साथ ही बाहर के घर में आ गए। दिलजीतसिंह और पद्मा तो दूध ही पीते थे। इस समय मोहनसिंह आया हुआ था और चाय बना रहा था। मोहन ने चन्दन को कहा, ''तुम आए और गए ताई जी से मिलने! क्या खाने को मिला है वहाँ?''

चन्दनसिंह ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया। उसने अपने मन की बात पूछ ली, ''दादा! भाभी दिखाई नहीं दे रही?''

''वह रूठकर मायके चली गई है।''

''रूठकर गई है या तुम उससे रूठ गए हो?''

पद्मा ने इस वार्ता को बन्द करने के लिए राजरानी से पूछ लिया, ''बहिन जी! दूध पियोगी या चाय?''

''पद्मा बहिन! चन्दन कहता है, चाय बहुत ताकत देती है। सो मैं तो आज चाय ही पिऊँगी।''

मोहन ने कह दिया, ''मैं पिता जी से यही बात पहले से कह रहा हूँ, पर पिता जी मानते ही नहीं।''

''तुम शहरों में जाकर बिगड़कर आए हो और हमको भी अपने जैसा बना देना चाहते हो?''

चन्दनसिंह को ताई की बात स्मरण आ रही थी कि मोहन पशु हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया है, जो वह कर्मजीत आदि को बनाना नहीं चाहती। इस कारण उसने अब माँ से पूछ लिया, "माँ! भाभी क्यों चली गई है?"

माँ ने चन्दन की बात को फिर टाल दिया। उसने राजरानी को सुना दिया, "महोना के बाबू लक्ष्मणसिंह की पत्नी इन्द्रमणि कह गई है कि हम कल उसकी लड़की को देखने उसके घर चलें। आप भी चलिए। मैं घर का ताँगा तैयार करवा लूँगी।"

जब मोहन अपनी ताई और चन्दनसिंह के लिए चाय तैयार कर चुका तो उसने जवाहरसिंह से पूछ लिया, "क्यों जवाहर! तुम क्या पियोगे?"

"जो लखनऊ में पिया जाता है...."

"ओह, तो क्या वह गाँव में पी जानेवाली वस्तु नहीं?"

"मैं लखनऊ पढ़ने जाऊँगा। मैं देखता हूँ जो लखनऊ से पढ़कर आते हैं उनका विवाह तुरन्त हो जाता है।"

सब हँसने लगे। चन्दन ने पूछ लिया, "तो तुमको तुरन्त विवाह की आवश्यकता है?"

"तुरन्त तो नहीं, पर मैं कर्म दादा की भाँति विवाह में पिछड़ना नहीं चाहता।"

मोहनसिंह ने कह दिया, "केवल लखनऊ के दर्शन करने से तो विवाह होगा नहीं। वहाँ से पढ़कर आओगे तब ही तो विवाह होगा। वहाँ पढ़ाई हो नहीं सकेगी, जब तक कम-से-कम पाँचवीं श्रेणी तक यहाँ पढ़ नहीं लोगे।"

"यह तो कठिन है!" जवाहर ने निराशा के भाव में कह दिया।

पद्मा बोली, "चिन्ता न करो जवाहर! गुल्लू को जानते हो न? उसका विवाह बिना पढ़े-लिखे भी हो गया है।"

"हाँ, उसकी बहू देखी है। गोरी-गोरी और सुन्दर है।"

"बस, तुमको भी गोरी-गोरी बहू मिल जावेगी।"

चन्दनसिंह ने पूछा, "पर माँ! कर्म दादा और धर्म दादा का विवाह क्यों नहीं हुआ?"

"यह उनकी माँ से पूछो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजरानी ने कहा, ''जब से कर्म के पिता स्वर्गवासी हुए हैं, मैं तो बच्चों के माता-पिता तुम्हें और भैया को ही मानती हूँ। मैं तो उनकी और घर-भर की नौकरानी-मात्र अपने को समझती हूँ।''

चन्दन ताई की विवशता पर दुःख अनुभव कर रहा था। उसने उससे सहानुभूति प्रकट करते हुए कह दिया, ''माँ! मैं तो विवाह तभी करूँगा जब कर्म दादा का विवाह होगा।''

''वाह····!'' दिलजीतसिंह ने इतना कह पुनः दूध पीना आरम्भ कर दिया।

वहाँ पर उपस्थित सभी दिलजीतसिंह के आगे कहने की प्रतीक्षा करने लगे थे। परन्तु वह नहीं बोला।

मोहन ने अपने हाथ में बातों का सूत्र लेते हुए कहा, ''मैं तो पहले ही माँ से कह रहा था कि बाबा से कह दें कि महोनावालों की लड़की का विवाह कर्मजीत से हो सकता है, चन्दन से नहीं। जब चन्दन सज्ञान होगा तो वह अपने लिए स्वयं पत्नी ढूँढ लेगा।''

पद्मा ने रोषपूर्ण स्वर में कहा, ''और यह भी कोई चंचल-सी ले आएगा।''

''तो वह खराब है माँ? उसको घर पर रखकर देखो तो पता चले कि वह अच्छी है या बुरी!'' मोहनसिंह ने कह दिया।

माँ ने दृढ़तापूर्वक कहा, ''जब तक तुम्हारे दोनों भाइयों का विवाह नहीं हो जाता, वह इस घर में नहीं आएगी।''

चन्दन ने उत्सुकता से पूछ लिया, ''चंचल कौन माँ?''

चन्दनसिंह भी एक चंचल को जानता था। वह गाँव के एक निर्धन ठाकुर की लड़की थी। वह प्रतापगढ़ में एक स्कूल में पढ़ती थी और वहीं अपनी मौसी के पास रहती थी। चन्दन जानना चाहता था कि माँ उसी चंचल के विषय में कह रही है अथवा किसी अन्य के विषय में। साथ ही वह यह विचार कर रहा था कि वह इस घर में क्यों आएगी। उसे अभी थोड़ा ही संदेह हुआ था।

माँ ने सारी बात बताते हुए कहा, ''चन्दन! तुम्हारे दादा ने एक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह कर लिया है—भैरोसिंह की लड़की चंचल से। मैं उसको इस घर में आने से मना कर रही हूँ।''

''तो इसीलिए नलिनी भाभी रूठ गई है?''

''हाँ।'' माँ ने सब बात साफ कह दी। उसने आगे कहा, ''चन्दन! यदि तुमने भी हमारी राय के बिना विवाह किया तो तुम्हारे बाबा तुमको भी घर से निकाल देंगे।''

चन्दन जानता था कि वह गाँव में सबसे अधिक पढ़ी लड़की है। पिछले मई मास में वह दसवीं की परीक्षा देकर माँ के घर आई थी। उसका परीक्षा-फल चन्दनसिंह के यहाँ रहते ही निकला था और वह उत्तीर्ण हुई थी।

''दादा! वह नलिनी भाभी से तो कम ही सुन्दर है।''

''क्यों, क्या असुन्दरपन है उसमें?''

''वह कुछ काले रंग की है।''

''तो क्या रंग ही सौन्दर्य का मापदण्ड है?''

''दादा, वह नलिनी भाभी से किसी बात में भी बढ़िया नहीं।''

''तुम बड़े पारखी बन गए हो न?''

चन्दनसिंह चुप हो गया। उसको यह दूसरी बात अरुचिकर प्रतीत हुई। पहली तो यह थी कि उसके माता-पिता ताई के लड़कों के विवाह के लिए मौन हो गए थे।

: ६ :

राजरानी का मन भी इन सब घटनाओं से प्रसन्न नहीं था। वह सत्य हृदय से अपने देवर से झगड़ा करना नहीं चाहती थी। परन्तु दिन-प्रतिदिन स्थिति ऐसी बनती जाती थी कि झगड़ा होता ही दिखाई देता था।

राजरानी का पति जब जीवित था तो सब इकट्ठे रहते थे। वह अपने छोटे भाई दिलजीत पर अगाध विश्वास और श्रद्धा रखता था। परिणाम-स्वरूप उसके मरने से पूर्व ही दिलजीतसिंह ने पारिवारिक सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीजीतसिंह की मृत्यु के समय उसका सबसे बड़ा लड़का कर्मजीत बारह वर्ष की आयु था। वह स्कूल की पाँचवीं श्रेणी में पढ़ता था। उसका छोटा भाई धर्मजीत उस समय चौथी श्रेणी में पढ़ता था।

पति की मृत्यु के एक वर्ष बाद तक तो राजरानी वैसे ही अपने देवर और देवरानी के घर रही, परन्तु वर्ष व्यतीत होते ही उसे अपनी पृथक् रसोई बनाने और फिर हवेली के पिछवाड़े में पृथक् रहने का मकान बना दिया गया। इसपर भी राजरानी कूटना-पीसना जहाँ अपने घर के लिए करती थी वहाँ अपने देवर के घर के लिए भी कर देती थी। परन्तु खाने-पहनने के लिए खर्चे के अतिरिक्त उसके हाथ में न तो पहनने के भूषण थे और न ही दान-धर्म के लिए कुछ नकद धन।

इस प्रकार व्यवहार चलते हुए नौ वर्ष व्यतीत हो गए थे। वह अनुभव करने लगी थी कि उसके लड़कों के भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह उनका अपने चाचा के घर से पृथक् अस्तित्व बनाए।

दिलजीतसिंह के तीनों लड़कों में से केवल चन्दनसिंह ही था जो उनसे मेल-जोल और उनकी अवस्था के साथ सहानुभूति रखता था और वह देख रही थी कि उसकी बात की भी अवहेलना हो रही है।

कर्मजीतसिंह सज्ञान होने लगा तो गाँव के लड़कों की संगति में बिगड़ने लगा।

एक दिन माँ ने पुत्र को गाँव के किसी लड़के से खराबी करते देख लिया। उसने कर्मजीतसिंह को डाँटते हुए कहा, "यह तो बुरी बात है!"

"पर माँ! हमारा मास्टर भी तो यही करता है।"

"अच्छा, तो तुम उस मास्टर के पास पढ़ने के लिए नहीं जाओगे।"

अगले दिन से उसे स्कूल जाने से मना कर दिया गया। वह नहीं गया तो उसका छोटा भाई धर्मजीत भी नहीं गया। राजरानी ने निश्चय कर लिया कि उसका कोई भी लड़का अब गाँव के स्कूल में नहीं पढ़ेगा।

वह स्वयं अपनी माँ के घर पर लड़कियों के स्कूल में पढ़ी थी। उसके माता-पिता जौनपुर के रहनेवाले थे और घर में पूजा-पाठ, संध्योपासना होती थी। अपने बच्चों को बिगड़ता देख उसके पुराने संस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाग्रत हो उठे थे।

वह अब विचार करने लगी कि बच्चों की शिक्षा कैसे हो? गाँव से पाँच मील के अन्तर पर एक पंडित तुलसीसहाय का उसे पता चला। वह बाबू साहब महोना का पुरोहित था और वेद-पुराण का ज्ञाता माना जाता था। उसका विचार आते ही उसने कर्मजीत को एक दिन पंडित जी को अपने पिता के श्राद्ध के भोज का निमन्त्रण देने भेज दिया।

पंडित जी ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। राजरानी ने उन्हें खीर, पूरी, साग इत्यादि खिलाई और साथ पाँच रुपया दक्षिणा देकर हाथ जोड़ निवेदन कर दिया, "पंडित जी, आप अपनी विद्या किसी को सिखाते भी हैं या नहीं?"

"कोई ब्राह्मण का बेटा सीखने नहीं आता। मेरा अपना लड़का है नहीं। बहुत परिश्रम से काशी जी के पंडित जगन्नाथप्रसाद से पढ़ा हूँ, पर सब पढ़ा-लिखा कुण्ठित होता जा रहा है। न तो यहाँ कोई सुननेवाला है न कोई पढ़नेवाला।

"बाबू साहब कभी वर्ष में दो-तीन बार सत्यनारायण की कथा करा लेते हैं। यह तो कुछ भी नहीं। मैं घास काटकर चला आता हूँ। न तो कोई समझनेवाला है, न किसी को समझने का अवकाश है। छोटे बाबू की लड़की को पढ़ाता हूँ, परन्तु वह बालिका-मात्र है। इसपर भी पढ़ाने से इन्कार नहीं कर सकता।"

"तो महाराज, यहाँ चार आपके लड़के हैं। इनको ही दीक्षा दे अपना शिष्य बना लीजिए।"

"पर वे वहाँ आएँगे?"

"क्यों नहीं आएँगे? वैसे तो चार हैं परन्तु एक अभी बहुत छोटा है। वह नित्य इतनी दूर जा नहीं सकेगा। इस कारण अभी तीन को शरण दीजिए।"

"ये स्कूल में नहीं पढ़ते?"

"नहीं, वहाँ की पढ़ाई मुझे पसन्द नहीं। मैं चाहती हूँ कि ये वेदशास्त्र पढ़ जाएँ तो अपना भी कल्याण करेंगे और परिवार का भी नाम
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उज्ज्वल करेंगे। घर में खाने-पीने की कमी तो है नहीं।''

''ठकुराइन, ठीक है। देखूँगा ये ठाकुर से ब्राह्मण बन सकते हैं अथवा नहीं।''

''महाराज, नहीं बनेंगे तो त्रिशंकु की भाँति बीच में ही लटकते रह जाएँगे। आप तो यत्न कर दीजिए।''

इस प्रकार राजरानी के तीन लड़के महोना जाने लगे और तीन घण्टे पंडित जी से पढ़कर सायंकाल घर आने लगे।

यह कार्यक्रम चलते हुए भी आठ वर्ष हो गए थे। कर्मजीत 'अष्टाध्यायी' के बाद न्यायदर्शन पढ़ चुका था और अब उपनिषद् का अध्ययन कर रहा था। पंडित तुलसीसहाय कुछ ऐसा अनुभव कर रहा था कि कर्मजीत उससे भी अधिक जान गया है। वस्तुतः कर्मजीत उपनिषद् पढ़ता हुआ पंडित जी को उसके रहस्य बताने लगा था। पंडित जी मन्त्रमुग्ध की भाँति उससे उपनिषद् की व्याख्या सुनते थे।

कर्मजीत से छोटा धर्म 'अष्टाध्यायी' पढ़ वाल्मीकि रामायण का पाठ कर रहा था। वह अपने बड़े भाई के तुल्य प्रतिभा नहीं रखता था; इसपर भी वह उन्नति कर रहा था।

विश्वजीत तो अभी 'हितोपदेश' ही पढ़ता था। वह 'अष्टाध्यायी' को कंठस्थ कर रहा था।

जवाहर को भी पंडित जी के पास भेजा गया था, परन्तु उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। उसकी पढ़ने-लिखने में किसी प्रकार की रुचि नहीं थी। वह घर पर माँ का काम करता था और चाचा के खेतों में घूम-घूमकर कामदारों को डाँट-फटकार आता था।

उस दिन दिलजीत और उसके परिवार के साथ चाय पीकर राजरानी का चित्त प्रसन्न नहीं हुआ। वह भारी मन से उठी और अपने घर की ओर चल पड़ी। चन्दनसिंह और जवाहरसिंह भी उठकर उसके साथ चल पड़े।

उनके चले जाने पर पद्मा ने अपने पति से कहा, ''कहो तो मैं अपने मायके से कोई लड़की धर्म और कर्म के लिए यहाँ ले आऊँ?''

''इन अनपढ़ों को कौन देगा अपनी लड़की?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लोग तो गुल्लू जैसे उजड्ड और गँवारों को भी लड़की दे देते हैं।"

"गुल्लू कर्म से कई गुना अधिक अच्छा लड़का है। अपने खेतों पर जाता है, दिन-भर मेहनत करता है। घर धन-धान्य से भरा है।"

"इनका घर धन-धान्य से भरा नहीं क्या?"

"नहीं, मोहन की माँ! हम इनके विवाह में सहायक नहीं होंगे।"

"घर में झगड़ा उठ पड़ेगा।"

"यह राँड झगड़ा करेगी तो धक्के देकर घर से बाहर निकाल दूँगा।"

पद्मा अपनी जेठानी के विषय में ऐसे अपशब्द सुनकर चुप हो गई।

मोहन ने उठकर अपने नये घर की ओर जाने से पूर्व कहा, "माँ, चंचल आपको अपने घर आने का निमन्त्रण देती है। वह कहती है कि यदि उसे इस घर में आने की स्वीकृति नहीं है तो तुम स्वयं ही उठकर उसके घर चली आओ।"

"क्या होगा इससे?"

"होगा यह कि उसे सास मिलेगी, मुझे माँ मिलेगी और तुम्हें नई बहू मिलेगी।"

"पहले नलिनी के मायके जा उसकी मिन्नत-समाजत कर यहाँ ले आओ, तब मैं और वह—दोनों ही वहाँ चलेंगी।"

मोहन निराश हो चला गया।

मोहन के चले जाने पर दिलजीतसिंह ने कहा, "सुनो भाग्यवान! मैं जीवन-भर इस गन्दे मकान में बिना साजो-सामान के रहता हुआ धन एकत्रित करता रहा हूँ। यह इसलिए नहीं कि इस राँड के बच्चों पर व्यय कर दूँ। नहीं, यह नहीं होगा। इनका पिता भी तो कुछ काम नहीं करता था। केवल चौधरपना ही करता था। सब काम-धंधा और ज़मींदारी का प्रबंध तो मैं करता था। सो अब भी मैं ही करता हूँ। इस कारण मैं कहता हूँ कि जमींदारी और पूर्ण सम्पत्ति मेरी है। मैं इसे किसी को नहीं दूँगा।"

पद्मा को राजरानी को राँड-राँड कहते सुन दुःख होने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कह ही दिया, ''ठीक है, उनका भाग उनको नहीं दे सको तो मत देना, परन्तु उस दुखियारी को गाली क्यों देते हो?''

''मैंने गाली दी है क्या?''

''उसे राँड-राँड कह रहे हो न! यह गाली नहीं तो और क्या है?''

''यह तो वह जैसी है वैसा ही उसको कह रहा हूँ।''

''जी नहीं, कौन इस नश्वर संसार में सदा रहने का ठेका लेकर आया हुआ है?''

''तो तुम समझती हो कि मैं भी मरूँगा?''

''यही इस संसार का नियम है।''

''उस नियम में अभी बहुत समय है। तब तक मैं इन सबकी सफाई कर दूँगा।''

पद्मा बात इससे आगे नहीं चला सकी। वह चुप रह गई। दिलजीतसिंह ने अपने नौकर सीतलू को आवाज़ दी और हुक्का ताज़ा करने के लिए कह दिया। पद्मा भी उठी और अपने कमरे में चली गई।

अभी दिलजीतसिंह मकान के भीतर की बैठक में बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे कि पंडित तुलसीसहाय एक नौकर से एक बड़ा-सा थाल, जिसपर लाल रेशमी रूमाल पड़ा था, उठवाए हुए मकान में आए। पंडित जी के साथ कर्मजीत, धर्मजीत और विश्वजीत भी थे। सब-के-सब भीतर के घर की तरफ चले गए। दिलजीतसिंह विस्मय में देखता रह गया और इसका अर्थ समझ नहीं सका।

: ७ :

राजरानी अपने देवर के घर से अपने घर की ओर जा रही थी कि पीछे से चन्दनसिंह लम्बे-लम्बे पग धरते उसके पास आ पहुँचे। वह पिछले प्रांगण में पहुँच गई थी। चन्दनसिंह ने अपने आने का कारण बताते हुए कहा, ''मैं कर्म दादा से मिलने के लिए आया हूँ।''

''उसके आने में तो अभी एक घंटा है।''

''तब तक मैं जवाहर से बातें करूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजरानी उसको लेकर बैठक-घर में चली गई। वहाँ पहुँच जवाहर ने कह दिया, ''हाँ दादा! मैं तुमको गाँव की बातें बताऊँगा।''

उसी समय बकरी मिनमिनाई तो चन्दनसिंह ने मुस्कराते हुए कहा, ''वह फिर पानी माँग रही मालूम होती है।''

''नहीं दादा! अब वह घास-पत्ते इत्यादि खाने के लिए माँग रही है। मैं इसके लिए जंगल से काटकर लाया हूँ। इसे खाने के लिए देकर अभी आता हूँ।''

जवाहर भागकर बकरी की ओर चला गया। वह बकरी को अपने बँधे स्थान से खोलकर ले गया जहाँ उसने पत्तों इत्यादि का ढेर लगाया हुआ था।

चन्दन ने ताई से पूछा, ''ताई, आस-पड़ोस में कोई ऐसी लड़की नहीं है जो कर्मजीत भैया के लिए ठीक हो?''

''बेटा....'' ताई ने बात समाप्त नहीं की और बात बदलकर पूछ लिया, ''कितने दिन की छुट्टी पर आए हो?''

चन्दन समझ गया कि कोई अन्य दु:खद घटना है जो ताई के मुख से निकल नहीं सकी। उसने भी बात को आगे नहीं चलाया। प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया, ''ताई, अगले महीने की दूसरी तारीख को कॉलेज खुलेगा और मैं उससे एक दिन पहले यहाँ से जाऊँगा। अभी आठ दिन हैं।''

''तब तो ठीक है। इतने दिन में तुम सब समझ जाओगे।''

''ताई! वह तो मैं आज ही जान गया हूँ। यह भैया की नई बहू भैरोसिंह की बेटी देखी है तुमने?''

''हाँ, उसे तब से जानती हूँ जब वह पढ़ने भी नहीं जाती थी। पढ़ने जाने के बाद बीच-बीच में वह अपनी माँ के पास आती रहती थी।

''एक दिन मोहन सायंकाल खेतों से नहीं लौटा और गाँव के एक आदमी ने आकर बताया कि मोहन और चंचल का विवाह हो रहा है। मैं बहिन पद्मा को बताने के लिए गई तो वह मुझे झूठी और मूर्ख कहने लगी। मैंने उसको कहा कि मदन को भेजकर पता तो कर लेना चाहिए।

''मदन को भेजा गया। उसने लौटकर समाचार का समर्थन किया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर में शोक छा गया। उस समय नलिनी प्रसूति-गृह में थी। लल्ला अभी आठ दिन का था। उसको भी पता चल गया और वह रोती रही।

"आश्चर्य की बात यह हुई कि तुम्हारे पिता नलिनी को ही डाँटने लगे। वे कहने लगे कि यह उसका ही दोष है।

"इस पर तुम्हारी माँ ने मदन को भेजकर मोहन को कहला भेजा कि वह अपनी नई बीवी को लेकर इस घर में न आए।

"मोहन कुछ इस प्रकार की आशा पहले से ही करता था, इसलिए उसने श्वसुर के मकान की बगल में एक पृथक् मकान पहले ही ले लिया था। विवाह के बाद चंचल को वह उस घर में ले गया। तब से वह वहीं रहता है। इधर नलिनी को नित्य तुम्हारे पिता जी से गालियाँ मिलने लगीं तो उसने एक दिन अपने पिता को पत्र लिखा। उसकी माँ आई तो वह यहाँ से चल दी।

"अब तुम्हारे पिता नई बहू को घर बुलाने की बात कहते रहते हैं। परन्तु तुम्हारी माता जी नहीं मानतीं और मोहन अपने नये घर में ही रह रहा है।"

इस समय तक जवाहरसिंह आ गया। वह चंचल की बातें सुन बोल उठा, "दादा! मैं भाभी से मिलने के लिए जाता हूँ। वह मुझे मिठाई वगैरह खाने के लिए देती है।"

"वगैरह से क्या मतलब?"

जवाहरसिंह हँस पड़ा। उसने देखा कि माँ खाना बनाने के लिए रसोईघर में चली गई है तो उसने कहा, "किसी को बताओ नहीं तो वगैरह का मतलब बता सकता हूँ।"

"किस-किसको न बताऊँ?"

"माता जी, चाचा जी और चाची जी को। न ही ऐसे किसी आदमी को जो उनको जाकर बता दे।"

"क्या खाते हो वहाँ जाकर?"

"दादा! मुर्गी के अण्डे और कभी-कभी कलिया भी।"

"सत्य? तब तो तुम बहुत बड़े आदमी हो गए हो। हम लखनऊ में भी यह सब खाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इससे जवाहरसिंह का साहस बढ़ा और वह चंचल की और बातें बताने लगा। बातें करता-करता वह एकदम बोला, ''दादा!''

''हाँ?''

''मैं भी विवाह करूँगा।''

''क्यों, क्या करोगे विवाह करके?''

जवाहरसिंह का मुख लाल हो गया। चन्दनसिंह ने पूछ लिया, ''किससे करोगे विवाह?''

''करूँगा तो उसी से, माँ जिससे करेगी, मगर जल्दी करूँगा।''

''अच्छा, बहुत जी करता है?''

''हाँ दादा! एक लड़की है वह मुझको बताती है।''

''क्या बताती है?''

''यही कि वह मुझसे विवाह करेगी।''

''कौन है वह?''

''सन्तो है। नन्दू बारी की लड़की है। कभी-कभी अपनी माँ के साथ चौका-बासन करने आती है।''

''कितनी बड़ी है?''

''देखने में तो मेरे जितनी ही है।''

''माँ से कहा है?''

''नहीं।''

''क्यों?''

''वह मुझे पसन्द नहीं। वह बहुत गन्दी है। मैं तो चंचल भाभी की भाँति साफ-सुथरी लड़की से विवाह करूँगा।''

चन्दन हँस पड़ा। उसे हँसता देखकर जवाहर को समझ आया कि चन्दन नाराज़ नहीं है। इस कारण उसने बता दिया, ''वह मेरा मुख चूमती है और गले मिलती है।''

''तो तुम उसको मना नहीं करते?''

''करता तो हूँ, पर वह मानती ही नहीं।''

''देखो जवाहर, उससे मत मिला करो। यह ठीक नहीं। माँ जानेगी
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पीटेगी। भैया भी कान मरोड़ेंगे।''

''पर क्या करूँ, जब कभी वह आती है तो मुझे संकेत कर अन्दर कमरे में चली जाती है और फिर मैं वहाँ जाए बिना नहीं रहता।''

''अच्छा, मैं ताई से कह दूँगा और उसको यहाँ आने से मना करा दूँगा।''

''दादा! बहुत अच्छा करोगे। साथ ही कह देना, मैं तो उसकी बातें पसन्द नहीं करता, परन्तु वह मानती ही नहीं।''

''जब तुम उसको पसन्द नहीं करते तो उसे धक्के देकर कमरे से बाहर निकाल क्यों नहीं देते?''

''वह लड़की है न? चंचल भाभी कहती थी कि लड़के लड़कियों को पीटते नहीं।''

''तो उसको भी सन्तो की बात बताई है?''

''नहीं; बताता तो मोहन दादा नाराज़ हो जाते।''

''अच्छा देखो, अब सन्तो को मिलने मत जाना। मैं उसको यहाँ आने से मना करा दूँगा। मगर एक बात याद रखो! जब तक मोहन दादा की भाँति पढ़-लिखकर परीक्षा पास नहीं करोगे, तब तक चंचल भाभी जैसी बीवी नहीं मिलेगी। कोई सन्तो जैसी गन्दी और कुरूप ही मिलेगी।''

''पर पढ़ूँ कैसे? मैं जब किताब की सूरत ही देखता हूँ तो मेरे सिर में चक्कर आने लगता है।''

चन्दन विचार कर रहा था कि जवाहर को सन्तो से बचाना चाहिए। उसने कह दिया, ''देखो, तुम कर्म दादा के साथ पढ़ने के लिए जाया करो। वहाँ जाने पर तुम स्वयमेव पढ़ने लगोगे।''

''अपने-आप पढ़ जाऊँगा?''

''हाँ, पढ़ना एक छूत की बीमारी है। पढ़नेवालों के साथ रहो तो पढ़ाई होने लगती है।''

''यह तो बहुत मज़ेदार बात है!''

''हाँ, मैं ताई जी से कहूँगा कि तुमको भी दादा के साथ भेज दिया भी करें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन समझ रहा था कि सन्तो वह-कुछ कह रही है जो निर्मला मौन संकेतों से कहती रही है। अन्तर यह है कि वह एक पढ़ी-लिखी लड़की है और दूसरी अनपढ़ और असभ्य है। वह स्वयं भी अपने को दोषी मानने लगा था। वह भी तो निर्मला की ओर आकर्षित हुआ था और वहाँ उससे मिलने के लिए जाता था। इस विचार के आते ही उसकी सहानुभूति सन्तो के साथ हो गई। परन्तु इस समय उसे यह समझ आया कि सन्तो एक बारी की लड़की है और निर्मला एक क्षत्रिय राजपूत की। दोनों में अन्तर का अनुमान लगा वह अपने को दोषमुक्त मानने लगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह ताई को सब बातें बता देगा।

जवाहरसिंह ने पुनः चंचल के विषय में बातें करनी आरम्भ कर दीं। जवाहर समीप हो चन्दन को भेद की बातें बताने लगा, ''दादा! मोहन दादा तो चंचल को विवाह से पहले भी मिलने जाया करते थे।''

''सत्य?''

''हाँ, मुझे मालूम है। एक दिन मैंने दादा को भैरोसिंह के घर जाते देखा था तो दूसरे दिन दादा पूछने लगा कि किस-किसको मैंने उसकी बात बताई है?

''मैंने कह दिया कि अभी किसी को नहीं बताई।

''उन्होंने कह दिया कि किसी को नहीं बताना।

''कहने लगे कि इसके लिए वह मुझे इनाम देंगे।

''क्या इनाम देंगे?'

'' 'एक दिन लखनऊ की सैर करने ले चलूँगा' उन्होंने कहा। फिर मैंने किसीको नहीं बताई।''

''तो फिर गए हो सैर करने के लिए?''

''अगले मास चलेंगे, जब सर्दी कुछ कम हो जाएगी। भाभी भी साथ चलेगी।''

''तो वहाँ मुझसे मिलोगे?''

''तुम वहाँ किस जगह रहते हो?''

''दादा जानते हैं, वे मुझको मनीऑर्डर से रुपए भेजा करते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं दादा से कहूँगा कि तुमसे मिलना चाहिए।''

बात इसी प्रकार चल रही थी कि कर्मजीत इत्यादि आ गए। उनके साथ पंडित तुलसीसहाय भी थे और एक नौकर एक थाल उठाए हुए था जो रेशमी रूमाल से ढँका हुआ था।

चन्दनसिंह ने पंडित जी को 'जैराम जी की' कही तो पंडित जी ने कहा, ''ठकुराइन कहाँ हैं?''

जवाहर भागा हुआ माँ को बुलाने के लिए भीतर चला गया।

: ८ :

लक्ष्मणसिंह तो अपनी हवेली के पास ही मोटर से उतर पड़ा था। जब मोटर चन्दनसिंह को छोड़ने चली गई तो वह पैदल ही अपनी हवेली की तरफ चल पड़ा। हवेली में पहुँच वह अपनी बैठक में बैठ चन्दनसिंह से पूर्ण वार्तालाप का मन्थन करने लगा था। एक बात मन में निश्चय कर लि यह वह लड़का नहीं हो सकता जिसके विषय में वह विचार कर रहा था, वह अन्त:पुर में गया और अपनी पत्नी इन्द्रमणि को बुलाकर पूछने लगा, ''तुम दिलजीतसिंह के घर गई थीं?''

''लड़के की माँ पद्मा से मिली हूँ। उसकी एक विधवा जेठानी भी है। उससे भी बातें हुई हैं। दोनों औरतें अति सुशील और सभ्य हैं।''

''लड़का भी देखा है?''

''नहीं, वह लखनऊ से आनेवाला है। अभी आया नहीं था।''

''देखो देवी! कुछ भूल हो गई है।''

''क्या भूल हो गई है?''

''दिलजीत का वह लड़का जिसको तुम देखने गई थीं, वह पंडित जी का बताया लड़का नहीं है। पंडित जी वाला लड़का तो उनसे संस्कृत और शास्त्र पढ़ता है और यह लड़का लखनऊ कॉलेज में पढ़ता है। मैं उसे मिल आया हूँ। मेरे साथ ही वह लखनऊ से आया है। वह लड़का तो मुझे पसन्द नहीं।''

''तो फिर? मैं तो उसकी माँ को कह आई हूँ कि वह कल लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को देखने के लिए आ जाएँ और शकुन ले जाएँ।

"बहुत जल्दी की है।"

"आपने जो लड़के की प्रशंसा के पुल बाँध रखे थे!"

लक्ष्मणसिंह का स्वभाव था तुरन्त निर्णय करने का। इस कारण उसने मन में कुछ विचार किया और कहा, "पहले पंडित जी से कह दूँ कि यदि हो सके तो लड़के को लाकर दिखा दें।"

"ठीक है, जल्दी करिए। घर में आए का मैं अनादर नहीं कर सकती।"

लक्ष्मणसिंह ने बाहर आ चौकीदार को पंडित तुलसीसहाय के घर भेज दिया और कहला भेजा कि वे लड़के को साथ लेकर तुरन्त आ जाएँ।

कर्मजीत, धर्मजीत और विश्वजीत तीनों इकट्ठे पढ़ने आते थे और इकट्ठे ही जाते थे। तीनों में परस्पर बहुत प्रेम था। एक ही गुरु से पढ़ने और आठ वर्ष से इकट्ठे आने-जाने से प्रेम में वृद्धि हो रही थी। साथ ही पिता की संरक्षकता न रहने से वे अपने को अकेला अनुभव करते थे। इसने भी उनको एक-दूसरे के बहुत ही समीप कर दिया था।

इस दिन वे पढ़ाई कर ही रहे थे कि लक्ष्मणसिंह का संदेश लेकर चौकीदार पहुँच गया। उसने जब संदेश सुनाया तो पंडित जी को तुरन्त समझ आ गया कि बबुआइन कर्मजीत को देखना चाहती हैं। अतः पंडित जी ने कर्मजीत को कहा, "कर्मजीत! ज़रा मेरे साथ बाबू जी की हवेली तक चलना होगा।"

"क्या बात है, गुरु जी?"

पंडित अभी बताना नहीं चाहता था। इस कारण उसने कहा, "यह तो वहाँ जाकर ही पता चलेगा। मुझे और तुमको बुलाया है।"

कर्मजीत कुछ समझ नहीं सका। उसने पूछ लिया, "क्यों न धर्म और विश्वजीत भी साथ चलें, हम वहीं से घर को लौट जाएँगे?"

"हाँ, तो चलो। मेरा विचार है कि जल्दी ही अवकाश मिल जाएगा।"

जब ये लोग हवेली में पहुँचे तो लक्ष्मणसिंह अपने बड़े भाई रामसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से राय करने के लिए गया हुआ था। उसने अपने बड़े भाई से कहा, ''मैं दिलजीतसिंह के लड़के से अपनी लड़की का विवाह नहीं करूँगा। मैं समझता हूँ कि वह अभी बच्चों की-सी बातें करता है।''

''परन्तु बहू लड़के की माँ को निमंत्रण जो दे आई है?''

''उसका इलाज मैं अभी करना चाहता हूँ। इसी कारण पंडित जी को और लड़के को भी यहाँ बुलाया है। भैया! तुम भी ज़रा पंडित जी वाले लड़के को देख लो।''

दोनों भाई अभी बातचीत ही कर रहे थे कि पंडित जी के पहुँचने की सूचना आ गई। अतः दोनों बाहर बैठक में पंडित जी से मिलने चले आए। उचित अभिवादन के उपरान्त लक्ष्मणसिंह ने पूछ लिया, ''आप किस लड़के के विषय में कह रहे थे?''

तुलसीसहाय ने कर्मजीत की ओर संकेत कर कहा, ''यह है कर्मजीतसिंह। पिछले आठ वर्ष से यह मेरे पास पढ़ रहा है, और मैं समझता हूँ कि शास्त्र के विषय में मुझसे यह कुछ अधिक ही जानता है।

''इस विद्या के अतिरिक्त लड़का सदाचारी, सुशील और बुद्धिशील है। आप इससे कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं।''

लक्ष्मणसिंह ने विचार किया और पूछ लिया, ''तुमने लखनऊ जाकर शिक्षा ग्रहण नहीं की। क्या सामर्थ्य नहीं थी?''

''सामर्थ्य का प्रश्न तो तब उपस्थित होता जब मुझको स्कूल-कॉलेज की शिक्षा लेनी होती। मैं गाँव में छठी श्रेणी में पढ़ता था। माँ ने कुछ बात देखी और अपने स्कूल के मास्टर की किसी प्रकार की बात सुनी तो मुझे स्कूल से उठा लिया। मैंने पूछा कि मैं अब कहाँ पढ़ूँगा?

''माँ ने कहा था, इस स्कूल में पढ़ने से तो न पढ़ना अच्छा है।

''बाद में मुझे गुरु जी के पास भेजा जाने लगा। अब मैं समझता हूँ कि माँ ने ठीक ही किया था।''

''परन्तु अक्ल तो पढ़ने से ही आती है।''

कर्मजीत मुस्कराया और बोला, ''मेरे चाचा के लड़के लखनऊ में पढ़ते हैं, परन्तु कभी आप उनसे मिलकर उनकी अक्ल की परीक्षा करेंगे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता चलेगा कि अक्ल स्कूल-कॉलेजों में पढ़ने से नहीं आती। अक्ल, मेरा अभिप्राय है बुद्धि, का विकास तो ध्यानावस्था में होने से होता है। पढ़ाई से तो पूर्व के विद्वानों द्वारा संचित ज्ञान की सूचना-मात्र प्राप्त होती है।''

''तो यह क्या कम बात है?''

''परन्तु उस सूचना से लाभ ही क्या, जिसके अर्थ ही समझ में न आवें? बुद्धि का विकास प्रथम बात है। सूचना दूसरे दर्जे पर आती है। बुद्धि विकसित हो तो कम सूचना और कम साधनों से भी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।''

''मान लो, तुम निस्सहाय हो जाओ और जेब में एक पैसा न हो तो क्या करोगे?''

''कठिनाई जाने बिना उसको दूर करने का उपाय नहीं बताया जा सकता। इस पर भी इतना तो बताया जा सकता है कि पाँच फुट सात इंच ऊँचा, सुदृढ़ और स्वस्थ शरीर रखते हुए बुद्धि को अपना मार्ग बनाने में कठिनाई नहीं होगी।''

लक्ष्मणसिंह तो लड़के की युक्तियुक्त बात से संतुष्ट था, तो भी वह अपने बड़े भाई को पृथक् कमरे में ले-जाकर पूछने लगा, ''भैया! कैसा लगा है लड़का?''

''मुझे तो पसंद है।''

''तो भैया, सुनो! मैं इसे अभी महेश्वरी की माँ और ताई को दिखा देता हूँ, और यदि वे भी पसंद करती हैं तो मैं अभी लड़के को शकुन भेजकर सगाई कर देता हूँ। इसकी सूचना एक ढंग से दिलजीतसिंह तक भेज देता हूँ जिससे उसकी धर्मपत्नी आने का कष्ट न करें।''

''ठीक है, लड़की के विवाह की बात है, कोई साग-भाजी का सौदा तो कर नहीं रहे।''

लक्ष्मणसिंह ने अपनी पत्नी और भाभी को वहाँ बुला लिया और लड़के को भी भीतर बुला लिया। यह लक्ष्मणसिंह का स्वभाव था कि वह बात विचार कर तुरन्त कार्यान्वित कर देता था। जब सबने स्वीकार कर लिया तो पंडित जी को भी भीतर बुला लिया गया और उनको पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थिति समझाकर यह कह दिया कि मोटर में नौकर साथ कर देता हूँ और शकुन की मिठाई और रुपये लेकर कर्मजीत की माता जी को दे आइए।

"साथ ही लड़की का फोटो दे देते हैं। वह इसकी माता जी को दिखा दीजिए। क्या विचार है आपका?"

पण्डित जी ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "यह ठीक है। कर्मजीत चन्दन से आयु में भी बड़ा है, शिक्षा में भी अधिक है। इस कारण पहले इसका विवाह तो होना ही चाहिए। भला उनको आपत्ति क्यों हो सकती है? मैं तो समझता हूँ कि प्रसन्नता होनी चाहिए।"

पन्द्रह मिनट में सब तैयार कर दिया गया। एक थाल में लड्डू, लड़के के लिए एक सौ रुपये, उसकी माता के लिए पाँच सौ रुपये और उसके तीनों भाइयों के लिए पचास-पचास रुपये। साथ ही एक कटोरी में घिसा केसर-चावल रखकर तीनों भाइयों, पंडित जी और एक नौकर को मोटर में भेज दिया गया।

ये सब दिलजीतसिंह की हवेली में गए और जब उसके सामने से गुजरकर भीतर के प्रांगण की ओर गए तो वह विस्मय में कुछ न समझता हुआ देखता रह गया। जब ये लोग भीतर चले गए तो दिलजीतसिंह ने पद्मा को बुला उनके पीछे भेज दिया।

"ज़रा जाना, देखना कि पंडित राजरानी के पास कहाँ से और क्या लेकर आया है।"

पद्मा राजरानी के प्रांगण में जा पहुँची। पंडित तुलसीसहाय तो जब से लड़के को पढ़ाने लगा था, प्रतिमास संक्रांति के दिन राजरानी के निमन्त्रण पर भोजन करने आया करता था। कभी पंडित जी की धर्मपत्नी और लड़की भी आया करती थीं। अतः पंडित जी तो घर के मार्गों से परिचित थे। वे आँगन में पहुँचे तो चन्दनसिंह से पूछने लगे, "ठकुराइन जी कहाँ हैं?"

जवाहरसिंह अपनी माँ के विषय में पूछा जाता सुन भागा-भागा रसोईघर में गया और पंडित जी के कर्मजीत इत्यादि के साथ आने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना दे आया। राजरानी भीतर अपने सोने के कमरे में चली गई और वस्त्र बदलकर बाहर आ गई। राजरानी ने पंडित जी के बैठने को पीढ़ा दिया। फिर पूछने लगी, ''क्या आज्ञा है, महाराज?''

''देखो ठकुराइन! मैं कर्मजीत के विवाह का प्रबन्ध कर आया हूँ। यह मिठाई,'' पंडित जी ने नौकर के हाथ से थाल पकड़े और राजरानी के सामने रख कह दिया, ''सगाई का शकुन है।''

पंडित जी ने थाल पर से कपड़ा उठाया और उसके नीचे रखे रुपये निकालकर अपने हाथ में पकड़कर कहा, ''बबुआइन, अब तुम मानो तो मैं लड़की की ओर से लड़के को तिलक कर दूँ।''

''पंडित जी, मुझसे क्या पूछते हैं? आप गुरु हैं, आपकी आज्ञा और चुनाव शिरोधार्य होगा। यदि आप सम्बन्ध को ठीक समझते हैं तो मैं कैसे इन्कार कर सकती हूँ!''

''तो आओ, कर्मजीत! बैठ जाओ!''

जब कर्मजीत बैठ गया तो पंडित जी ने केसर से कर्मजीत के मस्तक पर तिलक किया और उसपर चावल लगा दिए और फिर पंडित जी ने जेठानी-देवरानी को बधाई दी।

पद्मा ने पूछ लिया, ''पंडित जी! यह लड़की किसकी है, यह तो आपने बताया ही नहीं?''

''ओह! भूल हो गई बबुआइन! महोना के बाबू रामसिंह के छोटे भाई लक्ष्मणसिंह की लड़की महेश्वरी की ओर से तिलक किया है। और हाँ, लड़की का चित्र भी है।''

पंडित जी ने कागज में लिपटी फोटो राजरानी के हाथ में दे दी। इसके उपरान्त उसने सबको रुपये दिए। जब जवाहरसिंह को इक्यावन रुपये दिए तो वह बोल उठा, ''हाँ पंडित जी! भाभी स्वीकार है।''

सब हँसने लगे।

पंडित जी ने उठते हुए कहा, ''अब तुम दो-चार दिन में लड़की की माँ से मिलकर विवाह की तिथि आदि निश्चय कर आना।''

पंडित जी नौकर को साथ लिये हुए लौटे तो दिलजीतसिंह ने पंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जी को लौटते देख आवाज़ दे बुला लिया। पंडित जी ने कहा, ''ओह! तो आप यहाँ अँधेरे में बैठे हैं! मैंने जाते समय आपको देखा ही नहीं। सुखी रहो, भाग्यशाली रहो!''

''कैसे आए थे और यह क्या लाए थे?''

''आपके बरखुरदार कर्मजीतसिंह की सगाई का शकुन था।''

''सत्य? तब तो बहुत प्रसन्नता की बात है। कर्मजीत की माँ ने ले लिया है क्या?''

''हाँ, मैं लड़की की ओर से लड़के को, उनकी माँ के सामने तिलक करने आया था, सो कर आया हूँ। अच्छा, अब मुझे इजाज़त दीजिए।''

: ९ :

पंडित जी उठकर चले गए और दिलजीतसिंह मन में विचार कर रहा था कि भगवान जाने चन्दन की बात ही कहीं सत्य न हो जाए कि उसका विवाह कर्मजीत के साथ ही होगा।

वह अभी मन में यह विचार कर ही रहा था कि राजरानी और कर्मजीत अपने सब भाइयों और चन्दन के साथ वहाँ आ पहुँचे। कर्मजीत मिठाई का थाल उठाए हुए था। राजरानी ने लड़के से कहा, ''कर्म! चाचाजी के सामने यह रख दो और इनके चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद माँगो।'' पद्मा पीछे खड़ी ध्यानपूर्वक पति का मुख देख रही थी। दिलजीतसिंह प्रसन्न प्रतीत होता था।

जब कर्मजीत ने चाचा जी के चरण-स्पर्श किए तो उसने आशीर्वाद दे दिया, ''बेटा! खुश रहो, आबाद रहो, दीर्घकाल तक घर-गृहस्थी का सुखभोग करो।''

इसपर पद्मा ने कह दिया, ''आपने यह तो पूछा ही नहीं कि किसकी लड़की से यह सब-कुछ हो रहा है।''

''अरे हाँ! कौन है वह जिसको यह कर्मजीत यहाँ जीतकर ला रहा है?''

उत्तर पद्मा ने ही दिया, ''महोना के बाबू लक्ष्मणसिंह ने इसे अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दामाद बनाना स्वीकार किया है।''

दिलजीत का मुख गम्भीर हो गया और धीरे-धीरे उसके मस्तक पर त्यौरी चढ़ गई। फिर एकाएक बाबू साहब ने पूछ लिया, ''और यह मुझसे पहले क्यों नहीं बताया?''

''क्या होता बताने से?''

''मैं यह सब लौटा देता।''

''क्यों?''

''यह तो छोटे भाई की बीवी को छीनकर बड़ा भाई लिये जा रहा है!''

''नहीं,'' अभी भी पद्मा ने ही उत्तर दिया, ''ऐसा नहीं जी! लड़की अपने ही घर में आई है। चन्दनसिंह तो पहले ही कह रहा था कि उसका विवाह यहाँ नहीं होगा। सो नहीं हो रहा।''

''मैं यह नहीं कह रहा। मैं कहता हूँ कि एक के साथ वचन दे फिर दूसरे को वरण करना भला कहाँ की भलमनसाहत है? नहीं, कर्म की माँ, नहीं। यह सब-कुछ वापस कर आओ। यदि चन्दन उनको पसन्द नहीं तो कर्म को उसकी लड़की पसन्द नहीं हानी चाहिए।''

''पर भैया! तिलक तो हो चुका। अब इन्कार कैसे हो सकता है?''

''तो तुम यहाँ नहीं रह सकती। इस घर में लक्ष्मण की लड़की नहीं आएगी।''

''यहाँ नहीं आएगी तो कहाँ जाएगी?''

''जहन्नुम में! कहीं भी जाए, पर मेरे घर में नहीं आएगी।''

''तो हमारा घर पृथक् कर दीजिए।'' राजरानी ने कहा।

''तुम्हारे लड़के अब स्वयंवर जीत-जीतकर बीवियाँ लाने लगे हैं। अब घर भी स्वयं बना लें।

''देखो कर्मजीत! यह सब कल प्रातः ही वापस हो जाना चाहिए, अन्यथा तुम सबको धक्के दिलवा-दिलवाकर घर से बाहर निकाल दूँगा!''

इसपर जवाहर ने कह दिया, ''पर चाचा जी! यह घर तो हमारा है!''

''हमारा के बच्चे! चले जाओ यहाँ से!'' दिलजीतसिंह हुक्के की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नली उठा उसको पीटने के लिए लपका। तब तक जवाहर भागकर बैठक से बाहर चला गया था, उसके हाथ नहीं आया।

"अच्छी बात है, कल पंडित जी को बुला इसको वापस करने का यत्न करूँगी।"

"नहीं माँ!" कर्मजीत ने बात बदलकर कहा, "गुरुजी का किया तिलक पोंछा नहीं जा सकता। यह वापस नहीं होगा। हम पृथक् घर में चले जाएँगे।"

कर्मजीत ने मिठाई का थाल उठाया और बोला, "माँ! चलो।"

राजरानी ने पूछा, "कहाँ?"

"चाचा जी के पड़ोस में।"

सब हँस पड़े। राजरानी उठ खड़ी हुई। उसने दिलजीतसिंह को कहा, "भैया! नाराज़ होने की बात नहीं। चन्दन और कर्म में अन्तर देखते हो, इसीलिए यह मन में क्षोभ है। भगवान को स्मरण कर विचार करोगे तो इसमें हानि नहीं, लाभ देखने लगोगे।"

राजरानी बैठक से निकली तो उसके सब लड़के भी बाहर आ गए। दिलजीतसिंह, पद्मा और चन्दन वहीं रहे। चन्दन तो पहले ही यहाँ अपना विवाह पसन्द नहीं करता था। उसका ध्यान निर्मला की ओर लगा था। उसने ही पहले अपने पिता को सम्बोधित कर कहा, "बाबा! यह ठीक ही हुआ है।"

"इसीसे तो कहता हूँ कि तुम लोगों में ठकुराई नहीं रही। तुम सब हिजड़े होते जा रहे हो।"

"नहीं बाबा! यह बात नहीं। मैंने उस लड़की को पहले ही रिजेक्ट कर दिया था और अब उसका चित्र देखा तो अपने मन की बात कहता हूँ। मेरा विवाह उससे न होकर अच्छा ही हुआ।"

"तुम मूर्ख हो! देखो, मैं राजरानी के बच्चों को दाने-दाने के लिए मोहताज कर दूँगा। साथ ही यह विवाह भी नहीं होगा!"

"क्यों नहीं होगा?" बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए पद्मा ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ज्योंही महोनावालों को पता चलेगा कि लड़के के पास खाने के लिए एक दाना भी नहीं है तो वे अपने-आप सगाई तोड़ देंगे।"

"खाने-पीने को हो चाहे न हो, पर ज़मींदारी और परिवार की सम्पत्ति में उसका आधा भाग है।"

"यह नहीं होगा। मैं प्रिवि कउँसिल तक लड़ूँगा। और अगर वहाँ भी हार गया तो इन सबकी हत्या कर आत्मघात कर लूँगा।"

"चन्दन, जाओ। बाबा के लिए ठंडा पानी ले आओ। इनको व्यर्थ में क्रोध आ रहा है।"

"नहीं, मैं क्रोध में नहीं हूँ। मैं तो इसको ईश्वर की ओर से प्रस्तुत किया अवसर मानता हूँ। मैं इसीकी तो प्रतीक्षा कर रहा था। जाओ, आज मैं भोजन नहीं करूँगा।"

"मैं तो," चन्दनसिंह ने कहा, "इस झगड़े में ताई का पक्ष लूँगा।"

"तुमको पूछता कौन है? तुम अभी नाबालिग हो।"

"पर बाबा, विवाह तो मुझ नाबालिग का ही करनेवाले थे! मैं करता ही नहीं, घर से भाग जाता, फिर क्या करते?"

"तुमको जायदाद से बेदखल कर देता।"

"मैं चोरी कर अथवा डाका डालकर ले जाता। मुझको विदित है कि क्या है और कहाँ है।"

"तो तुम बाप से विद्रोह करते?"

"पर बाबा, विद्रोह तो आप कर रहे हैं।"

"किससे?"

"घर-भर से। माँ भी तो यही कह रही हैं!"

"तुम सब पागल हो गए हो!"

पद्मा ने पति की आँखों में खून देखा तो चन्दन की बाँह पकड़कर उठाया और बैठक से बाहर ले गई। जब माँ-पुत्र बैठक से बाहर जा रहे थे तो दिलजीतसिंह ने कह दिया, "याद रखो, कर्म वगैरह से मिलने के लिए गए तो टाँगें चीर दूँगा!"

चन्दन को भी क्रोध चढ़ आया था। परन्तु माँ ने उसको कुछ कहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से रोकने के लिए उसके मुख पर हाथ रखकर कहा, ''चन्दन! मेरी ओर देखो और चुप हो जाओ।''

चन्दन अपने कमरे में गया तो भीतर से कुंडा चढ़ाकर खाट पर पड़ा रहा। भोजन तो बना, पर किसीने खाया नहीं।

राजरानी अपने घर की बैठक में गई तो चटाई पर बैठकर विचार करने लगी कि क्या होगा? उसके मन में भी यह बात उत्पन्न हुई कि जब लक्ष्मणसिंह और महोनावालों को पता चलेगा कि वे तो भिखमंगे हैं और उनको उनके पूर्वजों का कुछ भी नहीं मिलेगा और इसके लिए मुकद्दमा करना होगा, साथ ही वह मुकद्दमा लड़ेगी अथवा नहीं, एक पृथक् बात थी—इसपर सगाई टूट जाएगी। इस कारण उसने जितने रुपये-मिठाई इत्यादि आए थे वहाँ रख दिए। उसने लड़कों को भी कहा, ''रुपये अभी रख दो।''

''क्यों?'' जवाहरसिंह ने विद्रोह प्रकट करते हुए कहा।

''यह सगाई अभी पक्की नहीं है।'' राजरानी ने युक्ति से कहा।

''माँ! हमारी तरफ से तो पक्की है।'' कर्मजीत ने कह दिया।

''एक ओर से ये बातें पक्की नहीं हो सकतीं। दो परिवारों का सम्बन्ध है। दोनों की रुचि से ही यह होगा, नहीं तो नहीं होगा।''

''माँ, तुम विवाह की बात कर रही हो और मैं सगाई की बात कर रहा हूँ। सगाई हो गई, तिलक चढ़ गया, मैं इसे पोंछूँगा नहीं। वे वचन भंग करना चाहते हैं तो करें।''

माँ इस युक्ति का उत्तर नहीं दे सकी। माँ को चुप देख जवाहरसिंह ने ताली बजा दी और बोल उठा, ''माँ हार गई, माँ हार गई!''

कर्मजीत ने घूरकर जवाहर की ओर देखा तो वह चुप हो गया। इसपर माँ ने कहा, ''कर्म! इसपर भी मैं कहती हूँ कि ईमानदारी यही है कि उनको यहाँ की सत्य स्थिति का ज्ञान करा दो जिससे वे धोखे में न रहें।''

''करा दूँगा, माँ! तुम निश्चिन्त रहो। सब बात सविस्तार बता दूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मिठाई तो हम अभी खाएँगे और रुपये नहीं लौटाएँगे।" जवाहर ने कह दिया।

माँ ने लड़कों को हठ करते देख पूछ लिया, "कौन-कौन मिठाई खाएगा?"

"सब खाएँगे और माँ भी खाएगी।" कर्मजीत ने कह दिया।

"जवाहर! जाओ, पाँच प्लेटें ले आओ।"

जवाहर बहुत प्रसन्न था। वह भागा-भागा रसोईघर में गया और प्लेटें उठा लाया। खाना इस घर में भी नहीं बना, परन्तु इस कारण कि मिठाई से पेट भर गया था।

: १० :

मिठाई खाते हुए राजरानी ने लड़के से कहा, "कर्म! अब पेट भरने के लिए उपाय करना चाहिए।"

"माँ, उपाय करूँगा। क्षत्रिय का बेटा होकर भीख नहीं मागूँगा।"

"यह घर छोड़ना होगा।"

"यह कल ही कर दूँगा। गाँव में एक मकान है। वह मोहन दादा के साथ वाला मकान है।"

"ठीक है, और यह सब स्थिति कल पंडित जी के द्वारा बाबू साहब को बतानी होगी।"

"पढ़ने जाऊँगा तो बता दूँगा।"

"नहीं, कर्म! बहुत सुबह जाकर बताना होगा। पूजापाठ से निवृत्त होते ही उनको यहाँ की पूर्ण और सत्य सूचना देनी होगी।"

"बहुत अच्छा माँ! परन्तु मैं कहता हूँ कि मैं अब बाबू जी की लड़की को अपनी पत्नी मानता हूँ। यदि उन्होंने थूके को चाटना चाहा तो लड़की का हरण करूँगा।"

"तब तो सरकार द्वारा दंडनीय माने जाओगे।"

"परन्तु परमात्मा के घर में मैं निर्दोष रहूँगा।"

माँ यद्यपि डरी हुई थी, परन्तु बच्चे सब प्रसन्न थे। सबसे अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्नता जवाहर को थी। धर्मजीत ने उससे पूछ लिया, "तुम इतना नाच क्यों रहे हो? विवाह तो दादा का हो रहा है?"

"धर्म दादा!" जवाहर का सतर्क उत्तर था, "तुम सबका विवाह हो चुकेगा, तभी तो मेरा विवाह होगा! इससे मेरे विवाह के मार्ग की एक रुकावट कम हुई है। मैं इसलिए खुश हूँ।"

सब हँसने लगे।

राजरानी अपने पूजा के कमरे में जाकर भगवान की मूर्ति के सम्मुख बैठ, माथा नवा, आशीर्वाद माँगने लगी थी। जब वह भगवान के चरणों में गई तो उसके चित्त में साहस और शान्ति का प्रादुर्भाव होने लगा। उसके चित्त में प्रसन्नता व्याप्त होने लगी। वह समाधिस्थ हो गई और समय का ज्ञान विस्मरण कर बैठी। जब माथा नवाए-नवाए थक गई और सर्दी से पूर्ण शरीर ठंडा होने लगा तो उसने सिर ऊपर उठा लिया। अब उसको काला भविष्य भी उज्ज्वल प्रतीत होने लगा था। वह उत्साह से भरी उठी और सोने के लिए अपने कमरे में जाने के लिए घूमी तो सामने नाइट-सूट में चन्दन को देख विस्मय करने लगी।

"चन्दन! यहाँ खड़े क्या कर रहे थे?"

"ताई की अपने भगवान से बातें समाप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

राजरानी मुस्कराई और पूछने लगी, "कब से खड़े हो?"

"एक घंटे से अधिक हो गया है। पहले ताई के सोने के कमरे में गया। वहाँ खाट सूनी देख और यहाँ प्रकाश देख इधर चला आया। ताई भगवान के चरणों में सिर नवाए बैठी थीं। मैंने समझा कि उनकी प्रार्थना समाप्त हो चुकी है और अभी उठनेवाली हैं, परन्तु उठी ही नहीं। मैं एक बार तो समझा कि ताई सो गई हैं। झुककर सोई हुई ताई को उठाने लगा तो देखा कि आँखें तो मूँदी हुई हैं पर होंठ फड़फड़ा रहे हैं। इससे फिर प्रतीक्षा करने लगा।"

चन्दन सर्दी से ठिठुर रहा था। राजरानी ने कहा, "अच्छा, जल्दी बताओ, तुम तो सर्दी में सिकुड़ रहे हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर ताई, तुमने भी तो कोई गरम कपड़ा नहीं पहना।"

"सरदी तो मुझको भी लगने लगी है।"

"ताई! मैं तो कर्म दादा की सगाई की मिठाई खाने आया हूँ।"

"कितने बजे हैं अब?"

चन्दन ने कलाई पर बँधी घड़ी देखी और बोला, "रात के एक बज रहे हैं।"

"और इस समय मिठाई?"

"पहले मैं आ नहीं सका। प्रातः भी आ न सकता। बाबा मना कर रहे हैं।"

"तो बाबा का कहना क्यों नहीं मानते?"

"बाबा की बात गलत समझ, मानने से इन्कार कर रहा हूँ। ताई, जल्दी करो! बहुत देर से मुख में लार टपक रही है। मेरा मन कहता है कि दादा की सगाई की मिठाई खाऊँगा तो मेरा भी विवाह हो जाएगा और फिर दादा और ताई का मुख मीठा कराऊँगा।"

"कहाँ होगा?"

"कहीं तो होगा। मेरी बहू भी कहीं तो संसार में होगी। वह कम-से-कम चौदह-पन्द्रह वर्ष की ज़रूर हो गई होगी।"

राजरानी हँस पड़ी और चन्दन को रसोईघर में ले गई। वहाँ दीया जलाया और प्रकाश होने पर लटकन से मिठाई की टोकनी उतारकर प्लेट में पाँच टुकड़ी लगा चन्दन के हाथ में दे दी।

चन्दन ने खड़े-खड़े ही खानी आरम्भ कर दी। राजरानी ने पूछ लिया, "दूध पियोगे?"

"ताई, मैं दूध पी चुका हूँ। अब तो जल ही पीऊँगा।"

चन्दन ने मिठाई खाई और फिर ताई के चरण-स्पर्श कर बोला, "ताई, मेरी पीठ पर हाथ धरकर आशीर्वाद दो!"

"क्या आशीर्वाद दूँ?"

"यही कि मनचाही बहू पाऊँ।"

ताई हँस पड़ी और बोली, "चन्दन के घर में चाँद-समान गोरी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरी-समान सुन्दर बहू आवे।''

''और मनचाही नहीं कहा?''

''देखो चन्दन! मन को परमात्मा के साथ सुस्वर कर लो, फिर उसकी इच्छा और तुम्हारी इच्छा एक हो जावेगी।''

''यह काम ताई, तुम कर दो। मेरे कमरे में भगवान हैं नहीं।''

''भगवान तो सब स्थान पर हैं। तो भी मैं तुम्हारे लिए उनसे प्रार्थना करूँगी।''

इस आश्वासन से प्रसन्न हो चन्दन अपने कमरे की ओर चला गया।

अगले दिन कर्मजीत पूजापाठ से निवृत्त हो माँ से स्वीकृति ले पंडित तुलसीसहाय के घर की ओर चल पड़ा। पंडित जी पूजा से अभी उठे ही थे और पंडिताइन उनके लिए दूध का गिलास लिये खड़ी थी कि कर्मजीत वहाँ जा पहुँचा। उसने गुरु जी के चरण-स्पर्श किए और फिर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

पंडित जी ने कहा, ''बैठो!....बोलो, किसलिए आए हो?''

''माँ ने अपने घर की स्थिति बताने के लिए भेजा है।''

''तुम्हारे चाचा नाराज़ हैं न?''

''हाँ गुरु जी!'' फिर उसने रात की पूरी बात सविस्तार वर्णन कर दी। अपने चाचा की बात, माँ की बात और फिर अपने मन की बात सब बता दी। अन्त में कहा, ''मैं आया इसलिए हूँ कि आपको सूचित करूँ कि हम बहुत निर्धन हो गए हैं। इस कारण आप बाबू साहब से पूर्ण घटना का वर्णन कर दें। मैं तो अपने माथे पर आपके द्वारा किया गया तिलक पोंछूँगा नहीं। हाँ, यदि वे चाहें तो लड़की का शकुन किसी अन्य स्थान पर दे सकते हैं।''

''और तुम सम्पत्ति के लिए मुकद्दमा नहीं करोगे?''

''इसका सगाई और विवाह के साथ संबंध नहीं होना चाहिए। यह बात तो बाद में अवसर और सामर्थ्य के अनुसार निश्चय करूँगा। पहले तो बाबू साहब को पता हो जाना चाहिए कि इस समय हम अति निर्धन हैं।''

पंडित जी ने कहा, ''अच्छा, अब तुम जाओ। सायंकाल तक मैं आऊँगा और तुम्हारी माता जी से पूर्ण बात कर जाऊँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समय कर्मजीत महोना गया हुआ था, मोहनसिंह ताई से मिलने के लिए आया। यह बात विस्मयजनक थी। चंचल से विवाद के उपरान्त वह कभी भी उससे मिलने के लिए नहीं आया था।

वह आया तो राजरानी ने उसे भी बैठकघर में बैठाकर तश्तरी में मिठाई रखकर खाने को दी। मोहनसिंह खाने लगा। राजरानी उसके लिए दूध लाई तो मोहनसिंह ने कह दिया, "ताई! मैं दूध घर से पीकर आया हूँ। इस समय मिठाई के साथ केवल जल लूँगा।"

राजरानी विचार कर रही थी कि यदि यह अपने पिता का किसी प्रकार का सन्देश लेकर आता तो मिठाई नहीं खाता। इससे वह कुछ आश्वस्त हो उसके सामने बैठ प्रश्न-भरी दृष्टि से देखती रही। मोहनसिंह ने पूछा, "कर्म कहाँ है?"

"पंडित जी को सूचना देने के लिए गया है कि हमारे घर में इस सगाई से विवाद उत्पन्न हो गया है। फलस्वरूप हम निर्धन हो गए हैं।"

"वह यह बताने के लिए वहाँ क्यों गया है?"

"इसलिए कि पंडित जी यहाँ की स्थिति बाबू लक्ष्मणसिंह को बता दें और यदि वे चाहें तो सगाई टूट भी सकती है।"

"पर वह ऐसा बताने के लिए गया ही क्यों?"

"बेटा मोहन! वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो जानी चाहिए, जिससे वे यह न समझें कि हमने उनको धोखे में रखा है।"

"परन्तु मैं समझता हूँ कि यह वास्तविक स्थिति नहीं है।"

"तो क्या है वास्तविक स्थिति?"

"असली स्थिति यह है कि हम लखपति हैं। हमारी ज़मीदारी की वार्षिक आय एक लाख रुपया है, जिसमें से नकद हमको चालीस हज़ार के लगभग बचता है।"

"परन्तु मोहन! तुम्हारे पिता तो हमको एक भी पैसा दिए बिना घर से निकाल देना चाहते हैं।"

"यह तो है। वे चाहते हैं, पर तुम तो नहीं चाहतीं। देखो ताई! कर्म, धर्म और विश्व तीन भाई हैं और दो भाई हम हैं, मैं और चन्दन। मैं मदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और जवाहर को नहीं गिनता। हम पाँच हैं और पिता जी अकेले हैं। हम आज ही सब सम्पत्ति निकालकर बाँट लेते हैं। ताई! कोई किसी को निकाल नहीं सकता। केवल अपने न निकलने का निश्चय होना चाहिए।''

''तो तुम्हारे कहने का अभिप्राय यह है कि हम तुम्हारे पिता के घर पर डाका डालें।''

''यह डाका कैसे हुआ? हमारा है, हम ले रहे हैं।''

''अपने पिता से कहो कि वे अपने-आप दे दें।''

''वे नहीं देंगे।''

''मैं न तो उनसे देने के लिए खुशामद करूँगी और न ही उनके तोशाखाने पर डाका डालूँगी।''

''तुम कुछ नहीं करो, ताई! तुम कर्म इत्यादि को मेरे साथ खड़ा कर दो। शेष मैं स्वयं कर लूँगा।''

''नहीं मोहन! यह नहीं होगा। तुम और तुम्हारे पिता को अब हमें पृथक् कर देना चाहिए। ज़मींदारी बँट जानी चाहिए।''

मोहन ने असन्तोष में कंधे हिलाए और उठकर चल दिया। दिन के ग्यारह बजे के लगभग कर्मजीत महोना से लौटा और उसने गुरु जी का सन्देश सुना दिया। राजरानी ने कहा, ''अच्छी बात है। हमको उनकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। और देखो, कर्म! मोहन के झाँसे में मत आना। वह किसी प्रकार का अधर्माचरण करने के लिए कह रहा है। हमको परिवार से प्रेमयुक्त और युक्ति-युक्त व्यवहार रखना होगा।''

: ११ :

सायंकाल पंडित तुलसीसहाय और लक्ष्मणसिंह, दोनों इकट्ठे मोटरगाड़ी में वहाँ आ गए। दोनों बाहर की बैठक में बैठ गए। यह ज़मींदारी का कार्यालय भी था। मोहन वहाँ बैठा हिसाब-किताब देख रहा था। उसने बाबू लक्ष्मणसिंह को पंडित जी के साथ हवेली के बाहर मोटरगाड़ी से उतरते देखा तो वह काम छोड़कर बाहर चला आया। नमस्कार कर पूछने लगा, ''किससे मिलने के लिए आए हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारे पिता जी से और फिर तुम्हारी ताई जी से।"

"तो आइए!"

वह उनको कार्यालय में ले गया और उनको कुर्सी पर बैठाकर बोला, "चाय पीजिएगा अथवा दूध?"

"भाई! कुछ नहीं।" पंडित जी ने कहा, "अपने पिता जी को बुला दो।"

उस दिन दिलजीतसिंह को उसकी पत्नी समझाती रही थी। परन्तु वह विचार कर रहा था कि औरतें धन अर्जन करना तो जानती नहीं। उन्होंने तो भोग करना ही सीखा है, अतः औरतों की बात मानने से तो कभी धन संचय नहीं हो सकता।

परन्तु सबसे प्रबल विरोध हुआ चन्दन की ओर से। वह मध्याह्न के भोजन के समय घर आया तो पिता ने पूछ लिया, "चन्दन! किधर घूमते रहे हो?"

"मैं गाँव में अपने बचपन के साथियों से मिलने के लिए गया था।"

"क्या लाभ हुआ इससे?"

"मैं किसी प्रकार का लाभ उठाने के लिए मिलने नहीं गया था।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि कुछ पैदा करना सीखो।"

"वह तो मैं कॉलेज में सीखता हूँ। आजकल तो छुट्टी पर हूँ।"

"कर्मजीत से भी मिले हो?"

"नहीं।"

"वह बहुत प्रातःकाल कहीं गया था।"

"सत्य? तो ज़रूर पंडित तुलसीसहाय के घर गया होगा।"

"तनिक जाकर पता करो कि वह कहाँ और किस काम से गया था।"

"पर मैं किसलिए जाऊँ? कल आप ही तो कह रहे थे कि यदि मैं वहाँ गया तो आप मेरी टाँगें चीर लोगे।"

"पर अब मैं ही तो जाने के लिए कह रहा हूँ!"

"और मैं पूछ रहा हूँ कि क्या लाभ होगा वहाँ जाने से? आप अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक तो कह रहे थे कि पैदा करना सीखो।''

''तुम्हारे वहाँ जाकर ठीक-ठीक बात करने से लाभ ही होगा।''

''क्या लाभ होगा?''

''तुम्हारा लक्ष्मणसिंह की लड़की से विवाह हो जाएगा।''

''पर मैं तो उससे विवाह करना ही नहीं चाहता।''

''यह तो तुम पहले भी कह चुके हो। पर मैं कहता हूँ कि उससे विवाह कर लो। दस-बीस हज़ार मिल जाएगा और फिर अपनी मनपसन्द लड़की से भी विवाह कर लेना।''

''पर उसका तिलक तो कर्मजीत को चढ़ चुका है। अब मैं उसकी जूठन नहीं लूँगा।''

''बस, तिलक लगाने से ही वह जूठन हो गई?''

''हाँ।''

''तुम पागल हो! विवाह इस प्रकार नहीं होता।''

इसपर भी चन्दनसिंह कर्मजीतसिंह से मिलने के लिए गया, पर अपने पिता से चोरी-चोरी। कर्मजीत ने अपने पंडित जी के घर जाने की बात बताई। इसपर चन्दनसिंह ने भी उसको कहा, ''अपनी निर्धनता की सूचना देना ठीक नहीं।''

''क्यों?''

''एक तो तुम निर्धन हो नहीं। दूसरे, अपनी दुर्बलता स्वयं ही प्रकट करना ठीक नहीं।''

''देखो चन्दन भैया! चाचा जी ने कहा है कि वे हमको घर से पृथक् कर देंगे और हमको एक पैसा भी नहीं देंगे।''

''फिर भी आधी ज़मींदारी तो तुम्हारी है। वह तो तुम कचहरी में दावा करके ले सकते हो।''

''पहले तो दावा करना सुगम नहीं। हमारे पास इसके लिए धन नहीं। इसके अतिरिक्त भी माँ चाचा पर दावा करना नहीं चाहतीं।''

''क्यों?''

''वे कचहरी नहीं जाएँगी। यदि चाचा जी को हम पर दया आती हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो आए, नहीं तो हम झगड़ा करके नहीं लेंगे।''

''तुम मूर्ख हो! मैं....'' एकाएक चन्दनसिंह बात करता-करता रुक गया। उसका अपने पिता का कहना कि 'वह पागल है' स्मरण हो आया।

कर्मजीत उसे चुप देख पूछने लगा, '' हाँ, हाँ, कहो चन्दन! तुम.... क्या तुम?''

चन्दन खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, ''देखो, मैंने पिता जी से कहा था कि मैं लक्ष्मणसिंह की लड़की से विवाह नहीं करूँगा। तो वे मुझको कहते थे कि मैं पागल हूँ। और मैंने तुमको कहा है कि तुम अपने हक का दावा करो और तुम कहते हो कि तुम नहीं करोगे। मैंने कहा कि तुम मूर्ख हो। मेरी हँसी इसीलिए निकली है कि बाबा मुझको पागल समझते हैं और मैं तुमको मूर्ख समझता हूँ। प्रश्न यह है कि कौन क्या है?''

कर्मजीत हँस पड़ा। बोला, ''न तुम पागल, न हम मूर्ख हैं। दोनों का अपना-अपना दृष्टिकोण है।''

चन्दन इस मीमांसा को समझ नहीं सका। उसने बात बदल दी, ''तुमने चंचल भाभी को देखा है?''

''हाँ, जब वह कुँवारी थी।''

''तुम्हें उससे मिलना चाहिए।''

''क्या होगा मिलने से?''

''वह बहुत ही समझदार है। साथ ही मैं चाहता हूँ कि मोहन दादा से मिलकर बाबा को विवश करना चाहिए कि ज़मींदारी का बँटवारा कर दें।''

''हम चाचा जी को विवश नहीं करेंगे। वे स्वेच्छा से देंगे तो हम ले लेंगे। नहीं देंगे तो भगवान दिलाएगा।''

चन्दन हँस पड़ा और कहने लगा, ''वही भगवान जो ताई के पूजागृह में हैं?''

''नहीं। वह तो केवल प्रतीक है। भगवान तो सबके हृदय में बसा हुआ है। माँ कहती थी कि आज से वे तुम्हारे लिए भी प्रार्थना किया करेंगी कि तुमको एक अति सुन्दर बहू मिले।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन को रात ताई के साथ हुई बात स्मरण हो आई। उसने कहा, ''मैं तो तुमसे और धर्म भैया से छोटा हूँ न? इस कारण पहले आप उनके लिए भगवान को राज़ी कर लें, फिर मेरी बारी भी आ जाएगी।''

''पर वे तो कहती थीं कि तुमने कहा है कि तुम्हारे लिए परमात्मा से प्रार्थना करें। वे मेरे लिए करती थीं और मेरी सगाई बिना यत्न के हो गई है। माँ कह रही है कि यह भगवान की कृपा से ही हुआ है।''

''पर तुम तो सगाई तोड़ने की बात कर आए हो न?''

''नहीं चन्दन! मैंने यह कहा है कि उनके भेजे केसर से मेरे तिलक चढ़ चुका है और मैं उसको अपनी इच्छा से नहीं पोंछूँगा। शेष उनके विचार करने की बात है।''

''मैं समझता हूँ कि तुम्हारी सगाई टूट जाएगी। कौन तुम्हारे जैसे फक्कड़ और मूर्ख को लड़की देगा! एक ताल्लुकेदार की लड़की भला तुम्हारे घर में आकर भाँग भूनेगी?''

''माँ कहती है कि भगवान सब ठीक कर देगा।''

''और मेरा विवाह भी जहाँ मैं चाहता हूँ, कर देगा?''

''यह तो मैंने पूछा नहीं। तुम स्वयं माँ से पूछ सकते हो।''

उस दिन तो चन्दन और ताई की भेंट नहीं हुई। उस समय वह पद्मा से मिलने के लिए गई हुई थी।

जब कर्मजीत ने यह बताया कि उसके गुरु जी उसके चाचा से तथा उससे मिलने के लिए आनेवाले हैं तो वह पद्मा से मिलने चली गई। वह चाहती थी कि सगाई रहती है अथवा नहीं रहती, वह अब इस घर में नहीं रहेगी और पद्मा से कहे कि उनके खाने-पीने और दूसरे खर्चों के लिए कुछ रुपया मासिक बाँध दिया जाए।

पद्मा अपने पति से बातचीत कर निराश बैठी थी कि राजरानी आ गई। वह उसे देख प्रश्न-भरी दृष्टि से उसका मुख देखने लगी। बात राजरानी ने शुरू की। उसने कहा, ''बहिन, मुझे लग रहा है कि चन्दन के पिता हमारा इस घर में रहना पसन्द नहीं करते। इस कारण मैं तुमसे बात करने आई हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले यह बताओ कि कर्मजीत आज बहुत सुबह महोना जाता देखा गया था। वह वहाँ क्या बात कर आया है?"

राजरानी ने पंडित जी से हुई सब बात बता दी, "पंडित जी ने कहा है कि बाबू साहब से राय कर वे सायंकाल उनका विचार बता जाएँगे।"

"इससे तो यह पता चलता है कि सगाई टूट जाएगी।"

"जो भी हो। मैं अपनी स्थिति छिपाकर रखना नहीं चाहती थी, सो उनको बता दिया है। सगाई रहे अथवा नहीं, वर्तमान परिस्थिति में मैं इस प्रकार इस घर में नहीं रह सकती। या तो हवेली में दीवार डलवाकर इसके दो घर बना दिए जाएँ और हम अपने घर में आने-जाने का मार्ग उधर से बना लें, अन्यथा किसी दूसरे घर में चले जाएँ।"

पद्मा ने कहा, "मैं समझती हूँ कि दूसरी बात ठीक रहेगी। हवेली के दो भाग करने ठीक नहीं।"

"मैं कल ही घर छोड़ देने का विचार कर रही हूँ। परन्तु खाने-पहरने के लिए हमारा कुछ खर्चा बाँध दिया जाए तो ठीक रहेगा।"

"पर बहिन जी! खर्चा देनेवाली मैं तो नहीं हूँ। कहो तो आपके देवर जी को बुला लूँ।"

"हाँ, बुला लो।"

पद्मा ने नौकरानी को बाहर बैठक में भेज अपने पति को बुला लिया। दिलजीतसिंह अपनी भाभी को वहाँ बैठा देख पूछने लगा, "अब यहाँ किसलिए आई हो?"

उत्तर पद्मा ने दिया, "बहिन जी इस कारण आई हैं कि वे अपना पृथक् घर बनाना चाहती हैं। इन्होंने गाँव में एक मकान ले लिया है। कल वहाँ चली जाएँगी। ये चाहती हैं कि इनके लिए कुछ माहवारी खर्चा बाँध दिया जाए।"

"खर्चा किसलिए दिया जाए?"

"आपके भाई की ये विधवा हैं और इनके चार लड़के हैं। सबके खाने-पहरने के लिए चाहिए।"

"देखो पद्मा! यही तो पूछ रहा हूँ कि लड़के सज्ञान हो गए हैं। वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमाएँ और खाएँ। आखिर मैं किसलिए उनका बोझा उठाऊँ?''

''ये कहती हैं कि जमींदारी तो कर्म के पिता की भी थी?''

''जब तक जीवित रहे उनकी रही होगी। अब तो वह मेरे अधीन है। मैं उसका मालिक हूँ। इनको एक पैसा भी उसमें से नहीं मिलेगा। नहीं-नहीं, एक इंच-भर भूमि इन्हें नहीं मिलेगी।''

''परमात्मा को सर्वव्यापक समझकर,'' राजरानी ने अन्तिम प्रयत्न करते हुए कहा, ''जो कुछ भी हमारा समझते हैं, हमको दे दीजिए और हम उतने पर ही संतोष कर लेंगे।''

''देखो कर्म की माँ! मैंने तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का पालन-पोषण किया है। यह क्या कम है? यह ज़मींदारी है, यह अधिकारी के पास स्वेच्छा से जाती है। तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। कल यहाँ से चली जाओ, नहीं तो धक्के दिलवाकर निकलवा दूँगा!''

राजरानी ने और बात करना व्यर्थ समझा और वह उठकर अपने घर की ओर चल पड़ी।

दिलजीतसिंह ने अपनी पत्नी को कहा, ''तुमने इसको क्यों बुला लिया था?''

''मैंने नहीं बुलाया जी! वे अपने-आप आई थीं और आपसे गुज़ारे के लिए माँगती थीं।''

''इनको भूखों मरने दो! घर के पुरखा से बगावत करने का मज़ा आ जाएगा!''

''देख लीजिए! यदि सत्य ही भूखे मर गए तो घोर पाप लगेगा!''

''ये सब मूर्ख लोगों की बातें हैं। पाप-पुण्य कुछ नहीं। जो मूर्ख हैं वे मारे जाते हैं। जो बुद्धिमान हैं वे फूलते-फलते हैं। तुम्हें पूछना था कि वह मुकद्दमा करेगी क्या?''

इस समय चन्दन वहाँ आ पहुँचा। आते ही उसने कहा, ''बाबा! कर्म दादा से मिल आया हूँ।''

''हाँ, तो वह क्या कहता है?''

''कहता है कि वह अपनी निर्धनता की कहानी अपने गुरु जी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बता आया है और गुरु जी सायंकाल तक बाबू लक्ष्मणसिंह का उत्तर बताने आएँगे।''

दिलजीतसिंह हँस पड़ा; बोला, ''यह ठीक हुआ है। कर्म की सगाई टूट जाएगी। कहो तो तुम्हारी माँ उनसे मिलकर पुनः तुम्हारी बातचीत चलाएँ?''

''नहीं बाबा! मैंने कह दिया है कि मैं उससे विवाह नहीं करूँगा।''

''तुम ताई के पास घुसे रहते हो, इस कारण तुम भी उसकी ही भाँति मूर्ख हो गए हो।''

चन्दन उठ खड़ा हुआ। पिता ने पूछ लिया, ''कहाँ जा रहे हो?''

''मोहन दादा के साथ उसके घर। उनकी नई बहू ने चाय पर बुलाया है।''

''ओह! किन्तु उसका निमन्त्रण तुमको दिया किसने? मोहन ने?''

''नहीं बाबा! आज सुबह मैं भाभी से मिलने के लिए गया था। वह बहुत अच्छी तरह मिली है और उसीने निमंत्रण दिया है।''

दिलजीतसिंह इसका अर्थ नहीं समझ सका। माँ ने पुनः अपना विचार बताते हुए कहा, ''इस घर में वह तभी आ सकती है जब नलिनी को मोहन राजी कर इस घर में ले आए।''

इसी समय मोहनसिंह वहाँ आ गया। उसने कहा, ''बाबा! बाबू लक्ष्मणसिंह और पंडित तुलसीसहाय आपसे मिलने के लिए आए हैं।''

''कहाँ बैठाया है उनको?''

''कार्यालय में।''

''वहाँ नहीं मोहन! घर की भीतरी बैठक में ले आओ। मैं अलहदा में उनसे बात करूँगा।''

मोहन उनको भीतर की बैठक में लाने के लिए चला गया।

: १२ :

राजरानी जब पद्मा और दिलजीतसिंह से निराश होकर लौटी तो कर्मजीत इत्यादि प्रतीक्षा कर रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कर आई हो, माँ?" कर्मजीत ने पूछा।

"कुछ नहीं। यह तो ऐसे था जैसे भगवान कृष्ण धृतराष्ट्र को युद्ध होने से पहले समझाने के लिए गए थे। जाने से पूर्व ही मैं जानती थी कि तुम्हारे चाचा मानेंगे नहीं। परन्तु एक बार उनको परिवार का पुरखा माना था और उनको सद्बुद्धि देने के विचार से गई थी। मैंने भी कौरव-साम्राज्य में से पाँच गाँव की भाँति गुजारे-मात्र के लिए माँगा था और धृतराष्ट्र की भाँति इतना मात्र देने से भी उन्होंने इन्कार कर दिया है।"

"माँ!" जवाहरसिंह ने कहा, "मोहन दादा की बात क्यों न मानी जाए? माँ! हो जाने दो महाभारत!"

"जवाहर! तुम क्या जानते हो मोहन की बात के विषय में?" राजरानी ने विस्मय से पूछा।

"माँ, मैं बैठक के बाहर खड़ा सब सुन रहा था। दादा ने कहा था कि मदन और जवाहर को वह गिनता नहीं, पर तीन तो कर्म दादा, धर्म और विश्वजीत हैं और वह स्वयं और चन्दन दादा मिलाकर हम पाँच हैं और चाचा अकेले। हम उसके हाथ-पाँव बाँधकर एक तरफ बैठा देंगे और तोशाखाने का धन बाँट लेंगे।"

"जवाहर!" माँ ने डाँट के भाव में कहा, "तुम बिगड़ते जाते हो, जो अपने से बड़ों की बातों को छिप-छिपकर देखते और सुनते हो। तुमको मैं इसका दण्ड दूँगी।"

"क्या दण्ड दोगी, माँ?"

"जब भी घर की कोई बात होने लगेगी, तुमको पृथक् कमरे में कैद कर दिया करूँगी।"

"पर माँ! मैंने तो वही कुछ कहा है जो मोहन दादा कह गए थे। उसको तो तुमने दण्ड देने की बात कही नहीं थी?"

"पर मैंने उसकी बात मानी तो नहीं थी! और तुमको तो छिपकली की भाँति छिप-छिपकर सुनने का दण्ड दूँगी।"

"अच्छा माँ! एक बात करो।"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे भी कर्म दादा के साथ पंडित जी से पढ़ने भेज दिया करो।"

"तुम्हारे तो सिर में दर्द होने लगता है पढ़ने की बात सुनकर। तुम क्या करोगे वहाँ?"

"चन्दन दादा कहते थे कि पढ़ाई छूत की बीमारी है। दूसरों को पढ़ता देखने से हो जाती है और फिर अपने-आप पढ़ना-लिखना आ जाता है।"

"तो तुम इस बीमारी को लोगे?"

"नहीं माँ! पहले मैं समझता था कि पंडित जी से पढ़ने से विवाह नहीं होता। अब समझ में आ गया है कि वहाँ पढ़ने से विवाह भी हो जाता है, सो मैं पंडित जी से पढ़ूँगा।"

"देखो जवाहर! हम तुम्हारे चाचा को मार-पीटकर या कैद कर धन नहीं लेंगे। यदि वे स्वेच्छा से देंगे तब ही लेंगे। लड़ाई करके नहीं।"

"यही तो मेरी समझ में नहीं आ रहा है।"

"तुम अभी छोटे हो। बड़े हो जाओगे तो समझ में आने लगेगा।"

कर्मजीत ने बात बदलते हुए कहा, "देखो माँ! मैं तो चाचा और बुजुर्गों की सम्पत्ति की बात छोड़कर अपने भुजबल से कुछ अर्जित करने की बात विचारने लगा हूँ।

"सगाई रहती है अथवा नहीं रहती, यह मेरे चिन्तन का विषय नहीं। मैंने विचार किया है कि मैं लखनऊ में जाकर किसी वैद्य से आयुर्वेद पढ़ूँगा। संस्कृत और शास्त्र पढ़ने से मैं उसको सीखने में समर्थ हूँ। इस कार्य में दो वर्ष लगेंगे और वहाँ चिकित्सा जमाने में दो-तीन वर्ष। इस प्रकार पाँच वर्ष में घड़ी की सुई दिन निकलना बताने लगेगी।"

"और माँ!" धर्मजीत कहने लगा, "मैं काशी जी जाकर अभी और पढ़ूँगा। पंडित जी तो कहते थे कि वहाँ विद्यार्थियों के लिए क्षेत्र हैं जहाँ उनको भोजन-वस्त्र मिलते हैं।"

"और तुम क्या करोगे विश्व?"

"मैं तो अभी पंडित जी से ही पढ़ूँगा। जब उन्होंने स्वीकृति दी तो काशी अथवा जहाँ वे कहेंगे, जाकर पढ़ूँगा। तब तक मैं किसी खेत में काम करने लगूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो बात मेरी और जवाहर की रह गई," राजरानी ने कहा, "हम भी कुछ काम-काज कर निर्वाह कर लेंगे।"

कर्मजीत इस प्रकार की बातों में समय व्यर्थ गँवाने के पक्ष में नहीं था। उसने कहा, "माँ! जो सामान यहाँ से नये मकान में ले जाना है, वह तुम बता दो। हम उनकी गठरियाँ बाँध देते हैं, जिससे कल प्रातःकाल यहाँ से चल दें।"

माँ ने कहा, "ले-जाने को बहुत-कुछ नहीं है। अपने पहनने के कपड़े समेट लो, बिस्तर बाँध लो और खाना पकाने तथा खाने के बर्तन, कुछ दिन के लिए अन्नादि।"

"यह सब तो रात को बाँधेंगे। अब तुम चारों भाई जाओ तो उस मकान की सफाई और पुताई कराओ तथा उसमें आग जलाकर उसे गर्म कर आओ। एक वर्ष से ऊपर हो गया है, जब से वह बन्द पड़ा है। बहोरी से मकान का भाड़ा भी निश्चित कर आओ।

"चलो, धर्म और विश्व!" कर्मजीत ने भाइयों को सम्बोधन कर कह दिया।

कर्म इत्यादि जब नये मकान में पहुँचे और सफाई करने लगे तो चंचल अपने घर से उनके पास आ गई।

"तो तुम आ गए हो?"

"हाँ, भाभी!" कर्मजीत ने मुस्कराते हुए कहा।

"यह ठीक ही कर रहे हो। मगर तुमने अपने भैया की बात क्यों नहीं मानी?"

"कौन-सी बात?" कर्मजीत ने विस्मय में पूछ लिया। वह समझ तो गया था कि बलपूर्वक सम्पत्ति छीनने की बात है, परन्तु वह जानता नहीं था कि चंचल इस बात को जानती है। इससे उसने पूछा था।

चंचल ने कहा, "मैंने ही उनको यह सुझाव दिया था। प्रातःकाल चन्दन आया था और कल रात वाली बात सुना चुका तो मैंने ही उनको यह बात बताई थी। चन्दन भैया ने मेरी बात का समर्थन ही किया था। परन्तु तुम्हारे बड़े भाई अभी मध्याह्न का भोजन करने आए थे। वे बता गए हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी माँ ने मेरी तजवीज़ को रद्द कर दिया है।''

''हाँ भाभी! हमारा पारिवारिक जीवन का एक भिन्न ढंग है। परिवार में हम एक-दूसरे को अपनी बात बलपूर्वक नहीं मनाते। सब स्वेच्छा से अपना-अपना व्यवहार निश्चय करने की स्वतन्त्रता रखते हैं।''

''तुम्हारे चाचा स्वेच्छा से मानेंगे नहीं।''

''तो हम अपना जीवन शून्य से आरम्भ कर रहे हैं। हमको परमात्मा पर अगाध विश्वास है। वह उन सबकी सहायता करता है जो अपनी सहायता अपने-आप करते हैं।''

इस समय तक सब दीवारें और फर्श झाड़ने लगे थे। चंचल ने बताया, ''चाहिए तो यह कि सफेदी-चूना प्रतापगढ़ से ले आओ। सब दीवारों पर सफेदी कर दो।''

''पर भाभी! हम तो कल प्रातःकाल इस मकान में आ जाना चाहते हैं। तब तक प्रतापगढ़ से सफेदी लाना और फिर दीवारों पर करना तथा उसका कल तक सूख जाना सम्भव नहीं है।''

''अच्छी बात है। सफेदी बाद में हो जाएगी। अभी तुमको मैं एक औषध दूँगी। उसे अंगारों के ऊपर रखकर उसका धुआँ सब कमरों में कर दोगे तो इसकी बंद हवा बाहर निकल जाएगी।''

''क्या औषध है वह?''

''एक है। उसको गुग्गल कहते हैं। उससे सब रोगों के कीटाणु मर जाते हैं और वह सुगन्धियुक्त भी होता है।''

अभी कर्मजीत आदि मकान की सफाई इत्यादि में ही लगे थे कि चंचल अपने घर में गई और उनकी सहायता के लिए घर का नौकर भेज दिया। मकान उतना बड़ा नहीं था जितना हवेली में उनको मिला हुआ था। इसपर भी मकान में प्रांगण था और पाँच कमरे थे। मकान में कुआँ भी था।

इनकी सफाई करने में ही दो घंटे से अधिक समय लग गया। चंचल का नौकर अपने घर से गगरा उठा लाया और कुएँ से जल निकाल सबने हाथ-पाँव धोए।

वे अभी हाथ-मुँह धो ही रहे थे कि चंचल एक बड़ी ट्रे में सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए चाय बनाकर ले आई।

"भाभी! इसकी आवश्यकता नहीं थी। अभी तो अल्पाहार का समय नहीं हुआ।"

"पर तुमने मेहनत की है न, इस कारण कुछ शक्तिवर्द्धक वस्तु खाने को चाहिए।"

चंचल का नौकर घर से मेज़ और कुछ कुर्सियाँ उठा लाया। सबने बैठकर चाय पी।

कर्मजीत विचार करता था कि भाभी कम-से-कम चाची से अच्छी है। चाय पीकर मकान को ताला लगा सब अपने घर पहुँच गए। वहाँ माँ ने छोटी-मोटी आवश्यकता की वस्तुएँ एकत्रित कर जवाहरसिंह से बँधवानी आरम्भ कर दी थीं।

"तो हो गई सफाई?"

"हाँ माँ! वहाँ चंचल भाभी आ गई थी। वह अपने घर के नौकर को ले आई थी। इस प्रकार काम शीघ्र ही समाप्त हो गया है। चंचल भाभी ने अपने घर से गगरा, लोटा, डोरी मँगवा कुएँ से पानी निकलवा दिया था और हम मुख-हाथ धो भाभी के हाथ की बनी चाय पी आए हैं।"

"माँ!" विश्व ने कह दिया, "साथ ही मठरी भी खाने को दी हैं।"

राजरानी मुस्कराती रही। जब सब कथा सुन चुकी तो उसने कह दिया, "वह इस घर में आ नहीं सकती और हम इस घर से निकाले जा रहे हैं। अतः वह हमारी इस मुसीबत का स्वागत कर रही है। इससे हम उसके साथी बन रहे हैं।"

"कुछ भी हो, माँ! उसका उद्देश्य कुछ भी हो, यह सभ्यता का व्यवहार चाची के व्यवहार की पृष्ठभूमि में अति सुखकर प्रतीत हुआ है।" कर्मजीत ने अपनी विवेचना करते हुए कहा।

"एक बात और हुई है। चंचल ने यह स्वीकार किया है कि मोहन दादा का प्रस्ताव उसका ही सुझाया हुआ था। हमारे उसे स्वीकार न करने पर उसे शोक अनुभव हुआ प्रतीत होता है।"

"मैं भी यही समझ रही थी। मोहन का अपने नये विवाह के उपरान्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज पहली बार आना और फिर अपने पिता से विद्रोह करने की बात कहना किसी शरारती मस्तिष्क की उपज ही प्रतीत हुई थी।

"देखो बेटा! यह संसार एक बहुत ही गन्दा स्थान है। हम अपने भाग्य से इसमें आए हैं तो हमको कमल के समान इस कीचड़ से अलिप्त होकर रहना पड़ेगा, नहीं तो इस गन्दगी में हम भी इसमें के कीड़ों के समान दूषित हो जाएँगे।

"हम क्षत्रिय-कुल में पैदा हुए हैं, परन्तु आपत्काल में हम दूसरे वर्णों का धर्म-पालन भी कर सकते हैं। मैंने यह बात तब ही विचार कर ली थी जब तुमको पंडित तुलसीसहाय जी के पास पढ़ने के लिए भेजा था।

"तुम मोहन से बड़े थे। तुम छठी श्रेणी में पढ़ते थे और मोहन पाँचवीं में। इसपर भी उसको लखनऊ पढ़ने के लिए भेजा गया था और तुमको नहीं। मैं तब ही समझ गई थी कि आपद् की घड़ी आनेवाली है। उस समय ही मैं यह समझ गई थी कि तुमको अपना पेट भरने के लिए ज़मींदारी से पृथक् कुछ करने की योग्यता उत्पन्न करनी चाहिए। उस समय मैं विचार करती थी कि क्या हम वैश्य-वृत्ति स्वीकार करें अथवा शूद्रवृत्ति? इन दोनों वर्णों के कार्य को मैंने पतन मान ब्राह्मण-वर्ण में प्रवेश करने का प्रयास आरम्भ कर दिया था।

"वैसे तो तुम्हारे चाचा से झगड़ा पहले भी हो सकता था, परन्तु मैं बात टालती जाती थी। मैं अभी भी दो वर्ष तक और ठहरना चाहती थी, पर भाग्य और काल को बाँधकर रखा नहीं जा सकता। अब वह घड़ी आ गई है और हमको क्षत्रिय से ब्राह्मण बनने का यत्न करना चाहिए। इसके लिए त्याग और तपस्या मुख्य साधन हैं। समझे हो कर्म?"

"हाँ, माँ!"

जवाहर बाहर से भागा-भागा आया और बोला, "माँ! पंडित जी और उनके साथ मोटर में एक और आदमी आए हैं।"

"तो वे आ गए हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अध्याय

: १ :

प्रातः कर्मजीत पंडित तुलसीसहाय को अपने चाचा के व्यवहार की बात बता आया था। साथ ही वह यह कह आया था कि सगाई का सम्बन्ध उनके चाचा पर मुकद्दमा करने अथवा न करने से जोड़ा नहीं जा सकता। मुकद्दमा तो अवसर और सामर्थ्य देखकर ही किया जा सकता है।

पंडित तुलसीसहाय दूध पी सीधा बाबू लक्ष्मणसिंह की हवेली में जा पहुँचा और बाबू साहब से मिलकर पूर्ण बात बता दी। लक्ष्मणसिंह हँस पड़ा। उसने कहा, ''मैं यही आशा करता था।''

''पर बाबू जी! मैं उसका केसर से तिलक कर आया हूँ।''

''आप ठीक कर आए हैं। देखिए पंडित जी! मैंने लड़का देखा है और उसे पसन्द किया है। मैं उसे अपने इलाके में भूमि दे दूँगा और वह उससे उन्नति कर लेगा। इस कारण मुझे तो इसमें कुछ विचित्रता प्रतीत नहीं हुई।

''इसपर भी भैया से राय कर लेनी उचित है। आखिर वे घर के पुरखा हैं और उनकी जानकारी के बिना तो कुछ हो नहीं सकता। आप बैठिए, मैं उनसे बात कर अभी आता हूँ।''

लक्ष्मणसिंह पंडित जी को बैठाकर भीतर भाई के कक्ष में चला गया। वहीं उसने अपनी पत्नी को बुला लिया। रामसिंह और उनकी पत्नी सदारानी तथा लक्ष्मणसिंह और उसकी पत्नी इन्द्रमणि एकत्रित हुए तो पंडित जी की कही हुई पूर्ण बात बताकर लक्ष्मणसिंह ने पूछ लिया, ''अब क्या किया जाए, इसीलिए आपको बुलाया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों औरतें तो पीतमुख बैठी रहीं। वे कुछ नहीं कह सकीं। रामसिंह ने पूछा, ''लक्ष्मण! पहले तुम बताओ, क्या कहना चाहते हो? वैसे मैंने मन में बात विचार ली है, परन्तु वह मैं बाद में बताऊँगा।''

''इन्द्रा!'' लक्ष्मणसिंह ने अपनी पत्नी से पूछ लिया, ''और तुम क्या कहती हो?''

''मुझे इस बात से दुःख तो हुआ है, परन्तु हमारे कोई लड़का तो है नहीं। हम महेश्वरी के पति को लड़का बनाकर यहाँ रख लेंगे।''

''भाभी! तुम क्या कहती हो?''

''मैं तो समझती हूँ कि उनके घर के झगड़े में लड़की का जीवन बरबाद हो जाएगा।''

''पर भाभी! महेश्वरी ने अपने हाथ से केसर घिसकर दिया है और उससे तिलक लग चुका है। धर्म से लड़की कर्मजीत की हो चुकी है।''

''परन्तु देखकर तो मक्खी खाई नहीं जाती।''

इसपर इन्द्रमणि ने पूछ लिया, ''बहिनजी! वह लड़का मक्खी है क्या?''

''लड़का तो अच्छा, सुन्दर और स्वस्थ मालूम होता है। मैं तो उसके परिवारवालों की बात कर रही हूँ।''

उत्तर लक्ष्मणसिंह ने दिया, ''मैं उसे अपने चाचा के परिवार से पृथक् कर दूँगा। मेरे विचार में तो महेश्वरी की सास को अपने देवर से पृथक् करने का बहुत अच्छा बहाना बन गया है। इससे महेश्वरी दिलजीतसिंह के परिवार में नहीं जाएगी।

''भैया!'' उसने अपने बड़े भाई को सम्बोधन कर कहा, ''मैं इसको किसी प्रकार से भी बुरी बात नहीं समझता। मैं यत्न करूँगा कि दिलजीतसिंह को विवश कर दूँ कि वह कर्मजीत इत्यादि को उनके हिस्से की ज़मीन दे दे।''

''कैसे करोगे?''

''पहले तो कर्मजीत इत्यादि को अपने चाचा से पृथक् मकान में ले जाया जाए। फिर [illegible] कर पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पत्ति को सील करवा दूँगा और ज़मींदारी पर रिसीवर बैठवा दूँगा। मैं समझता हूँ कि इतने मात्र से ही सुलह हो जाएगी।''

''लक्ष्मण, यह मुकद्दमे-झगड़े की बात तुम विचार कर लो। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि महेश्वरी के दहेज में मैं कर्म को एक गाँव दे दूँगा और उससे वह मज़े में निर्वाह कर लेगा।''

''ठीक है, भैया! मैं समझता हूँ कि घबराने की कोई बात नहीं। मैं स्वयं पंडित जी के साथ सायंकाल जाऊँगा और सब प्रबन्ध कर आऊँगा।''

इस प्रकार निश्चय कर लक्ष्मणसिंह बाहर बैठक में पंडित जी से मिला। उसने कहा, ''पंडित जी! आपके हाथ से किया गया तिलक अब मिटाया नहीं जा सकता। महेश्वरी का विवाह कर्मजीतसिंह से होगा। शेष उनके घर की व्यवस्था के लिए मैं आपके साथ सायंकाल जाऊँगा और सब निश्चय कर आऊँगा।''

पंडित तुलसीसहाय को बाबू साहब के इस निर्णय से बहुत प्रसन्नता हुई। सायं चार बजे के लगभग वे दोनों मोटर में सवार हो दिलजीतसिंह की हवेली के बाहर जा खड़े हुए।

मोहनसिंह पहले तो उनको कार्यालय में बैठा भीतर सूचना देने गया। फिर बाहर आ इन दोनों को भीतर की बैठक में ले गया। वहाँ उनको बैठाकर कहने लगा, ''बाबा कहते हैं कि बाहर दूसरे लोग आते-जाते रहते हैं और उनको अपनी बात का पता नहीं लगना चाहिए।''

''तब तो बाबू दिलजीतसिंह ने बहुत बुद्धिमत्ता की बात की है।''

इसी समय दिलजीतसिंह वहाँ आ गया। साथ ही चन्दनसिंह भी आ गया। लक्ष्मणसिंह उसको देखकर हँस पड़ा और संकेत से उसको बुलाकर अपने समीप बैठा लिया।

दिलजीतसिंह अपने लड़के के सामने बात करना नहीं चाहता था, परन्तु चन्दन को लक्ष्मणसिंह के समीप बैठते देख चुप रह गया। उसने हाथ जोड़ आगन्तुकों को नमस्कार किया और बोला, ''आज्ञा करिए। कहला भेजते तो मैं वहीं आ जाता। दूध पिएँगे अथवा चाय बनवा दूँ?''

लक्ष्मणसिंह ने कहा, ''हम कुछ खाने-पीने के लिए नहीं आए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि कुछ खिलाने का विचार कर रहे हैं। बाबू साहब! कई दिन से हम, मेरा मतलब है, मैं और भाई साहब ने यह निश्चय किया हुआ था कि आपके बड़े भाई के लड़के कर्मजीत से अपनी लड़की के विवाह का निश्चय करें। पंडित जी ने तो ठीक बताया था कि वह सरवरगंज के बाबू साहब का लड़का है। भूल हमसे हुई है कि हमने उसे आपका लड़का समझ लिया था। इसी भूल में कल महेश्वरी की माँ और ताई आई थीं और आपके लड़के चन्दनसिंह के विषय में बातचीत करती रहीं। घर जाकर उनको पता चला कि हम चन्दनसिंह के विषय में विचार नहीं कर रहे थे, इस कारण हमने शीघ्रातिशीघ्र अपनी भूल का सुधार कर लिया और पंडित जी द्वारा शकुन भेज दिया। आज प्रातः पता चला था कि आपको हमारे घर में कर्मजीत की सगाई पसन्द नहीं। हमारी समझ में नहीं आया कि ऐसा क्यों? इस कारण आपसे निवेदन करने आए हैं कि आप इस संयोग को आशीर्वाद दें।''

दिलजीतसिंह ने कहा, ''आपकी पत्नी अपनी लड़की की बातचीत मेरे लड़के से कर गई थी। बात हो जाने के उपरान्त इस अदला-बदली को मैं पसन्द नहीं करता। इससे तो लोग मेरे लड़के में दोष मानने लगेंगे।''

''वह बात तो प्राइवेट थी। किसको पता लगा होगा कि हमारे घर की औरतें चन्दनसिंह के लिए आई हैं अथवा कर्मजीत के लिए नहीं?''

''मैं तो समझा था और अब भी समझता हूँ कि वह लड़की चन्दनसिंह की बीवी हो चुकी है। अब उसका विवाह किसी दूसरे से हम पसन्द नहीं करेंगे।''

''परन्तु चन्दनसिंह अभी बच्चा है। कर्मजीत उससे बड़ा है। उसका विवाह पहले होना ही चाहिए।''

''तो सुन लीजिए कि इस लड़की से कर्मजीत का विवाह नहीं हो सकता।''

''इसमें आपको क्या आपत्ति हो सकती है?''

''मैं बहस में पड़ना नहीं चाहता।''

इस समय पंडित तुलसीसहाय ने कहा, ''बाबू साहब! ज़रा कर्मजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुला दीजिए। चन्दनसिंह तो यहाँ है ही। ज़रा इन दोनों से भी पता कर लें कि ये लोग क्या समझते हैं।''

दिलजीतसिंह इस प्रस्ताव का अर्थ समझ नहीं सका। वह दोनों मेहमानों का मुख देखता ही रह गया। चन्दनसिंह एकाएक उठा और बोला, ''मैं कर्म दादा को बुला लाता हूँ।''

''मत जाओ!'' दिलजीतसिंह ने मना करते हुए कहा।

परन्तु तब तक चन्दन पिता की आवाज़ से दूर जा चुका था। कर्मजीत को पता चल गया था कि पंडित जी आए हैं। इस कारण चन्दनसिंह को दूर नहीं जाना पड़ा। कर्मजीत मार्ग में ही मिल गया। उसे साथ लेकर बैठक में आके चन्दन ने कर्मजीत और स्वयं को उनके सम्मुख खड़ा करते हुए कह दिया, ''लीजिए पंडित जी! हम दोनों खड़े हैं। कर लीजिए मुकाबला! एक बात मैं आपको पहले ही बता देता हूँ कि मैं बाबू साहब की लड़की से विवाह नहीं करूँगा।''

''क्यों?'' बाबू साहब ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

''इसलिए कि मैं····मैं····'' वह कहता-कहता रुक गया। लक्ष्मणसिंह का विचार था कि वह कुछ अनर्गल बात करनेवाला है, परन्तु चन्दन निर्मला की बात करता-करता रुक गया। पिता के मुख की दृढ़ मुद्रा देख वह डर गया था। उसने कह दिया, ''मैं जानता हूँ कि लड़की द्वारा भेजे गए केसर से दादा के मस्तक पर तिलक लग चुका है। अब वह मेरी भाभी है, अतः उससे विवाह कैसे हो सकता है?''

''और कर्मजीत! तुम क्या कहते हो?'' लक्ष्मणसिंह ने पूछ लिया।

''जी, मैं लगे तिलक को अपने हाथ से पोंछ नहीं सकता। लड़की के पिता जो चाहें करें।''

लक्ष्मणसिंह ने दिलजीतसिंह को कह दिया, ''बाबू दिलजीतसिंह, यह विवाह तो होगा। अब टल नहीं सकता। आप बताइए कि आप आशीर्वाद देते हैं कि नहीं?''

''नहीं! नहीं! नहीं!!!'' दिलजीतसिंह ने कहा और उठ पड़ा।

इसका अभिप्राय यह था कि आनेवाले अब जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लक्ष्मणसिंह भी उठ पड़ा और कर्मजीत से बोला, "बाहर आओ, तुमसे बात करनी है।"

दिलजीतसिंह हवेली के अन्तःपुर में चला गया। जब कर्मजीत घर से बाहर चला गया और लक्ष्मणसिंह भी जाने लगा तो चन्दनसिंह वहीं खड़ा रह गया। लक्ष्मण ने चन्दन के मुख पर देखा और कुछ विचार कर कहा, "तुम भी आओ!"

"मैं किसलिए?"

"भाई का सहबाला बनने के लिए।" लक्ष्मणसिंह ने कहा और हँस पड़ा। उसने चन्दनसिंह की बाँह पकड़ी और अपने साथ बाहर मोटर के पास ले गया।

पंडित जी भी लक्ष्मणसिंह, कर्मजीत और चन्दनसिंह के पास आ खड़े हुए थे।

बात लक्ष्मणसिंह ने आरम्भ की, "कर्मजीत! मैं समझता हूँ कि तुमको अब इस घर में नहीं रहना चाहिए।"

"जी, हमने एक मकान गाँव में भाड़े पर ले लिया है। हम कल प्रातः वहाँ चले जाएँगे।"

"अच्छा, मैं कल आपकी माता जी से मिलने के लिए आऊँगा। कहाँ है वह मकान?"

"गाँव में बहोरी बनिये का है।"

"क्यों चन्दनसिंह! मोटर की सैर करोगे?"

"भाड़ा नहीं दूँगा।"

"अब तो तुमसे भाड़ा ले सकता ही नहीं। तुम हमारे दामाद के सहबाला हो न?"

"तो ठीक है। पर दादा को भी साथ ले चलिए।" चन्दनसिंह का कहना था।

"किसलिए?"

"वापस आते समय दो हो जाएँगे।"

"ठीक है, आओ कर्मजीत!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों मोटर में बैठ गए। पंडित और लक्ष्मणसिंह बैठे तो मोटर महोना की ओर चल दी।

: २ :

अगले दिन दिलजीतसिंह ने राजरानी और उसके पुत्रों को सामान उठा-उठाकर बाहर जाते देखा तो रोक लिया, "यह कहाँ लिये जा रहे हो?"

उत्तर जवाहर ने दिया, "अपने नये मकान में।"

"पर इसे क्यों लिये जा रहे हो?"

"हमको वहाँ चाहिए।" अभी भी उत्तर जवाहरसिंह ने ही दिया। अन्य तीनों भाई मौन खड़े रहे। घर का एक नौकर सीतलू एक गट्ठर बिस्तरों का उठाए हुए आया। दिलजीतसिंह ने उसे भी रोक लिया। इतने में राजरानी अपनी बगल में एक गठरी दबोचे आ गई। दिलजीतसिंह ने उससे भी कह दिया, "यदि तुम लोगों को जाना है तो सब-कुछ यहाँ का यहीं छोड़कर जाना होगा।"

"तो भैया!" राजरानी ने कहा, "मैं पहने कपड़े भी उतार दूँ?"

"क्यों?"

"जिससे गाँव वालों को पता चल जाए कि गाँव के ठाकुर ने अपनी विधवा भाभी को नंगा कर घर से निकाल दिया है।"

बैठक के सामने इस झगड़े की आवाज़ में चन्दन की नींद खुल गई। वह बाहर निकल आया। उसने कर्मजीत इत्यादि को सामान उठाए वहाँ खड़ा देखा तो सब समझ गया। उसने ताई की नंगा निकलकर जाने की बात सुनी तो उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसने कह दिया, "बाबा! ये जाते हैं तो जाने दो न!"

"चुप रहो बदमाश के बच्चे! मैं जानता हूँ कि तुमको भी लक्ष्मणसिंह ने भड़काया है।"

"बाबा! न्याय नहीं तो दया के भाव से ही सही, इनको जो चाहें ले जाने दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, ये यहां से एक तिनका भी नहीं ले-जा सकेंगे।"

"क्यों?"

"मैं घर का मालिक यह आज्ञा देता हूँ। वरना आज किसी का खून हो जाएगा!"

चन्दनसिंह को क्रोध चढ़ आया और वह ताई के सम्मुख खड़ा होकर बोला, "ताई! जो मन में आए तुम ले जाओ।"

राजरानी ने अभी भी नम्रता से ही कहा, "भैया! यह बिस्तर है। ये खाने-पकाने के बर्तन हैं। इस संदूक में हमारे पहनने के कपड़े हैं। यह कर्मजीत के ससुराल की मिठाई का थाल है। और कुछ भी नहीं।"

पर दिलजीतसिंह के सिर पर तो भूत चढ़ रहा था। वह हुक्का पीता-पीता उठकर उन्हें रोकने के लिए आया था। उसके हाथ में हुक्के की नाल थी। वह चन्दन को एक ओर कर कर्मजीत को नाल से पीटने के लिए बढ़ने लगा तो चन्दन ने पिता को अपनी भुजाओं में जकड़ लिया।

कर्मजीत ने माँ की ओर देखा, परन्तु माँ ने कर्मजीत के देखने का अर्थ समझ हाथ के संकेत से रोक दिया। पिता-पुत्र में झपटा-झपटी होने लगी थी। इस समय मोहनसिंह अपने घर से आ गया और सबको वहाँ एकत्रित देख तथा चन्दनसिंह और पिता को वस्तुतः कुश्ती करते देख हँस पड़ा। उसने आवाज़ दे दी, "चन्दन! यह क्या हो रहा है?"

"दादा!" उसने अपने पिता को छोड़ कहा, "ये···"

इससे आगे वह कुछ कह नहीं सका। दिलजीतसिंह ने हुक्के की नाल से कर्मजीत पर वार कर ही दिया।

इसपर तो मोहन और चन्दन ने अपने पिता को पकड़कर घसीटते हुए बैठक-घर में धकेलकर द्वार बन्द कर बाहर से कुंडा चढ़ा दिया। पद्मा द्वार पर खड़ी यह सब देख रही थी। वह इसमें बोलना नहीं चाहती थी और दिलजीतसिंह ने उसे पीटा था, इस कारण वह भयभीत खड़ी एक ओर देख रही थी। वह तो चाहती थी कि कर्मजीत इत्यादि अपने अधिकार के लिए लड़ पड़ें, परन्तु वह मुख से इतना भी नहीं कह सकी। अब मोहन और चन्दन को इस विषय में हस्तक्षेप करते देख मन में प्रसन्न, परन्तु मुख से मौन खड़ी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठक-घर के द्वार पर कुंडा चढ़ा मोहन ने कहा, ''ताई! अब तुम जा सकती हो।''

''पर बेटा! वे नाराज़ होंगे।''

''ताई! वे कौन हैं तुमको रोकनेवाले? उनसे अधिक इस सबका मालिक मैं हूँ। मैं कहता हूँ कि तुम यह सब ले जाओ। और भी जो कुछ चाहिए बताओ, हम दे देंगे।''

हवेली के बाहर सामान ले-जाने के लिए एक ठेला खड़ा था। कर्मजीत इत्यादि सामान उठाकर बाहर ठेले में रखने के लिए जाने लगे। राजरानी ने आँखों से आँसू बहाते हुए पद्मा के समीप जा हाथ जोड़ नमस्ते की तो पद्मा ने उसे गले लगा लिया और कान में कहा, ''मैं तुम्हारे घर आकर मिलूँगी।''

नये घर को ठीक-ठाक कर वे भोजन तैयार होने पर पंडित जी के घर जाने के लिए तैयार हो गए। राजरानी का साहस बँध गया था। उसे विदित हो गया था कि मोहन, चन्दन और पद्मा उसके सहायक हैं। वह मोहन के परिवार को भी अपना सहायक मानती थी। फिर चार जवान लड़के थे। वह अब निर्भीक आँखों से भविष्य को देखने लगी थी। इसपर भी उसने एक निश्चय किया हुआ था और वह यह कि किसी से कुछ माँगने के लिए नहीं जाएगी। देनेवाला भगवान है और उसके देने के ढंग न्यारे हैं।

वह अपने संबंधियों से कुछ माँगना तो दूर उनसे विवाह से पूर्व कुछ सहायता लेना भी उचित नहीं समझती थी। उसी दिन लक्ष्मणसिंह आया था और घर की और वहाँ रखे सामान की अवस्था देख कर्मजीत को बताने लगा था कि वह घर के लिए अमुक-अमुक सामान भेज देगा।

राजरानी ने सुना तो बोल उठी, ''मैं आपकी अत्यन्त कृपा मानूँगी यदि आप इन लड़कों को अपने पाँव पर खड़ा होने का अवसर देंगे। यदि ये इस कठिनाई को पार कर गए तो ये मानव बन जाएँगे। इनको पशु बने रहने में सहायता मत दीजिए!''

लक्ष्मणसिंह इस औरत के मनोद्गारों को सुन चकित रह गया। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस भावना की प्रशंसा करता था और इसको कुचलने में सहायक नहीं होना चाहता था। इसपर भी वह एक डूबते को आश्रय देना अपना कर्तव्य मानता था। इस कारण उसने कर्मजीत इत्यादि को छिपकर सहायता देने का निश्चय कर राजरानी से पूछ लिया, "पर बहिन! क्या योजना है इनकी?"

"कर्मजीत तो कहता है कि वह आयुर्वेद सीखकर वैद्य बनेगा और मैं समझती हूँ कि दो-तीन वर्षों में वह खाने-कमाने लग जाएगा। धर्म की प्रवृत्ति आचार्य बनने की है। उसे काशी जाकर अपनी विद्या उन्नत करनी चाहिए। भविष्य के विषय में मैंने और उसने अभी कुछ भी निश्चय नहीं किया। वह भी एक-दो दिन में विचार कर लेंगे। जवाहर मेरे पास रहेगा और मेरी रक्षा के लिए डंड पेलेगा, पहलवान बनेगा।"

लक्ष्मणसिंह जवाहरसिंह की ओर देखकर हँस पड़ा। जवाहर माँ की बात सुनकर गर्व अनुभव कर रहा था। लक्ष्मणसिंह ने पूछ लिया, "क्यों जवाहर दादा! करोगे? यह कठिन काम है!"

"माँ कहती है तो करूँगा। और···" वह माँ की आँखों में ताड़ना का भाव देख चुप हो गया।

लक्ष्मणसिंह इस परिवार की सहायता के उपाय सोचता हुआ लौट गया। उस दिन भी मोहन की दूसरी पत्नी चंचल आई थी और राजरानी को एक सौ रुपया चालू खर्च के लिए दे गई थी। राजरानी ने कहा था, "उसके पास अभी कर्मजीत की ससुराल से आए रुपये हैं।"

चंचल ने कहा, "वह कर्म भैया के विवाह के लिए रहने दो। यह तो ज़मींदारी में से कर्म के भैया ने भेजे हैं।"

दिलजीतसिंह के घर में भारी परिवर्तन हो रहा था। राजरानी के चले जाने के उपरान्त बैठक का द्वार खोला गया तो दिलजीतसिंह कमरे के एक कोने में क्रोध में डूबा हुआ बैठा था। वह भी अपने मन में एक योजना बना रहा था। उसने समझा कि अपनी पत्नी और पुत्रों को बताए बिना अपनी योजना चलानी चाहिए, और इनको अपना सहायक नहीं तो सहानुभूति रखनेवाला बनाकर रखना चाहिए।

मोहनसिंह बैठक में अपने पिता के समीप गया और कहने लगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Ghennai and eGangotri

"बाबा! आपका व्यवहार ठीक नहीं था। इससे भारी बदनामी होने की सम्भावना थी।"

दिलजीतसिंह ने स्वीकार करते हुए कहा, "मुझे क्रोध चढ़ आया था। असल में यह मेरी भूल थी। मैं अब राजरानी को कुछ सम्पत्ति का हिस्सा भी देने का निश्चय कर चुका हूँ।"

मोहनसिंह ने कहा, "ठीक है। यह विचार कर लेंगे। आखिर वे ताई हैं और कर्मजीत आदि हमारे भाई हैं।"

चन्दनसिंह तो अब पिता के सम्मुख आता ही नहीं था। दिन-भर वह ताई, मोहन भैया और अन्य मित्रों के साथ मिलता रहता था। भोजन वह एक समय करने लगा था और वह भी तब जब उनका पिता बाहर की बैठक में होता था।

इस प्रकार क्रिसमस की छुट्टियाँ व्यतीत हो रही थीं।

एक दिन रात के समय दिलजीतसिंह भोजन कर हुक्का पी रहा था। चन्दनसिंह कहीं बाहर से आ सीधा अपने कमरे की ओर जा रहा था कि उसके पिता ने उसको देख आवाज़ दे दी, "चन्दनसिंह!"

चन्दनसिंह पिता के कमरे में चला गया। पिता ने पूछ लिया, "किधर से आए हो?"

"मोहन दादा के घर से।"

"वहाँ क्या था?"

"कुछ खास बात नहीं। मैं मोहन दादा और चंचल भाभी से सुलह रखना चाहता हूँ।"

"किसलिए? चंचल भाभी से क्या मिलता है तुमको?"

"बाबा! वह अपनी ही लगने लगी है।"

"और मैं अपना नहीं?"

चन्दन ने मुस्कराते हुए बताया, "एक दिन कर्मजीत दादा के ससुर ने कर्मजीत से पूछा था कि वह नये मकान में कैसा अनुभव करता है तो उसने बताया था—हवेली में पड़ोसी अच्छे नहीं थे। यहाँ पड़ोसी अच्छे आदमी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलजीतसिंह इस पड़ोसी का अर्थ नहीं समझ सका। उसने पूछ लिया, ''कौन पड़ोसी ?''

चन्दनसिंह ने कर्मजीत के शब्दों में ही बताया, ''वह कहता था कि यहाँ हवेली में चाचा जी पड़ोसी थे और वहाँ चंचल भाभी है।''

''तो हम पड़ोसी थे ?''

''बाबा! यह उसने कहा है। वह यह भी कहता था कि मनुष्य की आत्मा एक स्वतंत्र इकाई है और अन्य आत्माएँ पड़ोसी-मात्र हैं, अर्थात् सब एक-दूसरे के पड़ोसी हैं। वे केवल एक-दूसरे की सहायता ही कर सकते हैं, कोई किसी के कर्मफल का भागीदार नहीं बनता।''

''बहुत आत्मा-परमात्मा की बात करने लगे हो ?''

''बाबा! यह मैं नहीं कह रहा। यह तो कर्मजीत कहता था और वह शास्त्र पढ़ता रहता है।''

''तो तुम मेरे पड़ोसी हो, पुत्र नहीं ?''

''बाबा! पुत्र तो हूँ, परन्तु कर्मजीत कहता था कि यह शरीर का संबंध है। शरीर जड़ है, अतः यह संबंध भी जड़ है। असल संबंध तो आत्मा-आत्मा का है और वे पड़ासी-मात्र हैं। पड़ोसी की भाँति एक-दूसरे के अच्छे-बुरे में सहयोग तो देते हैं, परन्तु सब अपने-अपने कर्मफल के भागी हैं।''

''छोड़ो इस बकवास को! तुम्हें कुली का काम नहीं करना जो इस प्रकार की अनपढ़ों की बातें करते हो। तुम बहुत बड़े विद्वान बन सरकारी अफसर बनोगे।''

चन्दन चुप रहा, इसपर पिता ने पूछ लिया, ''देखो, अगर मेरे साथ रहोगे तो मेरी पूर्ण सम्पत्ति और ज़मींदारी के तुम उत्तराधिकारी बनोगे। नहीं तो अपने ताई के लड़के की भाँति भीख माँगते फिरोगे।''

''परन्तु बाबा! वे भीख नहीं माँग रहे।''

''अपने श्वसुर से माँग-माँगकर निर्वाह करेंगे। यह भीख नहीं तो और क्या है ?''

''पर मुझे भय लग रहा है कि जैसे अपने बड़े भाई के लड़कों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नहीं दिया, वैसे मोहन दादा मुझे भी अँगूठा दिखा सकता है। इसलिए मैं उससे मित्रता बना रहा हूँ।''

''तो मित्रता भाई के संबंध से बड़ी है क्या?''

''कुछ ऐसा ही समझ आया है।''

''तुम सब पागल हो रहे हो!''

इसपर चन्दनसिंह ने एक और बात बता दी। उसने कहा, ''कर्मजीत लखनऊ पढ़ने चला गया है।''

''क्या करने?''

''वह आयुर्वेद पढ़ वैद्य बनने गया है।''

''वह बन नहीं सकेगा।''

''और धर्मजीत काशी गया है। वह वहाँ आचार्य बनने के लिए गया है।''

''हाँ! हाँ!'' दिलजीत हँस पड़ा। पूछने लगा, ''तो वह अब लोगों के विवाह पढ़ा करेगा?''

चन्दन इसका अर्थ समझ नहीं सका, इसलिए चुप रहा। पिता हुक्का गुड़गुड़ाता हुआ विचारमग्न हो गया। चन्दनसिंह उठकर अपने कमरे में चला गया। वहाँ जाने से पूर्व माँ को बता गया कि वह भोजन चंचल भाभी के घर कर आया है।

: ३ :

चन्दनसिंह के कॉलेज जाने का दिन आ गया। उसने प्रातःकाल का कलेवा लिया और सामान बाँधकर तैयार हो गया। वही सूटकेस था जो वह लखनऊ से आते समय साथ लाया था। इसके अतिरिक्त एक गठरी थी जिसमें माँ ने घर की बनी मिठाई बाँध दी थी।

चन्दनसिंह नन्दू बारी को कहने चला गया कि उसे उसका सामान उठाकर साथ चलना चाहिए। सरवरगंज से स्टेशन छः मील के अन्तर पर था। पैदल जाने में दो-ढाई घंटे लगते थे, और गाड़ी साढ़े चार बजे पीछे से आती थी। अतएव घर से एक बजे चलने का विचार था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दू बारी को कहकर चन्दनसिंह चंचल से मिलने के लिए चला गया। मोहनसिंह उस समय घर पर ही था। यद्यपि वह भाभी और ताई से नित्य मिलता था, इसपर भी वह लखनऊ जाने से पूर्व दोनों से मिलने के लिए गया और दोनों के यहाँ से कुछ खा-पीकर ही जा सका। चंचल ने चन्दन को यह बताया था कि वह ताई से आर्थिक सहायता के लिए पूछती रहती है, परन्तु वह स्वयं कुछ नहीं माँगतीं।

चन्दन ने अपने मन में एक दूसरा ही विचार कर रखा था। वह जब ताई से मिलने के लिए गया तो वहाँ बनी खीर खाकर बोला, "ताई! एक बात कहना चाहता हूँ।"

"कहो?"

"यही कि मैं भी तुम्हारा ही पुत्र हूँ।"

"लेकिन यह कहने की आवश्यकता क्या है?"

"कहने की नहीं, इसका अभिप्राय बताने की आवश्यकता है।"

"अच्छा बताओ।"

"पुत्र का यह कर्तव्य होता है कि माँ के सुख और आराम का चिन्तन किया करे।"

"वह तो तुम करते ही हो।"

"उसी चिन्तन का परिणाम बता रहा हूँ, ताई!"

"हाँ, बताओ।"

"मुझको पिता जी से दो सौ रुपया मासिक भत्ता मिलता है। जिस दिन मैंने पिता जी से कर्मजीत के पीटे जाने के विरोध में हाथा-पाई की, उस दिन से मेरा भत्ता तीन सौ रुपया मासिक हो गया है।"

"ओह, तो तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें उनसे लड़ने का इनाम दिया है!"

"हाँ, ताई! अब इस बढ़े हुए भत्ते में से मेरे पास डेढ़ सौ रुपया महीना बच जाएगा। यह वृद्धि हुई है ताई और ताई के लड़के के लिए झगड़ा करने पर। इस कारण बचा धन ताई को देकर जा रहा हूँ। माँ को पुत्र से रुपया लेने में डरना नहीं चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डरना क्यों नहीं चाहिए?"

"इसलिए कि न तो वह रुपये का ब्याज माँगेगा और न ही यह रुपया वापस माँगेगा।"

"क्यों नहीं माँगेगा?"

"वह पुत्र है न! ताई, मैं जाने से पहले वह डेढ़ सौ रुपया आपको दे जाना चाहता हूँ।"

"वह अपनी जन्मदात्री माँ को क्यों नहीं दे जाते?"

"माँ से शरीर का संबंध है। पर ताई, तुमसे मन और बुद्धि का संबंध है। कर्मजीत कहता था कि यह सम्बन्ध अधिक निकट का होता है। ताई! मैंने तुमसे एक बात सीखी है, इससे मैं तुम्हारा पुत्र हूँ। कर्मजीत कहता था कि मैं मानस-पुत्र हूँ।"

"कर्मजीत के शिष्य बन गए हो क्या?"

"हाँ ताई! वह मानस-भाई है।"

"मैं समझती हूँ कि तुम यह रुपया रखो। परदेश जा रहे हो। न जाने किस समय कितनी आवश्यकता पड़ जाए!"

"ताई! कोई खास आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यदि पड़ेगी तो मोहन दादा से माँग लूँगा।"

इतना कहते-कहते उसने जेब से नोटों का एक बंडल निकाला और सामने चौकी पर रखकर चल पड़ा।

"चन्दन!" ताई ने उसे आवाज़ देकर रोक लिया, "देखो, माँ का भी कुछ कर्तव्य होता है।"

"ताई, मैं जानता हूँ।" उसने द्वार के समीप खड़े-खड़े ही कह दिया, "और वह तुम पालन कर रही हो, ताई!"

राजरानी समझी नहीं। उसने पूछ लिया, "क्या कर रही हूँ मैं?"

"दादा विश्वजीत बता रहा था कि मेरी ताई नित्य भगवान से मेरे लिए मेरी मनपसन्द बहू पाने की बात कहा करती है।"

राजरानी हँस पड़ी। चन्दनसिंह मकान से निकल गया। विश्वजीत नित्य पंडित जी से पढ़ने के लिए जाता था और फिर वहाँ से लक्ष्मणसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पास ज़मींदारी का काम सीखने चला जाया करता था। वह भी महोना जाने के लिए तैयार हो रहा था। माँ उसे खिलाने में लग गई। चन्दन का दिया रुपया मेज़ पर ही पड़ा रह गया।

चन्दन घर पहुँचा तो माँ ने खाना तैयार कर रखा था। वहाँ से वह कुछ समय के लिए अपने कमरे में आराम करने के लिए चला गया।

जब वह घर से चलने लगा और नन्दू से सूटकेस उठवाए हुए कार्यालय के आगे से निकला तो पिता को वहाँ बैठे देख चरणस्पर्श करने के लिए जा पहुँचा। दिलजीतसिंह ने उसे देखा तो पूछ लिया, "सुबह से किधर घूम रहे हो?"

"बाबा! ज़रा चंचल भाभी से मिलने चला गया था।"

"चंचल से बहुत प्रेम हो गया है?"

"हाँ बाबा! वह बहुत अच्छी है।"

"नलिनी से भी अच्छी है?"

"बाबा! नलिनी तो बिना सींग की बकरी है और यह तीखे सींगों-वाली गाय।"

"कभी सींग मारे भी हैं क्या?"

"कभी समीप जाओ तो वह सींग दिखा देती है। मैं डरकर पीछे हट जाता हूँ।"

पिता हँस पड़ा। वह पूछने लगा, "पर तुम उसके समीप जाते ही क्यों हो?"

"वह भाभी जो हुई! भाभी से हँसी-मज़ाक करने में स्वाद आता है।"

"बचकर रहना चाहिए। कभी सींग पेट में लग गया तो 'राम नाम सत्य है' भी हो सकती है।"

"बाबा! बहुत सावधान रहता हूँ।"

"अच्छा, पत्र लिखते रहना!"

चन्दन गाँव से निकला ही था कि लक्ष्मणसिंह मोटरगाड़ी में गाँव के भीतर से आता दिखाई दिया। चन्दन समझ गया कि ताई से मिलकर आ
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है। लक्ष्मणसिंह ने गाड़ी चन्दन से समीप लाकर खड़ी कर दी और बोला, "चन्दन! आ जाओ।"

चन्दन को स्मरण आ गया कि वह स्टेशन ले चलने के लिए कह रहा है। इससे उसने अपना सूटकेस बेनी नौकर को दे दिया और स्वयं मिठाई की पोटली लेकर बाबू साहब के पास बैठ गया।

"यह क्या लिये जा रहे हो?"

"माँ ने मिठाई दी है।"

"बहुत अच्छी है माँ तुम्हारी! हमारी माँ तो जाने के समय हमें कुछ भी नहीं देती।"

"वह इस कारण कि आपकी माता जी की दृष्टि में अब आप बच्चे नहीं रहे।"

"और तुम्हारी माँ अभी तुम्हें बच्चा ही समझती हैं?"

"मैंने उससे कहा है कि मैं अब बच्चा नहीं रहा, पर वह मानती ही नहीं। इस कारण जब भी मैं घर से बाहर जाने लगता हूँ तो वह मेरे लिए बेसन के लड्डू बनाने लगती है।"

लक्ष्मणसिंह हँसता हुआ कहने लगा, "माँ ठीक समझती है कि तुम अभी बच्चे हो।"

"और आप भी तो मुझको बच्चा ही समझते हैं।"

"आज से नौ दिन पहले जब पहली बार मिले थे, मैंने भी तुमको सात-आठ वर्ष का बालक ही समझा था। परन्तु आज तो कुछ बड़े हो गए-से लगते हो।"

"नौ दिन तो बड़ा हुआ ही हूँ।"

"नौ दिन नहीं, इससे अधिक बड़े हुए हो। पर कितने, यह अनुमान आज लगाऊँगा।"

"तो दिन, महीने और वर्षों का आयु से सम्बन्ध नहीं है?"

"देखो, एक दिन पहले भी मैंने तुमको बताया था कि पड़ोस मकान, मुहल्ले, गाँव, प्रान्त अथवा देश से नहीं होता। इसी प्रकार तुमको यह समझ लेना चाहिए कि आयु दिन-महीने अथवा वर्षों से नहीं गिनी जाती जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी मनुष्य में माँ के पेट से निकलने के उपरान्त व्यतीत हो चुके हों। आयु का अनुमान उन अनुभवों से लगाना पड़ता है जो किसी मनुष्य ने प्राप्त किए हों। अनुभवों से ही आयु की गणना करनी चाहिए। अनुभव पूर्वजन्म के संस्कारों के रूप में होते हैं। इसीसे कई बच्चे उत्पन्न होते ही युवक होते हैं।''

चन्दन जब भी लक्ष्मणसिंह से बात करता था, कुछ-न-कुछ नई बात सीखता रहता था। अब उसके मन में एक शरारत सूझी। उसने पूछ लिया, ''आप अपनी आयु क्या समझते हैं?''

''देखो चन्दन! यह आयु जो दिन, मास और वर्षों से गिनी जाती है, वह मनुष्य अपनी स्वयं नहीं जान सकता, उसे अपने किसी बड़े से पूछनी पड़ती है। इसी प्रकार अनुभव से जानी जा सकने वाली आयु भी स्वयं नहीं गिनी जा सकती। इसका ज्ञान भी किसी दूसरे से पूछने पर होता है। दूसरा भी ऐसा जो अनुभव में अपने से बड़ा हो और जो आयु गिनने का ढंग जानता हो।''

''आपसे अधिक अनुभव वाला कोई आपको मिला है अथवा नहीं?''

''एक मिला था। तब मैं स्कूल में पढ़ता था। तब उसने अन्दाज़ा लगाया था कि मेरी आयु तीन वर्ष के बच्चे की-सी है। तब माँ मुझको पन्द्रह वर्ष का मानती थी।''

''तीन वर्ष का?''

''हाँ। परन्तु उसने मुझे बताया था कि मैं कैसे दिन-मास को पछाड़ कर आयु में बड़ा हो सकता हूँ। तब से मैं निरन्तर उसके बताए हुए उपायों का प्रयोग कर रहा हूँ। मैं द्रुतगति से बड़ा हुआ हूँ। पर कितना, यह मैं स्वयं नहीं जान सकता।''

''एक बात आपने नहीं बताई कि आप स्कूल में भी पढ़ते रहे हैं। मैं तो समझता था कि आप कहीं पढ़े ही नहीं!''

इसपर लक्ष्मणसिंह हँस पड़ा और कहने लगा, ''मैं कॉलेज में भी पढ़ा हूँ। तब मैं आयु को बढ़ाने के उपाय जान गया था और मुझे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉलेज के साथी पाँच से दस वर्ष तक की आयु के प्रतीत होते थे। शरीर से तो बड़े-बड़े दिखाई देते थे, परन्तु अनुभव में मुझसे बहुत छोटे रह गए थे।''

''अच्छा, अब आप यह बताइए कि आप मुझसे कितने बड़े हैं?''

''जिस गति से मैं बड़ा हुआ हूँ उस गति से तुम बड़े नहीं हो रहे हो। इसलिए दोनों की आयु की तुलना सम्भव नहीं।''

''परन्तु आप क्या उपाय कर रहे हैं बड़ी आयु का होने के लिए?''

''इस उपाय को योगाभ्यास कहते हैं। उसमें सबसे पहली बात है सत्य बोलना। सत्य बोलने का मतलब है, अपने साथ, अपने सम्पर्क में आनेवाले लोगों के साथ और अपने से दूर रहनेवालों के साथ वह व्यवहार करना जो स्वयं के प्रति ठीक प्रतीत होता है।''

इस समय तक वे स्टेशन पर पहुँचे गए थे। बातचीत बन्द हो गई। स्टेशन-मास्टर बाबू साहब से मिलने के लिए चला आया। वह अपनी एक अर्ज़ी, जो प्रतापगढ़ के डिप्टी कलेक्टर के सामने दी थी, के विषय में कहने लगा। चन्दनसिंह उसकी बात को समझ नहीं सका। इस कारण उसने उन दोनों की बातों में रुचि छोड़ दी। वह प्लेटफॉर्म पर इधर-उधर टहलने लगा।

लक्ष्मणसिंह स्टेशन-मास्टर के कमरे में चला गया। मोटर में आने से वे समय से दो घंटे पूर्व आ गए थे, इस कारण चन्दनसिंह के लिए समय निकालना कठिन हो गया।

बेनी बाबू साहब का बिस्तर और सूटकेस प्लेटफॉर्म पर रखकर स्वयं उसकी रखवाली के लिए वहाँ खड़ा था। चन्दनसिंह बेकार होने से उससे पूछने लगा, ''बाबू साहब अपने दामाद के घर गए थे क्या?''

''नहीं, वे तो आपको स्टेशन ले-जाने के लिए सरवरगंज गए थे। परन्तु वहाँ गए तो समधिन जी से मिलने जा पहुँचे। वहाँ तो वे पाँच मिनट ही ठहरे थे। जब हम गाँव से आपकी हवेली की तरफ आने लगे थे तो आप सड़क की ओर जाते दिखाई दिए। इस कारण हम आपकी तरफ घूम गए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले भी कभी ताई जी से मिलने के लिए जाते थे?"

"जब वे आपके पिता जी से मिलने के लिए आए थे और पंडित जी उनके साथ थे, तब से केवल एक दिन ही सरवरगंज आए थे। आज भी तो उनसे मिलने के निमित्त नहीं आए थे।"

"दादा कर्मजीत के विषय में क्या समझते हैं?"

"मेरी पत्नी बबुआइनों की मालिश करने जाया करती है। मालिश करते हुए वह कभी जमाई बाबू की बात कहा करती है तो दोनों बबुआइनें उसकी प्रशंसा करती हैं।"

"क्या प्रशंसा करती हैं?"

"जिस दिन आप और वे महोना आए थे और आपको चाय-पानी भीतर ले-जाकर पिलाया गया था, उस दिन घर की सब औरतों ने आप दोनों को देखा था। आपसे बातें भी की थीं। उन्हीं बातों से वे कहा करती हैं कि जमाई बाबू बहुत हँसमुख और विद्वान आदमी हैं।"

चन्दनसिंह को उस दिन की बातें स्मरण आ गई थीं। कर्मजीत ने निस्संकोच भाव से अपनी सास, सास की जेठानी और दादी-सास तथा फूफी-सास से बातें भी की थीं। उन बातों में से कई तो चन्दन की समझ में ही नहीं आई थीं। इसपर भी चन्दनसिंह ने कर्मजीत की बातों में सब औरतों को रुचि लेते देखा।

आखिर गाड़ी आने का सिगनल हुआ तो वह टिकट लेने जा पहुँचा। आज वह फर्स्ट क्लास का टिकट लेना चाहता था। जब वह टिकट बाबू से टिकट माँगने लगा तो टिकट बाबू ने कह दिया, "आप महोना के बाबू साहब के साथ जा रहे हैं न?"

"हाँ।"

"तो आपके लिए टिकट लिया जा चुका है।"

चन्दनसिंह को यह विचित्र प्रतीत हुआ।

वह खिड़की से पीछे हट प्लेटफॉर्म पर आया तो लक्ष्मणसिंह स्टेशन-मास्टर से बातें करता हुआ प्लेटफॉर्म पर टहल रहा था। लक्ष्मणसिंह से बात तो गाड़ी के डिब्बे में बैठ जाने के बाद ही हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दनसिंह ने उससे पूछा, ''आपने मेरा टिकट ले लिया है क्या?''

''तो तुम क्या बिना टिकट के यात्रा करना चाहते थे?''

चन्दनसिंह हँस पड़ा। उसने कहा, ''मैं तो टिकट लेने के लिए गया था: परन्तु बाबू ने दिया नहीं। यह कह दिया कि मेरे लिए टिकट ले लिया गया है।''

''हाँ, मैंने उससे कह दिया था कि यदि तुम टिकट लेने आओ तो तुमको ऐसा कह दिया जाए।''

''कितना दाम लगा है?''

''दाम मुझको मिल गए हैं।''

''किससे मिल गए हैं?''

''कर्मजीत के श्वसुर ने दाम दे दिए हैं। उसने कहा था कि आपके लिए फर्स्ट क्लास का टिकट खरीदा जाए।''

''मतलब यह कि आपने दाम दे दिए हैं।''

''मैं तो तुम्हारा मित्र हो गया हूँ। कर्मजीत का श्वसुर एक दूसरा ही व्यक्ति है।''

: ४ :

इसपर दोनों हँसने लगे। अब फिर लम्बी बातें आरम्भ हो गईं। लक्ष्मणसिंह ने पूछ लिया, ''तुम्हारे पिता तुमसे नाराज़ तो नहीं?''

''किसलिए नाराज़ होते?''

''वे हमसे नाराज़ हैं और तुम उस दिन मेरे साथ महोना चले गए थे।''

''रात पूछा तो था कि मैं कहाँ गया था। मैंने बताया तो फिर पूछने लगे, वहाँ क्या हुआ, किन-किन से बातें हुईं? आपकी लड़की भी वहाँ थी क्या? मैंने सब सत्य बात बता दी थी। कर्मजीत की कुछ बातें जो मैं समझ सका था वह भी बताईं। अन्त में उन्होंने मुझको कहा था कि मुझे वहाँ नहीं जाना चाहिए था।

''मैंने पूछ लिया, 'किसलिए?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'वे हमारे शत्रु हैं।'

" 'क्या शत्रुता की है उन्होंने हमारे साथ?'

" 'उन्होंने अपनी लड़की जबरदस्ती हमारे परिवार में घुसेड़ दी है।'

"मैंने कहा, 'कुछ दे ही रहे हैं, ले तो नहीं रहे?'

"वे नाराज़ तो थे ही, तुरन्त उससे भी ज़बरदस्त बात हो गई।"

"क्या?"

"अगले दिन जब ताईं जी हवेली से अपने नये मकान में जाने लगीं तो बाबा उनको अपने प्रयोग का सामान ले-जाने से मना करने लगे। उन्होंने कहा था, 'एक तिनका भी इस घर से तुमको नहीं ले-जाने दूँगा।'

"इसपर ताई ने कहा था, 'तो ये पहने हुए कपड़े भी उतार दूँ?'

" 'किसलिए?' पिता जी ने उसके भाव को न समझते हुए पूछा।

" 'इसलिए कि गाँववाले देख लें कि अपने भाई की विधवा को नंगा कर घर से निकाला है।'

"ताई की इस बात को सुन मुझे क्रोध आ गया और जब पिता जी कर्मजीत से कुछ छीनने के लिए लपके तो मैंने उनको रोका और फिर हम दोनों में हाथापाई हो गई। मोहन दादा आए तो उसने भी मेरी सहायता की और पिता जी को हम दोनों भाइयों ने एक कमरे में बन्द कर दिया और ताई को जो कुछ वे ले-जाना चाहती थीं, ले-जाने दिया।"

"चन्दनसिंह! तुम सत्य ही आयु में द्रुतगति से बड़े हो रहे हो।"

"तो ये बड़े होने के लक्षण हैं?"

"निस्सन्देह! मैं यह देख प्रसन्न हुआ हूँ कि तुम अब सयाने हो रहे हो।"

"यह तो मैं जानता नहीं, परन्तु उस दिन पिता जी का व्यवहार मुझको पसन्द नहीं आया था।"

"मैं तो यह कह रहा हूँ कि जिस सतर्कता से तुमने समझा और फिर उसपर कार्य कर विचार किया है—यह आयु के परिपक्व होने के लक्षण हैं।"

"मुझे इसमें कुछ विशेषता प्रतीत नहीं हुई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होने लगेगी। तनिक और अभ्यास होने दो। अच्छा चन्दन! अब मैं तुमको एक काम सौंप रहा हूँ। करोगे क्या?"

"बताइए।"

"मैं बिना अपने को प्रकट किए कर्मजीत इत्यादि और उनकी माता की सहायता करना चाहता हूँ। बताओ, इसमें मेरी सहायता करोगे?"

"पूर्ण बात बता दीजिए।"

"मैं कर्मजीत को वज़ीफे के रूप में पचास रुपया मासिक और उसकी माँ को एक सौ रुपया मासिक भेजना चाहता हूँ। परन्तु अपना नाम बीच में नहीं आने देना चाहता। वह तुम अपने कहकर भेज सकोगे?"

"वैसे तो मैं एक सौ पचास रुपया अपनी ताई को दे आया हूँ। परन्तु आगे कहाँ से इतना भेज सकूँगा, समझ नहीं सका।"

"वह मैं तुमको भेज दूँगा। वास्तव में आज मेरा लखनऊ जाना इसी प्रयोजन से है। मैं वहाँ जाकर कोई आदमी इस काम को करने के लिए ढूँढना चाहता था। यह तो परमात्मा की कृपा ही समझनी चाहिए कि तुम मिल गए हो। तुमने अपने को विश्वास के योग्य सिद्ध कर दिया है।"

"मैं करने का यत्न करूँगा।"

"मैं जानता हूँ कि यह कठिनाई का समय शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। इसपर भी साल-छः महीने लग सकते हैं।"

"तो कुछ चाराजोई हो रही है?"

"वकील से राय करूँगा।"

"घर पर तो फैसला होगा नहीं। पिता जी मानेंगे नहीं।"

"मैं यह समझ गया हूँ। इसी कारण वकील की सहायता की आवश्यकता पड़ी है।"

"मैं आपके प्रयत्नों को रुचिपूर्वक देखूँगा।"

इस प्रकार बात बन गई। लक्ष्मणसिंह ने पूछ लिया, "तुम जानते हो क्या कि कर्मजीत कहाँ ठहरा है?"

"वह नन्दलाल की धर्मशाला में ठहरा है। मैं उससे मिलने का विचार करता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उसको अपनी कोठी में ले-जाकर ठहराने का यत्न करूँगा।"

"तो मुझे कैसे पता चलेगा?"

"मैं तुमको कल तुम्हारे होस्टल में मिलूँगा। क्या नम्बर है तुम्हारे कमरे का?"

चन्दनसिंह ने नम्बर बताया तो लक्ष्मणसिंह ने स्मरण कर लिया। इसके उपरान्त अन्य विषयों पर बात होने लगी।

रात के साढ़े आठ बजे गाड़ी लखनऊ पहुँची। चन्दन को लेने के लिए निर्मला प्लेटफॉर्म पर आई हुई थी। वह सैकण्ड क्लास का डिब्बा देख रही थी। चन्दन फर्स्ट क्लास से निकला तो निर्मला का निराश मुख देख मुस्कराया।

लक्ष्मणसिंह तो चन्दन से पहले ही उतर गया था। उसने चन्दन को उतरते ही कहा, "वह देखो चन्दन! तुमको सैकण्ड क्लास के डिब्बे में न देख वह निराश हो रही है।" और वह हँस पड़ा।

चन्दन ने उसे देख लिया था। इस कारण वह बिना एक भी शब्द और कहे अपना सूटकेस और मिठाई की गाँठ उठाए निर्मला की तरफ चल पड़ा। उसके पास पहुँच फिर द्वार की ओर चल दिया।

निर्मला ने चलते हुए कहा, "थर्ड क्लास में आए हैं?"

"नहीं, फर्स्ट।" यह कहते ही उसे लक्ष्मणसिंह की याद आ गई। उसने कहा, "निर्मला, ज़रा ठहरो! एक सज्जन आदमी को नमस्कार कर लूँ।"

दोनों ठहर गए। लक्ष्मणसिंह बेनी और कुली से सामान उठवाए आ रहा था। वह चन्दन के समीप आ पूछने लगा, "तुम तो मुझे भूल ही चले थे।"

"हाँ, गलती हो गई थी। ये मुझे लेने के लिए आई हैं। मैं इनके घर जा रहा हूँ। कल प्रातः होस्टल में पहुँचूँगा।"

"अच्छी बात। कल मध्याह्नोत्तर मैं तुमको तुम्हारे कमरे में मिलूँगा।"

चन्दन ने नमस्ते की तो लक्ष्मणसिंह ने निर्मला को भी नमस्ते कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला ने पूछ लिया, "यह कौन आदमी है ?"

"एक हमारा नया सम्बन्धी बना है। ताई के बड़े लड़के की इसकी लड़की से सगाई हुई है।"

"कर्मजीत की ?"

"हाँ।"

"आपने बताया है कि मैं कौन हूँ ?"

"यही तो विस्मय करने की बात है कि गाड़ी से उतरते ही इसने मुझे बताया है कि तुम मेरी प्रतीक्षा कर रही हो, और फिर तुमको नमस्ते कर गया है।"

"मैं समझी थी कि तुमने मेरे विषय में कुछ बताया है।"

"नहीं, कुछ नहीं।"

निर्मला ने कहा, "बाहर मोटर में माता जी भी आई हैं।"

"उनको लाने का कष्ट क्यों किया ?"

"मैं नहीं लाई। वे स्वेच्छा से आई हैं।" इस समय वे स्टेशन से निकल मोटरगाड़ी की ओर जा रहे थे। उनको समीप आते देख सरस्वती गाड़ी से उतरकर बाहर आ गई। चन्दन ने उसको नमस्कार किया तो उसने कहा, "चन्दन! आज रात तो तुम हमारे यहाँ ही रहोगे। इसी कारण मैं आई हूँ।"

"मौसी, बहुत कष्ट किया है। मैं तो वैसे भी वहीं आनेवाला था। अपने घर की बहुत बातें बतानी हैं आपको।"

"ओह! सगाई हो गई है तुम्हारी ?"

"नहीं मौसी! एक नाटक हो गया है। घर चलकर बताऊँगा।"

सब मोटर में बैठकर हज़रतगंज की ओर चल दिए।

राजबहादुर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। भोजन किया गया और फिर बहुत देर तक बातें होती रहीं। निर्मला अपने माता-पिता को चन्दन से बातें करते छोड़ स्वयं सोने के लिए चली गई। यह पहले से विलक्षण बात हुई थी। पहले माता-पिता उठकर चले जाया करते थे और निर्मला कितनी देर तक बाद में बातें करती रहती थी। इसपर चन्दन को विस्मय हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले तो सरस्वती उसको स्टेशन पर लेने के लिए आई। यह पहले से विलक्षण था। दूसरे, निर्मला उठकर सोने के लिए पहले चली गई थी। इसका अर्थ वह यह समझा कि कदाचित् निर्मला ने चौबीस दिसम्बर को स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर हुई बात माता-पिता को बता दी है और उसका परिणाम ही यह हुआ है। वह निर्मला से एकान्त में इस विषय पर पूछताछ करना चाहता था।

जब राजबहादुर और सरस्वती उठे तो वह भी नियत कमरे में चला गया। वह जब भी मौसी के घर में रहा करता था उसको वही कमरा मिला करता था। वह कपड़े बदल रज़ाई में घुसा ही था कि धीरे से दरवाज़ा खोल निर्मला भीतर आ गई। वह उठकर खाट पर बैठ गया। निर्मला ने खड़े-खड़े ही कहा, "मैं आपको एक बात बताने के लिए आई हूँ।"

"क्या?"

"मेरे विवाह का प्रबन्ध हो रहा है।"

"सत्य? कहाँ?"

"लखनऊ के एक रईस हैं। उनका लड़का डिप्टी कलेक्टर है। दो दिन पहले वह मुझे देखने के लिए आया था और ऐसा प्रतीत होता है कि सब-कुछ निश्चय हो गया है।"

"और तुमने भी उसे पसन्द कर लिया है क्या?"

निर्मला खड़ी-खड़ी ही बता रही थी। वह चन्दन के प्रश्न का उत्तर विचार करने लगी थी। इसपर चन्दन ने कह दिया, "मैं तो पिछले आठ दिन में अति मधुर स्वप्न लेता रहा हूँ। तो वे सब गए?"

"मैं कुछ नहीं जानती।" निर्मला ने भर्राई आवाज़ में कहा। चन्दन ने समझा कि वह रो रही है। उसने उसके मुख पर देखा। उसकी आँखें तरल दिखाई दे रही थीं। "ओह!" चन्दन के मुख से निकल गया। परन्तु निर्मला एक भी शब्द और कहे बिना वहाँ से चली गई।

चन्दन विचार करता था कि लक्ष्मणसिंह की लड़की को कर्मजीत ले गया। उस सगाई पर वह बहुत प्रसन्न था। उसका विचार था कि निर्मला उसे मिल रही है। और अब वह भी मुट्ठी में से बालू की भाँति चली गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन विचारों से उसका मस्तक भन्ना उठा और वह रात-भर निराशा में निमग्न हो सो नहीं सका। धीरे-धीरे रात व्यतीत हो गई, परन्तु उसे एक भी झपकी नहीं आई। जब मकान की बैठक में लगे क्लॉक ने छः बजाए तो वह उठा और शौचादि के लिए चल दिया। घर के सब प्राणी अभी सो ही रहे थे।

पानी बहुत ठंडा था और नौकर इत्यादि कोई जागा नहीं था। इस कारण उसने मुख-हाथ धो लिये और कपड़े पहन जाने की तैयारी करने लगा। रात-भर जागने से उसकी आँखें भारी हो रही थीं। वह कपड़े पहन बैठक में जा बैठा और आशा करने लगा कि निर्मला आएगी।

आई सरस्वती। उसने चन्दन को कपड़े पहन तैयार देखा तो पूछ लिया, "तो तुम जाने के लिए तैयार हो गए हो?"

"हाँ, मौसी!"

"स्नान किया है?"

"नहीं, आज स्नान नहीं करूँगा।"

"तो ठहरो, मैं अल्पाहार तैयार करवा देती हूँ। नौ बजने से पहले तुमको मोटर से भेज देंगे।"

चन्दन तो निर्मला से बात करने की प्रतीक्षा में था। वह आ ही नहीं रही थी। वह बैठक-घर में बैठा प्रतीक्षा कर रहा था।

साढ़े आठ बजे निर्मला बुलाने के लिए आई, "आइए, खाना तैयार है।"

निर्मला बैठक के द्वार पर खड़ी हो उसको बुला रही थी। इस बार वह आया तो उसको एक और अन्तर प्रतीत हो रहा था। निर्मला उसको 'आप' कहकर पुकार रही थी। पहले वह नाम लेकर अथवा भैया कहकर पुकारा करती थी।

वह विचार करने लगा था—यह आदरयुक्त सम्बोधन विवाह में बाधक हो रहा है अथवा वह भाई इत्यादि का सम्बोधन था? एक बात निश्चित थी कि वह आत्मीयता का सूचक नहीं था। तो उसको उससे नाराज़ होने में कोई कारण उपस्थित हुआ है? वह यही सोचता हुआ खाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने के कमरे में जा मेज़ पर बैठ गया। राजबहादुर, सरस्वती और निर्मला पहले ही बैठे थे।

चन्दन के आते ही राजबहादुर ने कहा, "क्यों चन्दन, यह तुम्हारी पढ़ाई का अन्तिम वर्ष है?"

"नहीं मौसा जी!" चन्दन का सतर्क उत्तर था, "मैं तो अभी बारहवीं श्रेणी में पढ़ रहा हूँ। मैं एम० ए० तक पढ़ना चाहता हूँ।"

"क्या लाभ होगा?"

"मैं अभी और ज्ञान प्राप्त करूँगा।"

"मैं ज्ञान प्राप्त करने से मना नहीं कर रहा, परन्तु प्रश्न यह है कि किस दिशा में ज्ञान प्राप्त करना है? मैंने विचार किया है कि जो दिशा कॉलेज में ज्ञान को दी जाएगी वह तुम्हारे किसी काम की नहीं होगी। एक दिशा मैं बताता हूँ। तुम परीक्षा देते ही हमारी दुकान पर आ जाओ। एक वर्ष के प्रशिक्षण में तुम मेरे व्यापार को सँभालने के योग्य हो जाओगे और तब मैं अपने ज्ञान की वृद्धि एक अन्य दिशा में करने लगूँगा।

"हमने यह निश्चय किया है कि इस मास के अन्त तक निर्मला को ससुराल विदा कर दें और फिर एक वर्ष में तुमको व्यापार देकर हरिद्वार अथवा किसी पवित्र स्थान पर जाकर अपना भविष्य बनाएँ।"

"तो बी० ए०, एम० ए० की पढ़ाई व्यर्थ है?"

"वह पढ़ाई नहीं। पढ़ाई तो समाप्त हो गई। पढ़ाई से मेरा अभिप्राय है भाषा इत्यादि का ज्ञान। इनकी पढ़ाई करने के उपरान्त कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। हिन्दुस्तान में बी० ए०, एम० ए० की पढ़ाई तो सरकारी नौकर बनने की योग्यता उत्पन्न करने की ही है। वह तुमको बनना नहीं है। एक ज़मींदार का लड़का सरकारी मुलाज़िम न तो हो सकता है न ही होकर निर्वाह कर सकता है। तुम बनोगे या तो ज़मींदार अथवा मेरी तरह व्यापारी।

"हमारे शास्त्रों में दोनों को वैश्यवृत्ति कहा है। बस यही तुम्हारे लिए ठीक है। अफसर का काम है तो ब्राह्मण का, परन्तु शास्त्र कहते हैं कि जो ब्राह्मण राजा की नौकरी करने लगता है वह शूद्र हो जाता है। वह तुम बनना पसन्द नहीं करोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन का समाधान नहीं हो रहा था। उसने पूछ लिया, ''मौसा जी! ये डिप्टी कमिश्नर और अन्य सरकारी अफसर शूद्र हैं क्या?''

''हाँ, सब-के-सब। उनमें और चपरासी में अन्तर इतना है जितना एक मेरे-जैसे मोटर की दूकान करनेवाले में और सड़क के किनारे बैठे बाइसिकिल मरम्मत करनेवाले में। हम दोनों स्वतन्त्र हैं, परन्तु एक अधिक पैसा कमाता है और दूसरा कम। इसी प्रकार डिप्टी कमिश्नर और उसका चपरासी भी अपने से बड़े अफसर का हुक्म मानते हैं। दोनों को कुछ काम सौंपे गए हैं। उन कामों में उनको कुछ सीमा तक स्वतन्त्रता भी है। इसपर भी दोनों अपने से उच्च अधिकारी की उचित-अनुचित आज्ञा मानते ही हैं। दोनों के दोनों शूद्र हैं। एक दो सहस्र वेतन पाता है और दूसरा बीस रुपये।''

चन्दन राजबहादुर की युक्तियाँ आधी ही सुन रहा था। बीच-बीच में उसका चित्त निर्मला की समस्या पर चला जाता था। अतएव वह राजबहादुर के प्रस्ताव का खण्डन नहीं कर सका। अल्पाहार समाप्त होने तक राजबहादुर समझने लगा था कि चन्दन उसकी दूकान समेटने के लिए राज़ी हो रहा है। उसने अन्त में कह दिया, ''परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम इन चार महीनों में चित्त लगाकर पढ़ाई करो।''

अल्पाहार समाप्त हुआ और चन्दन को मोटर में बैठाकर कॉलेज भेज दिया गया। उन दिन निर्मला उसे छोड़ने नहीं गई।

: ५ :

चन्दन ने मौसा और मौसी को पिछली रात सरवरगंज में जो कुछ पिछले दस दिन में हुआ, सब बता दिया था और राजबहादुर का चन्दन को गाँव से निकालकर नगर में लाने का प्रस्ताव उसी घटना की प्रतिक्रिया-मात्र थी।

सरस्वती चन्दन से स्नेह रखती थी और वह उसे अपना लड़का मान पूर्ण कारोबार उसके नाम कर देने की इच्छा रखती थी।

चन्दनसिंह के कमरे का साथी अभी घर से नहीं आया था। कमरे की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दो चाबियाँ थीं। उसने द्वार खोला और पिछली रात की उनिद्रा मिटाने के लिए वह पलँग पर लेटते ही सो गया।

वह समय पर कॉलेज नहीं पहुँच सका और देर हो जाने पर फिर कॉलेज गया ही नहीं। उसने मध्याह्न का भोजन किया और फिर कमरे में आकर लेटा और सो गया। वह दो बजे मध्याह्नोत्तर जगा और फिर उत्सुकता से लक्ष्मणसिंह की प्रतीक्षा करने लगा।

लक्ष्मणसिंह चार बजे आया और कर्मजीत उसके साथ था। लक्ष्मणसिंह ने आते ही बताया, ''मैंने कर्मजीत को उस धर्मशाला से निकालकर महोना कोठी में ले-जाकर रख दिया है। मैं इसे यहाँ की एक आयुर्वेदिक पाठशाला में प्रविष्ट करा आया हूँ। ये मध्याह्न को ग्यारह से तीन बजे तक पाठशाला में पढ़ेंगे और प्रातः-सायं एक वैद्य जी की दुकान पर अनुभव प्राप्त करेंगे।

''यह खर्चा तुमको देना चाहिए। तुम यदि यत्न करोगे तो तुम्हें सरवरगंज से खर्चा आ जाएगा। समझे हो न चन्दन?''

''हाँ, भापा!'' चन्दन का अभिप्राय यह था कि वह समझ गया है कि रुपया लक्ष्मणसिंह भेजेगा और वह कर्मजीत को यह बताएगा कि सरवरगंज से खर्चा आ रहा है।

चन्दन ने जब हाँ की तो लक्ष्मणसिंह ने कहा, ''अब मेरे साथ चलो। हम चाय पीने चलेंगे।''

''कहाँ?''

''तुम तैयार हो जाओ। हम मोटर में चलेंगे और फिर वहाँ चलकर ही शेष बात करेंगे।''

चन्दनसिंह ने कपड़े पहने और उनके साथ चल पड़ा। तीनों कार्लटन होटल के रिसैप्शन-हॉल में जा पहुँचे। चाय का ऑर्डर दे लक्ष्मणसिंह ने बात आरम्भ कर दी, ''चन्दन! नलिनी को जानते हो?''

''मोहन दादा की पहली पत्नी?''

''हाँ, वह दो दिन हुए फैजाबाद गई हुई थी। उसका मतलब था कि अपने लड़के के लिए खर्च का दावा तुम्हारे भाई से कचहरी में कर दे।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके वकील से भी मिला हूँ और उसने यह राय दी है कि खर्च के दावे के स्थान पर संपत्ति के बँटवारे का दावा किया जाए। सो उसका दावा तैयार करने के लिए कह दिया गया है।

"मैंने भी यही ठीक समझा है। ज़मींदारी और संपत्ति तुम्हारे पिता और भाई के हाथ में सुरक्षित नहीं।"

"पर आप नलिनी को कैसे जानते हैं? आप उसकी सहायता क्यों कर रहे हैं?"

"मेरा उससे सम्बन्ध है। वह मेरी पत्नी के फूफा की लड़की है। इसके अतिरिक्त उसके परिवारवाले विचारों से मेरे पड़ोसी हैं। पड़ोसी के अर्थ समझ गए हो न?"

"जी। परन्तु चंचल भाभी का क्या होगा?"

"क्यों, उससे तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?"

"वह दादा की पत्नी है। वैसे बहुत समझदार और सुशील है।"

"ये सब बातें जड़ शरीर से सम्बन्ध रखती हैं। तुम्हारा भाई तुम्हारा अपना है, केवल इस कारण कि उसका शरीर और तुम्हारा शरीर एक ही वर्कशॉप में बने हैं। तुम और तुम्हारे भाई स्वभाव, आचार और विचार में भिन्न-भिन्न हो, यह इस कारण कि तुम दोनों एक ही शिक्षण-संस्था में नहीं पढ़े। मुझे पता चला है कि तुमपर तुम्हारी ताई का प्रभाव अधिक रहा है और मोहन पर तुम्हारे पिता का।

"ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य भी कई कारण हैं कि तुम और वे एक वातावरण एवं शिक्षण-केन्द्र के रहनेवाले नहीं, अर्थात् तुम पैदा तो एक ही स्थान से हुए हो परन्तु तुम्हारा रहन-सहन भिन्न-भिन्न वातावरण में हुआ है। मेरी परिभाषा में तुम पड़ोसी नहीं हो। इसी प्रकार मैं नलिनी के माता-पिता को जानता हूँ। वे मेरे और तुम्हारे अधिक समीप हैं, अभिप्राय यह है कि पड़ोसी हैं। चंचल के माता-पिता हमारे पड़ोसी प्रतीत नहीं हुए।

"सभ्यता और सद्व्यवहार भी बनावटी हो सकते हैं। ये भी शरीर के गुण ही हैं। स्वभाव और व्यवहार यदि विचार के अधीन हों तो मनुष्यता के अधिक समीप होते हैं। मनुष्य से अभिप्राय मनुष्य की आत्मा से है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आत्मा, बुद्धि और मन तीनों बहुत समीप की वस्तु हैं। इनसे ही वास्तविक मनुष्य का अनुमान लग सकता है। सभ्यतापूर्ण व्यवहार मुलम्मा-मात्र भी हो सकता है।"

इस विचार के उपस्थित होने पर चन्दन भी चंचल के व्यवहार पर पुनरावलोकन कर रहा था। चंचल उससे मीठी-मीठी बातें करती थी। उससे विवाह और स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की चर्चा भी करती थी, परन्तु जब वह उससे घनिष्ठता अनुभव करने लगता था तो वह उसको कान पकड़ व्यवहार की सीमा के भीतर कर देती थी और फिर वैसी ही बातें करने लगती थी।

वह सरवरगंज में उसके व्यवहार का विश्लेषण नहीं कर सका था। आज लक्ष्मणसिंह के सत्य व्यवहार की व्याख्या सुन वह उसके व्यवहार को समझने लगा था। वह जानने लगा था कि उसका व्यवहार सर्वथा कृत्रिम था। वह किसी प्रयोजन-विशेष से उसे अपने साथ बाँध रखना चाहती थी। साथ ही उसका उसके प्रति किसी प्रकार का अनुराग नहीं था।

मधुर बोलना अथवा मैत्री का भाव प्रकट करना विचार-समानता के लक्षण नहीं भी हो सकते थे। अपने विचारों में मग्न वह लक्ष्मणसिंह की बातें सुन नहीं रहा था। लक्ष्मणसिंह यह जान गया और पूछने लगा, "चन्दन! कहाँ चले गए हो?"

चन्दन हँस पड़ा और अपने मन की स्थिति का वर्णन करने लगा, "जी, मैं सरवरगंज में दादा मोहन के घर चला गया था और चंचल भाभी के व्यवहार को आपके कथन के प्रकाश में मनन करने लगा था।"

"ओह! ठीक है। तो क्या देखा है?"

"आपके कथन का समर्थन पाया है। उसका व्यवहार श्रेष्ठ बुद्धिजन्य नहीं है। वह किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कृत्रिम प्रतीत हुआ है।"

"बहुत खूब, चन्दन! तुम दिन-प्रतिदिन बड़े होते जाते हो।"

चन्दन मुस्कराया।

इस समय कर्मजीत ने एक अन्य तरह कर दी, "चंचल भाभी मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादा से विवाह के पूर्व मुझसे विवाह की इच्छा प्रकट कर चुकी है।''

''सत्य?''

दोनों सुननेवाले विस्मय में कर्मजीत का मुख देखते रह गए।

कर्मजीत ने बताया, ''चंचल परीक्षा देकर प्रतापगढ़ से लौटी थी। उसकी माँ एक दिन महोना से आते-आते मेरे साथ हो गई। धर्म और विश्व मेरे साथ थे। वह पूछने लगी, 'तुम राजरानी के बेटे हो न?'

''जब मैंने हाँ में उत्तर दिया तो हमारे नाम पूछने लगी। हमारे जाने के स्थान और कार्य के विषय में पूछने लगी। पूर्ण जानकारी के उपरान्त वह कुछ निराश प्रतीत हुई थी। इसपर भी उसने कहा, 'मुझे तुमसे कुछ काम है।'

'' 'बताओ!'

'' 'मेरे साथ मेरे घर तक आओ।'

'' 'हम सब आवें?'

'' 'नहीं, इनकी आवश्यकता नहीं। ये जाकर तुम्हारी माँ को बता सकते हैं कि तुम शीघ्र ही आ रहे हो।'

'' 'नहीं, हम इकट्ठे ही चलेंगे। ये घर के बाहर ठहरेंगे और मैं आपकी बात सुन इनके साथ ही घर जाऊँगा।'

''भैरोसिंह की पत्नी मुझे अपने घर ले गई और वहाँ बैठक में बैठा चंचल को बुला लाई। उसने लड़की का मुझसे परिचय कराया जिसकी आवश्यकता नहीं थी। मैं उसे पहले से ही जानता था। मैंने हाथ जोड़ उसे कह दिया, 'बहिन चंचल को तो मैं पहले से ही जानता हूँ।'

''इसपर उसकी माँ ने कहा, 'हम इसका विवाह तुमसे करना चाहते हैं, इसलिए इसको बहिन मत कहो! मैं तुमको यहाँ इसलिए लाई हूँ कि तुम इसे देख लो। यदि तुम दोनों ठीक समझो तो बात तुम्हारे माता-पिता जी से की जाए।'

''मैंने कह दिया, 'मुझको यह तरीका स्वीकार नहीं। यदि तुम ठीक समझो तो इसे मेरी माता जी को दिखा दो। वे मानेंगी तो मैं मान जाऊँगा।'

'' 'यह मान गई है, तभी तो तुमको यहाँ लाई हूँ। यदि तुम अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता जी से कहो तो वे आकर इसे देख जाएँगी।'

''मैंने इतना और कह दिया, 'मैंने सब बात कह दी है और इससे अधिक न मैं कहूँगा और न करूँगा।'

''इतना कह मैं वहाँ से चला आया। मैंने माँ से कुछ नहीं कहा। उसके कई मास बाद उसका मोहन दादा के साथ विवाह का समाचार सुना गया।''

''उसको तुमसे अच्छा आदमी मिल गया है। ऐसा आदमी जिसने न तो अपनी माँ की स्वीकृति माँगी, न ही घर में किसीको बताया।''

इसपर चन्दनसिंह ने कह दिया, ''मुझको तो सन्देह है कि मोहन ने पिता जी से राय करके ही विवाह किया है।''

''इस सन्देह का आधार क्या है?''

''वह यह कि कर्म दादा की सगाई अस्वीकार की तो इनको घर से निकाल दिया है और मोहन दादा ने दूसरा विवाह किया है तो उसे एक दिन के लिए भी कार्यालय के काम से पृथक् नहीं किया।''

''यह इस प्रकार भी तो हो सकता है कि तुम्हारे पिता ज़बर्दस्त के सामने झुक जाते हैं और दुर्बल के सिर चढ़ते हैं।''

अब कर्मजीत ने फिर अपनी सम्मति बता दी। उसने कहा, ''मेरा तो विचार है कि चाचा जी हमको घर से निकालना तो पहले ही चाहते थे। वे हमको बाप-दादाओं की सम्पत्ति में से भाग देना नहीं चाहते थे। यह सगाई की बात तो बहाना बन गई है।''

''परन्तु वे ऐसा क्यों करना चाहते हैं? ज़मींदारी तो बँटेगी।''

''यह कुंठित बुद्धि का लक्षण है। वे भविष्य में दूर तक कुछ भी देख नहीं सकते।''

इसपर लक्ष्मणसिंह ने बात बदल दी, ''चन्दन! वह कल तुमको स्टेशन पर लेने आनेवाली लड़की कौन थी?''

''वह मेरी मौसी की लड़की है। मेरे मौसा जी हज़रतगंज में मोटर की दुकान करते हैं। दुकान का नाम है यूनिवर्सल मोटर कार डिपो।''

''ओह! तो वह लड़की राजबहादुर जी की है?''

''आप उनको जानते हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हमारी ज़मींदारी की चार गाड़ियाँ हैं। वे हमने उनसे ही खरीदी हैं और उनसे ही सर्विसिंग कराते हैं।"

"मैं समझा था कि आप निर्मला को भी जानते हैं। कल आपने उससे भी नमस्ते की थी।"

"मैंने उसे पहले भी देखा है। चौबीस दिसम्बर को प्रातः सात बजे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर तुमसे बातें कर रही थी और बातों-बातों में तुम गाड़ी से छूट रहे थे। मैं समझा था कि वह तुम्हारी प्रेमिका है। तुमने उसके विषय में उस दिन झूठ बोला था।"

चन्दन मुस्कराकर चुप रहा। लक्ष्मणसिंह ने कह दिया, "मौसी की लड़की से भी विवाह के उदाहरण मिलते हैं, यद्यपि यह कुछ अच्छी बात नहीं।"

चन्दन ने लक्ष्मणसिंह के अनुमान को गलत नहीं बताया। वह गलत था भी नहीं। परन्तु उसने वस्तुस्थिति का वर्णन करने के लिए कह दिया, "उसकी सगाई हो चुकी है।"

"किससे?"

"कोई डिप्टी कलेक्टर हैं।"

"लड़की मान गई है?"

"उसने ही मुझे बताया है।"

लक्ष्मणसिंह ने फिर बात बदल दी। उसने कहा, "मैं अभी महोना जा रहा हूँ। इसी गाड़ी में लौट रहा हूँ। यह गाड़ी यहाँ मरम्मत होने आई थी, और यहीं पड़ी थी, इसे भी ले-जा रहा हूँ। फिर एक सप्ताह बाद तुम लोगों से मिलूँगा।"

अब तक चाय समाप्त हो गई थी। लक्ष्मणसिंह ने दाम चुकाए तो फिर तीनों उठ खड़े हुए।

: ६ :

लक्ष्मणसिंह तो वहीं से प्रतापगढ़ के लिए चल पड़ा और चन्दन कर्मजीत को इक्के में लेकर महोनावालों की कोठी की ओर चल पड़ा। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखना चाहता था कि कर्मजीत को रहने के लिए कैसा स्थान मिला है।

मार्ग में चन्दन ने पूछना आरम्भ कर दिया, "दादा! बाबू साहब कब मिले थे?"

"बहुत प्रातःकाल धर्मशाला में मुझे ढूँढते हुए आ गए। उन्होंने मेरे ठहरने का स्थान देखा और फिर यह कहकर कि बहुत दिन तक वहाँ रहा नहीं जा सकेगा, मुझे अपनी कोठी में ले आए। धर्मशाला में तीन दिन तक ठहरने का ही प्रबन्ध है, परन्तु मेरे आग्रह पर मुंशी ने मुझे एक सप्ताह तक रहने की स्वीकृति दे दी थी। उसमें से चार दिन व्यतीत हो चुके थे। मैं रहने के लिए स्थान ढूँढ रहा था और वह मिल नहीं रहा था, इस कारण बाबू साहब के प्रस्ताव को स्वीकार करने के अतिरिक्त अन्य कोई चारा नहीं था।"

"रुपये-पैसे का क्या प्रबन्ध है?"

"माँ ने आते समय पचास रुपये दिए थे, उससे काम चल रहा है। समाप्त होने तक कुछ-न-कुछ प्रबन्ध कर लूँगा। जिन वैद्य जी से मैं आयुर्वेद सीख रहा हूँ, वह भी कुछ देने को कह रहे थे।"

"अच्छा देखो, दादा! किसीसे माँगना नहीं। मैं तुमको अगले महीने से पचास रुपये दे दिया करूँगा और सौ रुपया महीना ताई जी को भी भेजने का प्रबन्ध कर दूँगा। अभी आने से पूर्व कुछ रुपये मैं ताई जी को दे आया हूँ।"

"परन्तु चन्दन भैया! तुमको पिता जी हमारे लिए देंगे?"

"देखो दादा! तुमको गुज़र करना है। गुज़र के योग्य कहीं से भी आए, इन्कार करने की आवश्यकता नहीं। तुमको देखना यह चाहिए कि यह धर्म से तुम्हारा है।"

"यही जानने के लिए तो पूछ रहा था!"

"यही बात ताई जी ने पूछी थी। उनका समाधान मैं कर आया हूँ। तुम पत्र डालकर पूछ लेना।"

इस बात ने कर्मजीत को निरुत्तर कर दिया। उसको एक बात स्मरण आ गई। यह उसने स्वयं कही थी। लक्ष्मणसिंह ने उससे पूछा था, "कर्म!
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम ज़मींदारी में अपना हक मानते हो या नहीं?''

''मानता हूँ।'' कर्मजीत का उत्तर था।

''फिर उसको प्राप्त करने का यत्न क्यों नहीं करते? जब मोहनसिंह ने कहा था कि बलपूर्वक अपना अधिकार जमा लो तो तुम्हारी माता जी ने इसे स्वीकार क्यों नहीं किया?''

कर्मजीत का उत्तर था, ''मैंने माता जी से यह बात सुन पूछा था कि क्या वे इसको पाप मानती हैं, तो माता जी ने कहा था कि उन्हें मोहनसिंह की नीयत पर सन्देह है। वह इसमें कुछ अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। यह सम्भव है कि वह इस प्रकार डाका डालकर स्वयं अपने उचित भाग से अधिक ले ले और यह भी हो सकता है कि कहीं फँसने का अवसर आए तो तुमको फँसा दे। इस कारण वे उसके साथ मिलकर डाका डालना नहीं चाहती थीं। माता जी का यह भी कहना है कि अभी हमारी शक्ति नहीं कि हम बल-प्रयोग कर सकें। इसका अवसर अभी नहीं आया।''

इसपर लक्ष्मणसिंह ने कहा था, ''डाका तो एक उपाय है। मुख्य प्रश्न है उस वस्तु का जिसके लिए डाका डाला जाए। यदि यह धन और ज़मींदारी हमारी है तो हम इसको ले लेंगे। उपाय वह है जो उद्देश्य में सफलता दिलाए। मुकद्दमा करना भी एक उपाय है। मिन्नत-समाजत करना दूसरा उपाय है। किसीकी सिफारिश लगवाना तीसरा उपाय है। इन सब उपायों अथवा चोरी अथवा डाका डालने में भी वही उचित है जिससे सफलता मिले।''

यह कह लक्ष्मणसिंह मौन हो गया था। आज चन्दनसिंह को भी यह कहते सुना कि गुज़र करने के लिए धन पाना उसका अधिकार है, फिर यह कहीं से भी आए। हाँ, ऐसे स्थान से आए जहाँ से लेना उसका अधिकार है। उसने मन में निश्चय कर लिया कि वह माता जी को लिखेगा और पता करेगा कि वह चन्दनसिंह से धन ले अथवा नहीं?

चन्दनसिंह ने पूछ लिया, ''दादा! क्या कार्यक्रम होता है दिन-भर का?''

''मैं प्रातः पाँच बजे जग जाता हूँ। स्नान-सन्ध्या से अवकाश पा
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी मिठाई खा वैद्य जी की दूकान पर चला जाता हूँ। वहाँ दस बजे तक काम करता हूँ। तदुपरान्त बाज़ार से आधा सेर दूध पीकर विद्यालय में चला जाता हूँ। वहाँ तीन बजे तक रहता हूँ। उसके उपरान्त कभी पूड़ी, कभी कुछ और खाकर पेट भर लेता हूँ। चार बजे पुनः वैद्य जी की दूकान पर चला जाता हूँ। वहाँ काम कर सायं सात बजे अवकाश पा जाता हूँ। तब किसी ढाबे पर खाना खाता हूँ। ऊपर से दूध पीता हूँ। वहाँ से अभी तक तो धर्मशाला जाता था, अब कोठी पर चला जाया करूँगा।''

उस दिन चन्दन कर्मजीत को साथ ही अपने होस्टल में ले गया और वहाँ अपने साथ भोजन कराया और फिर उसे कोठी पर भेज उससे पुनः मिलने की बात कह वह कमरे में आया।

सुरेश आया हुआ था। वह चन्दन को देख पूछने लगा, ''कहाँ रहे दिन-भर, चन्दन?''

''एक सम्बन्धी आए हुए थे। उनके साथ लखनऊ की सैर कर रहा था।''

''मैं समझा था कि तुम निर्मला से मिलने के लिए गए होगे।''

''वहाँ तो मैं कल ही चला गया था। रात उनके घर पर ही रहा था।''

''देखो चन्दन! उस लड़की से विवाह कर लो, अन्यथा वह हाथ से निकल जावेगी।''

''नहीं दोस्त! उसकी सगाई एक बहुत बड़े अफसर से हो गई है।''

''तो तुमने उसे बताया नहीं कि तुम भी उससे प्रेम करते हो?''

''बताया था, यह कि तुम समझते हो कि वह मुझसे प्रेम करती है। बताऊँ, उसने क्या उत्तर दिया था?''

''हाँ-हाँ, बता दो। लड़कियाँ जितनी गालियाँ दें, समझो कि उतना ही उनके मन में प्रेम अधिक है।''

''वह कहती थी कि तुम बहुत बड़े बदमाश हो।''

''ओह, तो इसका यह अर्थ हुआ कि वह तुमसे नहीं, वरंच मुझसे प्रेम करती है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझ नहीं सकता। उसकी इस डाँट को सुन मैं तो आगे बोला ही नहीं और घर से आने पर पता चला कि उसकी सगाई हो गई है।"

"चन्दन! यू हैव मिस्ड दि बस।"

"मैं बस का यात्री ही नहीं था।"

"अब बकवास बन्द करो। देखो बेटा चन्दन! तुम मुझको धोखा नहीं दे सकते। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे मुख पर असफलता के चिह्न स्पष्ट बन गए हैं।"

"तुम भी लालबुझक्कड़ हो।"

"कुछ भी कहो, है बात ठीक। मैं इस विषय में तुमसे बहुत अधिक समझता हूँ।"

"तभी तो लालबुझक्कड़ कह रहा हूँ। सुरेश, वह मेरी बहिन है।"

"मौसी की लड़की ही है न? मेरे भाई का विवाह हमारी मौसेरी बहिन से हुआ है। यह इतनी दूर की बहिन है जैसी मुहल्ले अथवा गाँव की कोई लड़की हो सकती है।"

चन्दन ने बात बदल दी, "देखो सुरेश! अब परीक्षा समीप आ गई है। इस प्रकार की बातें छोड़कर पढ़ाई की बातें किया करो।"

"तो सुन लो! हमारे इतिहास के प्रोफेसर मिर्ज़ा बशीर अहमद की कुमारी नौकरानी के हमल ठहर गया है। इस कारण उसने दूसरा विवाह कर लिया है।"

"तो तुम इसको पढ़ाई समझते हो?"

"पढ़ाई क़रानेवालों का इतिहास है।"

"अच्छा, सुनो सुरेश! मैंने फैसला किया है कि मैं तुमसे बोलना बन्द कर दूँ।"

"क्यों?"

"जिससे पढ़ाई को अधिकाधिक समय दिया जा सके।"

"और मैं बताता हूँ कि यदि तुम हँसी-मज़ाक को छोड़ बैठे तो फेल हो जाओगे।"

"मुझे फेल होने की चिन्ता नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो किस बात की चिन्ता करते हो? पढ़ाई ही किसलिए करते हो?"

"पढ़ाई ज्ञान प्राप्त करने के लिए करता हूँ। परीक्षा में पास होना तो पढ़ाई का स्वाभाविक परिणाम है।"

"मेरे कहने का मतलब है कि पढ़ाई में चित्त ही नहीं लगेगा। भोजन के साथ चूरण खाने से भोजन हज़म होता है।"

चन्दन इस बात को समझता था, परन्तु वह औरतों की बातें करना नहीं चाहता था। वह निर्मला को भूलने का यत्न कर रहा था।

दिन व्यतीत होने लगे। कर्मजीत दूसरे-तीसरे दिन उससे मिलने के लिए आता रहता था। एक-आध दिन चन्दन भी उससे मिलने के लिए गया था। चन्दन उसे सायं सात बजे वैद्य जी की दूकान पर मिलने जाता था।

चन्दनसिंह को लखनऊ में आए दस दिन हो चुके थे। जब से वह आया था, वह निर्मला के घर नहीं गया था। उस दिन रविवार था और कॉलेज बन्द था। अवकाश होने के कारण वह प्रातः ही महोनावालों की कोठी पर जा पहुँचा।

कर्मजीत अपने प्रातःकाल का नित्यकर्म समाप्त कर चुका था। चन्दन को आया देख वह अपने कमरे से निकल आया, "आओ चन्दन! आज तो सुबह ही यहाँ आना हो गया है?"

"आज रविवार है। मैं मौसी के घर जा रहा हूँ। विचार आया कि तुमको मिलता जाऊँ और अगर तुम्हारा भी रविवार हो तो तुमको भी वहाँ ले चलूँ।"

"चन्दन भैया, नहीं। वैद्य जी की दूकान पर रविवार की छुट्टी नहीं होती। रविवार के दिन तो अधिक लोग आते हैं।"

"अच्छा, सायंकाल सात बजे दूकान पर मिलूँगा।" इतना कहकर वह राजबहादुर के घर पर जा पहुँचा। जब वह वहाँ पहुँचा तो निर्मला अल्पाहार ले चुकी थी। अल्पाहार तो वह अपने पिता के साथ ही ले लेती थी। रविवार के दिन राजबहादुर अल्पाहार के उपरान्त अपने मित्रों और परिचितों से मिलने चल पड़ता था। माँ-बेटी घर पर रहती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब चन्दन पहुँचा तो राजबहादुर जाने के लिए तैयार खड़ा था। सरस्वती ने उसे देखा तो पूछ लिया, ''चन्दन! नाश्ता करोगे?''

''मौसी, मैं नाश्ता करके आया हूँ। आज रविवार था। विचार आया कि आपसे मिलता चलूँ। आज मैं भोजन के समय तक नहीं ठहरूँगा।''

''क्यों, कोई काम है?''

''आज हमारे कॉलेज की टीम क्रिकेट का मैच खेलने के लिए जा रही है। मैं देखने जाना चाहता हूँ।''

''गाँव का कोई समाचार आया है?''

''ताई का एक पत्र उसके अपने लड़के के पास आया है। उसमें लिखा था कि सब ठीक है। किसी प्रकार की विपरीत बात नहीं।''

निर्मला सामने खड़ी दोनों की बात सुन रही थी। वह बोल नहीं रही थी। यह भी सदा के विपरीत था। वह चाहता था कि उसके व्यवहार का कारण जाने। यह वह एकान्त मिलने पर ही पूछ सकता था।

आज सरस्वती ने चन्दन को यह सूचना देनी उचित समझी कि निर्मला की सगाई हो गई है। उसने बताया, ''निर्मला अब स्कूल नहीं जाती। इसका विवाह बहुत समीप आ गया है।''

''सत्य, मौसी? कब?''

''जनवरी के अन्तिम सप्ताह में हो जावेगा। लड़का डिप्टी कलेक्टर है और वह विवाह के लिए जल्दी मचा रहा है। अतः छब्बीस जनवरी, बसन्त पंचमी के दिन विवाह हो जाएगा।''

''पर मौसी! इतनी जल्दी तैयारी कर लोगी?''

''तैयारी की कुछ अधिक आवश्यकता नहीं रही। लड़के ने तो कहा है कि कुछ देने की आवश्यकता नहीं। यदि कुछ देना ही है तो नकद दे दिया जाए। साथ ही उसकी नौकरी ऐसी है कि हर तीसरे वर्ष बदली हो जाती है। वह कहता है कि कहाँ-कहाँ सामान उठाता फिरेगा!''

''कितना देने का विचार कर रहे हैं?''

''तीस-चालीस हज़ार तक देने की बात है। जितना उस समय बन पड़ेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मौसी! यह तो बहुत ही अच्छा समाचार है। बाबा और माँ को भी निमन्त्रण भेजोगी न?"

"हाँ, तुम्हारी ताई को भी बुलाएँगे।"

"मैंने आपका होली पर आने का निमन्त्रण दे दिया था।"

"तो वह स्वीकार हो गया है क्या?"

"बाबा कहते थे कि अभी बहुत दिन हैं, विचार कर लेंगे। मैं भी विचार कर रहा था कि निर्मला अब कॉलेज में मिलने के लिए क्यों नहीं आती। तो यह बात है! हाँ, उसे अब घर में ससुराल जाने की तैयारी करनी चाहिए।"

निर्मला मुस्कराई और उठकर अपने कमरे में चली गई। सरस्वती ने कह दिया, "वह अब घूमने-फिरने के लिए भी नहीं जाती।"

चन्दन ने घड़ी की ओर देखा और कहा, " मौसी! अब मैं चलता हूँ। दस बज रहे हैं।"

ऊपर से मुस्कराता और मन से उदास चन्दन उठा और मौसी को नमस्कार कर घर से बाहर चला गया।

: ७ :

मकान के बाहर जा वह ऐसा अनुभव करने लगा कि उसमें चलने अथवा खड़े रहने की भी शक्ति नहीं रही। वह इधर-उधर किसी इक्के को देखने लगा था।

इक्का देखते हुए दूर सड़क के किनारे उसे फुटपाथ पर निर्मला खड़ी दिखाई दी। वह विचार करने लगा कि इसे तो घर से बाहर जाने में लज्जा लगने लगी है, तो वह वहाँ खड़ी क्या कर रही है? उसे यह समझ आया कि वह भी किसी इक्के को देख रही है। पर क्यों?

वह अनायास ही उसकी तरफ चल पड़ा। वह निर्मला के समीप पहुँचा तो वह उसकी ओर देख मुस्करा रही थी। उसने पूछ लिया, "निर्मला! यहाँ खड़ी क्या कर रही हो?"

"आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! पर किसलिए? मौसी तो कह रही थी कि तुमको बाहर जाने-आने में लज्जा लगती है?"

"हाँ, पर किसी घरवाले के साथ आने-जाने में। अकेली तो मैं आती-जाती रहती हूँ।"

"तो फिर मैं जाऊँ, मेरे साथ तो तुम अकेली नहीं रह सकोगी।"

"अब तो आप नाराज़ हो गए हैं। मैं घर से तो अकेली ही आई हूँ और जाने के समय अकेली ही जाऊँगी। आप तो कॉलेज-होस्टल में जा रहे हैं न?"

इसपर दोनों हँस पड़े। हँसते-हँसते निर्मला ने कह दिया, "घर से निकलकर तो मैं किसीके साथ भी जा सकती हूँ। सड़क पर तो अनेक उसी ओर जा रहे होते हैं जिधर को मैं जा रही होती हूँ।"

"मैं तो तुमसे ही मिलने के लिए आया था।"

"तो चलते-चलते बातें कर सकते हैं। आइए!"

दोनों गोमती की ओर चल पड़े। बात चन्दन ने ही आरम्भ की, "अब क्या होगा?"

"किस विषय में?"

"तुम्हारे-मेरे विवाह के विषय में।"

"मेरा तो हो रहा है। आप भी अपनी माँ से कहकर अपना विवाह करा लीजिए।"

"तो तुम अपने विवाह से प्रसन्न हो?"

"न प्रसन्न हूँ और न शोकाकुल। विवाह तो होना था। हो जाएगा।"

"तुम तो मुझसे प्रेम करती थीं?"

"वह तो मैं अब भी करती हूँ। उस दिन स्टेशन पर बातचीत होने से पहले भी करती थी और पीछे भी करती हूँ। अन्तर इस बात में यह हुआ है कि पहले उस प्रेम का नाम बहिन-भाई का स्नेह था, फिर कुछ दिन वह पति-पत्नी-सा प्रेम समझ आने लगा था और अब फिर वही बहिन-भाई का-सा स्नेह हो गया है।"

"मैं इस परिवर्तन का आधार नहीं समझा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आधार तो मैं भी नहीं समझती। कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मेरे सम्मुख मिठाई का भरा थाल आया था और अब वह नहीं है।"

"मतलब यह है कि मैं मिठाई हूँ।" चन्दन समझ नहीं रहा था कि यह कैसी भावना है। उसके मन में आह्लाद भी था और क्षोभ भी।

निर्मला ने कुछ देर तक मौन चलते हुए विचार किया कि वह क्या कह रही है। फिर एकाएक बोल उठी, "आप मिठाई से भी मीठे हैं। किस प्रकार के और कितने, मैं स्वयं नहीं जानती। वर्णन भी नहीं कर सकती।"

चन्दन अभी भी कुछ न समझता हुआ साथ-साथ चल रहा था। इसपर निर्मला ने कहा, "एक बात करिए। अपनी माँ से कहकर विवाह का प्रबन्ध करा लीजिए।"

"तो तुमने अपनी माँ से कहकर विवाह का प्रबन्ध कराया है?"

"हाँ भी और नहीं भी।"

"भला यह किस प्रकार? ये दो परस्पर-विरोधी बातें हैं...."

निर्मला ने बात बीच में ही रोककर कहा, "यह इस प्रकार हुआ था। उस दिन जब मैं आपको स्टेशन पर छोड़कर आई, मैंने माँ से कहा कि मेरा पढ़ने में चित्त नहीं लगता। इसपर माँ ने पूछ लिया, 'तो किस बात में लगता है तेरा चित्त?'

" 'कुछ कह नहीं सकती। इतना तो है कि पढ़ने में मन नहीं लगता।'

"इसपर माँ ने पूछ लिया, 'तो तुम्हारा विवाह कर दें?'

"मैंने कहा, 'माँ! कहाँ करोगी?'

" 'कहती हो तो तुम्हारे योग्य कोई लड़का ढूँढ लेंगे।'

" 'क्या चन्दन मेरे योग्य नहीं है?'

"माँ ने मेरी आँखों में देखते हुए पूछा, 'यह तुम अपने मन से कहती हो अथवा चन्दन के कहने पर?'

" 'बात तो मेरे ही मन की है। मेरे कहे बिना वह जान गया प्रतीत होता है।'

" 'तो सुन लो, वह तुम्हारे योग्य नहीं है। कई बातें हैं। एक तो वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमसे छोटा है, दूसरे....'

" 'पर माँ! तुम तो कहती थीं कि वह मुझसे तीन-चार वर्ष बड़ा है?'

" 'नहीं, लड़के धीरे-धीरे बड़े होते हैं। तुम उससे आगे निकल गई हो। मेरे अनुमान में तुम अब उससे तीन-चार वर्ष बड़ी हो गई हो।"

"मुझे तो यह बात ठीक नहीं लग रही। किस बात में मैं आगे हो गई हूँ?' मेरा प्रश्न था।

"माँ ने उत्तर दिया, 'अक्ल में और अन्य कई बातों में। एक बात और भी है। वह तुम्हारी मौसी का लड़का है। इस प्रकार तुम्हारा भाई है।'

" 'तो यह विवाह पाप है क्या?'

"माँ ने गम्भीर भाव धारण कर कहा, 'पाप-पुण्य की बात मैं जानती नहीं। समाज में इस प्रकार के विवाह को अनुचित माना जाता है।'

"एकाएक माँ ने बात समाप्त करते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे पिता से बात करूँगी। यदि विवाह ही होना है तो स्कूल जाने में कुछ प्रयोजन नहीं। अब घर का काम-काज देखो। इसकी अधिक आवश्यकता रहेगी।'

"आप तो पिता जी को जानते हैं। वे निर्णय करने में देरी नहीं करते। उन्होंने एक दिन एक युवक के साथ चाय पीने के लिए मुझे बुला लिया। वहाँ साधारण बात होती रही। उसी रात के खाने के समय पिता जी ने कह दिया, 'हमारे विचार में यह व्यक्ति तुम्हारे लिए उचित वर होगा। तुम कहो तो बातचीत करें।'

"मैंने कहा, 'मैं क्या जानूँ? मैंने तो अभी तक चन्दन को ही जाना-पहचाना है।'

" 'वैसे ये लोग धनी हैं। लड़का स्वयं डिप्टी कलेक्टर है और अफसरों में इसकी खूब बनती है। देखने में हमको ठीक ही प्रतीत हुआ है।

" 'चन्दन भाई है और अभी बच्चा है।'

" 'पर मेरा चित्त उससे विवाह के लिए क्यों करता है?'

" 'चित्त को नियंत्रण में रखो। जब भी वह आए तो उसे भाई की भावना से देखो और भैया कहकर पुकारा करो। उससे प्रेम तो ठीक ही है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह बड़ा अच्छा लड़का है। परन्तु उससे प्रेम का नाम स्नेह है।'

"अब तो विवाह की तारीख और लेन-देन की बात हो चुकी है।"

"तो तुमको यह सब ठीक प्रतीत हो रहा है?" चन्दन ने पूछा।

"माता-पिता ने ठीक समझा है तो मैं कैसे कहूँ कि ठीक नहीं है?"

"मैं तो तुमसे यह कहने आया था कि घर से भाग चलो।"

निर्मला हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "अभी घर से द्वेष नहीं हुआ। पर भैया! इस विवाह के निश्चय के उपरान्त भी मेरा स्नेह आपसे बना हुआ है। पहले से कुछ अधिक ही है।"

एकाएक निर्मला खड़ी हो गई। उसने कहा, "अब आप जाइए। मैं घर लौट रही हूँ।...देखिए, आगामी शनिवार को आइएगा! पहले की भाँति रात हमारे यहाँ ही ठहरिएगा!"

निर्मला चन्दन को गोमती के पुल पर खड़े छोड़ हज़रतगंज की ओर लौट गई।

निर्मला घर पहुँची तो उसकी माँ कुर्सी पर बैठी विचारमग्न-सी थी। निर्मला समझ गई कि उसके घर से बिना बताए जाने पर चिन्तित है। इस कारण उसने कह दिया, "माँ! मैं आ गई हूँ।"

"मेरा तो मन डरने लगा था।"

"क्यों, क्या डर लग रहा था?"

"जब से तुम्हारे मौसा और मोहन की बात सुनी है, चन्दन पर भी सन्देह होने लगा है कि कहीं कोई उच्छृंखलता न कर बैठे।"

"नहीं, माँ! वह वैसा प्रतीत नहीं होता। उसमें एक गुण है कि वह बात को सुनता है और समझता है।"

"तो उसीके साथ गई थी?"

"हाँ, माँ! मैं उसको बताने के लिए गई थी कि माँ ने क्यों मेरे विवाह में जल्दी मचाई है।"

"पर जल्दी तो तुमने मचाई है।"

"नहीं माँ! मैंने तो यह कहा था कि मेरा पढ़ने में मन नहीं लगता। शेष आपकी विचार की हुई बात है। पर जल्दी तो उन श्रीमान जी के कारण
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जिनके यहाँ तुम मुझको भेजना चाहती हो।''

''तो वह समझ गया है ?''

''हाँ।''

''वह नाराज़ नहीं है ?''

''नाराज़ होने का कोई कारण नहीं।''

माँ ने सुख की साँस ली और बोली, ''जब कहीं जाया करो तो बताकर जाया करो। यदि इतनी ही बात कहनी थी तो तुम यहाँ भी कह सकती थीं।''

''यहाँ अकेले में बात करने का अवसर नहीं मिला। साथ ही सड़क पर चलते-चलते बात ठीक से हो गई।''

माँ समझ गई कि उसकी लड़की समझदार हो गई है।

: ८ :

चन्दन ने निर्मला की बात को कड़वा घूँट मानकर पिया था। उसके सामने वह ऐसे ही बना रहा जैसे वे सब बातें एक विचारशील युवक की भाँति सुन और समझ रहा है। वास्तव में उसे भारी आत्मग्लानि हो रही थी। वह विचार करता था कि लक्ष्मणसिंह उसे सात वर्ष की आयु का बच्चा मानता है। निर्मला की माँ उसको निर्मला से कम आयु और अक्ल का मानती है। निर्मला स्वयं भी ऐसा ही समझती प्रतीत होती है।

सबसे बड़ी बात यह है कि उसके कमरे का साथी सुरेश उसे बुद्धू समझता है।

वह खिन्न मन से होस्टल में पहुँचा। उसका साथी कमरे में नहीं था। कदाचित् वह मैच देखने के लिए गया होगा। वह स्वयं वहाँ जाने में किसी प्रकार की रुचि अनुभव नहीं करता था। उसने कपड़े बदले और बिस्तर में घुसकर लेट गया। नींद तो आई नहीं थी। वह छत की ओर देखता हुआ अपने उन स्वप्नों को, जो वह निर्मला से विवाह के विषय में कल्पना करता रहा था, मन से निकालने का यत्न कर रहा था।

वह जब कल्पनाओं को गिराने और बनाने में लीन हुआ तो समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यतीत होने लगा। भोजन का समय भी व्यतीत हो गया। उसे पता नहीं चला कब तीसरा पहर हो गया।

किसीने बाहर से द्वार खटखटाया। द्वार खुला था। चन्दनसिंह ने आवाज़ दी, "आ जाओ!"

वह जानता था कि आनेवाला सुरेश नहीं है। यदि वह होता तो दरवाज़ा धकेलकर भीतर आ जाता। यह कोई अपरिचित है। ये थे कर्मजीत और विश्वजीत। चन्दन उनको आया देख उठकर बैठ गया, "ओह विश्वजीत! तो तुम भी लखनाऊ में आ गए हो?"

कर्मजीत ने बात करते हुए कहा, "भैया! गाँव में एक दुःखद घटना हो गई है। विश्वजीत समाचार लाया है। मैं रात की गाड़ी से गाँव जा रहा हूँ।"

चन्दन ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "क्या हुआ है?"

दोनों भाई अभी भी पलँग के पास खड़े थे। चन्दन के पूछने पर दोनों कुर्सियों पर बैठ गए और कर्मजीत ने बताया, "पिछले बृहस्पतिवार की बात है कि हमारे घर में डाका पड़ा। जवाहर और विश्वजीत तो सो रहे थे। विश्व जब जागा तो पूर्ण घर में दीपक और हरिकेन लालटेन जल रहे थे, इसके अपने कमरे में और अन्य कमरों में भी। यह इसका कारण न समझते हुए उठा और माँ के कमरे में गया। उसे अपने कमरे के एक कोने में हाथ-पैर बँधे हुए और मुख में कपड़ा ठूँसे मुख पर पट्टी बँधे हुए पड़ी देखा। माँ बोल नहीं सकती थी। परन्तु मुख और माथे पर खरोंचों से यह प्रतीत हुआ कि हाथापाई हुई है। इसने माता जी का मुख खोला तो पता चला कि रात दो बजे के करीब लगभग पन्द्रह-बीस व्यक्ति घुस आए थे और उसको बलपूर्वक बाँधकर सब-कुछ लूट ले गए हैं। दीपक और हरिकेन उन्होंने ही जलाए थे जिससे उनको घर की पूर्ण सफाई करने में सुविधा रहे।

"माँ माधो की आवाज़ पहचान गई थी। वे लोग सब मुख पर पगड़ियाँ लपेटे हुए थे। केवल आँखें दिखाई देती थीं। परन्तु माधो अपने साथियों को कह रहा था कि वह कोना देखो, यह सन्दूक देखो, उस चटाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नीचे देखो। माँ उसकी आवाज़ पहचान गई थी।

"उसी समय विश्वजीत महोना गया और लक्ष्मणसिंह जी को बुला लाया। उन्होंने पूर्ण स्थिति का अनुमान लगा गाँव के चौकीदार को लिया और फिर महोना के थाने में रिपोर्ट कर दी। उस रिपोर्ट में माँ के सन्देह की बात भी बता दी गई।

"अगले दिन गाँव में पुलिस आ गई। माधो कहार को पकड़ लिया गया और जब उसे प्रतापगढ़ के हवालात में ले-जाकर पीटा गया तो वह बक गया। उसके कहने पर अगले दिन चाचा जी और पन्द्रह के पन्द्रह व्यक्ति पकड़ लिये गए।

"अभी तक चाचा जी हवालात में हैं और उनकी ज़मानत की प्रार्थना अस्वीकार कर दी गई है। मोहन दादा माँ के पास जाकर रहने लगे हैं।

"माँ ने मुझे बुलवाया है। अतः मैं आज रात ही जा रहा हूँ। बाबू लक्ष्मणसिंह जी भी यही चाहते हैं कि कुछ दिन के लिए मैं वहाँ चला जाऊँ।"

चन्दन विचार करने लगा कि अब क्या होना चाहिए? जब वह अपने विषय में कुछ विचार न कर सका तो उसने कर्मजीत से कहा, "दादा, जाते ही पत्र लिखना कि क्या स्थिति है। मोहन दादा से और हो सके तो बाबू लक्ष्मणसिंह से पता करना कि मुझको क्या करना चाहिए। यदि मेरा वहाँ आना आवयश्क और लाभकारी हुआ तो तार दे देना। तार प्रतापगढ़ से दी जा सकेगी।

"देखो दादा! ताई के पास क्या कुछ रह गया है, पता नहीं। मैं तुमको पचास रुपये अपने खर्च में से देता हूँ। ये तुम ले जाओ और वहाँ जाकर पूर्ण स्थिति का वर्णन लिखना।"

विश्वजीत ने कहा, "लक्ष्मणसिंह जी माँ को खर्च के लिए रुपये देना चाहते थे। माँ ने उनसे लेने के बजाय मोहन दादा को कहला भेजा था। मोहन दादा आया था और वह पचास रुपये दे गया था। जब चाचा जी पकड़े गए और मोहन दादा हवेली में जाकर रहने लगे तो उसने माँ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहला भेजा था कि हम लोग पुनः हवेली में चलकर रह सकते हैं। परन्तु माँ ने वहाँ जाने से इन्कार कर दिया है।''

चन्दनसिंह रज़ाई से बाहर निकल आया और कपड़े पहन तैयार हो कर्मजीत और विश्वजीत के साथ होस्टल से बाहर निकल आया। वह मौसी से इस विषय में राय करना चाहता था। वह जब उनके घर पर दोनों भाइयों को लिये हुए पहुँचा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने लक्ष्मणसिंह जी को वहाँ बैठा देखा। वह राजबहादुर से बातें कर रहे थे। लक्ष्मणसिंह ने चन्दन इत्यादि को देखा तो कह दिया, ''आओ चन्दन! तो पता चल गया है कि तुम्हारे बाबा ने क्या करतूत की है?''

''एक कहानी विश्वजीत ने बताई है। मैं विस्मय कर रहा हूँ कि यह कैसे ठीक हो सकती है?''

''मैं भी इस बात पर विश्वास नहीं करता था। परन्तु कल सब पकड़े हुओं के बयान हुए हैं और सबने कहा है कि डाका डालने की योजना तुम्हारे बाबा ने बनवाई थी। उसने सबको पचास-पचास रुपये दिए थे और जो कुछ भी नकदी लूट में मिली वह तुम्हारे बाबा ने अपने अधिकार में कर ली थी।

''इसपर तुम्हारे बाबा को पकड़ लिया गया है और हवेली की तलाशी ली गई है। वहाँ से तुम्हारी ताई के घर की लूट का कुछ भी माल बरामद नहीं हुआ। माधो कहार के घर से तो कुछ कपड़े इत्यादि निकले हैं जिन्हें तुम्हारी ताई ने पहचान लिया है।''

''सुना है उनकी ज़मानत नहीं हो रही है?'' चन्दन ने पूछा।

''पुलिस ने दस दिन का रिमांड माँग लिया है और मजिस्ट्रेट ने इस अवधि के लिए ज़मानत पर छोड़ने से इन्कार कर दिया है।''

''अब क्या होगा?''

''मैं कल फैज़ाबाद में सेशन जज के पास ज़मानत के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ। इसीलिए इनसे बातें करने के लिए आया हूँ।''

चन्दनसिंह ने कहा, ''कर्मजीत आज अपने गाँव जा रहा है।''

''मुझे मालूम है। इसकी माँ ने इसको बुलवाया है। मोहनसिंह ने
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा है कि यदि कर्मजीत यहाँ आ जाए तो दोनों मिलकर ज़मींदारी चलाएँगे।''

''तो आप भी इसे ठीक समझते हैं?''

''मैं इसको अपने साथ मोटरगाड़ी में लिये जा रहा हूँ। इसे मोहनसिंह से मिलना चाहिए और फिर जो कुछ वह कहेगा, उसपर विचार कर लिया जाएगा। यदि फैज़ाबाद में भी ज़मानत स्वीकार न हुई तो फिर मोहन के साथ मिलकर ज़मींदारी का काम करना ठीक ही रहेगा।''

कर्मजीत ने पूछा, ''आप कब तक जा रहे हैं?''

''मैं अभी जा रहा हूँ।''

''ताई को कुछ रुपयों की आवश्यकता होगी।''

''मोहन कर्म के घर का सब प्रबन्ध कर रहा है।''

इस समाचार से चन्दन की चिन्ता कुछ सीमा तक मिट गई। राजबहादुर ने कहा, ''मैं मन से दिलजीतसिंह का ज़ामिन बनना नहीं चाहता। इसपर भी यदि आप कहते हैं तो मैं आपके साथ साझा ज़ामिन बन जाऊँगा।''

लक्ष्मणसिंह का कहना था, ''आप चलिए तो!''

राजबहादुर, लक्ष्मणसिंह, विश्वजीत और कर्मजीत को मोटर में बैठाकर चन्दनसिंह अपने होस्टल में चला गया।

वह इस दिन की सब बातों को मन पर भारी बोझा समझता था और चिन्ता कर रहा था कि यदि उसका बाबा न छूट सके तो फिर घर की क्या व्यवस्था होगी?

चन्दन सुबह कमरे से गया था जब सुरेश अभी उठा भी नहीं था। मध्याह्न वह आया था तो सुरेश क्रिकेट का मैच देखने के लिए गया हुआ था। उसके मैच से लौटने के पहले ही कर्मजीत और विश्वजीत आ गए थे और चन्दनसिंह उनकी बात सुन अपनी मौसी और मौसा से राय करने चल पड़ा था। अब रात के आठ बजे वह होस्टल में लौटा और किचन में भोजन कर साढ़े आठ बजे कमरे में पहुँचा तो सुरेश ने पूछ लिया, ''कहाँ रहे, चन्दन? सारे दिन तुम्हारे दर्शन नहीं हुए?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चन्दनसिंह ने गाँव की पूर्ण घटना सुना दी और बोला, "मैं मौसी से राय करने के लिए गया था। मौसा जी गाँव गए हैं।"

"कोई मरा-मराया तो नहीं?"

"नहीं।"

"तो चिन्ता मत करो, सब ठीक हो जाएगा। कोई योग्य वकील करना पड़ेगा।"

चन्दनसिंह का मन भीतर-ही-भीतर बैठ रहा था। उसे मोहनसिंह के व्यवहार पर सन्देह हो रहा था। वह चंचल भाभी को अति भयंकर षड्यंत्रकारी समझने लगा था। उसको ज्ञात था कि उसका भाई भाभी की उँगलियों पर नाचता है।

उसने कर्मजीत के मोहन के साथ जाकर कार्य करने के विषय में अपने संशय को इस प्रश्न से प्रकट किया था कि क्या कर्मजीत को ज़मींदारी का काम मोहन के साथ करना ठीक होगा?

लक्ष्मणसिंह ने इसका यह उत्तर दिया था कि वहाँ चलकर मोहनसिंह से बातचीत कर विचार कर लिया जाएगा। इस उत्तर से चन्दन को सन्तोष नहीं हुआ था, परन्तु वह उनके सामने कुछ कह नहीं सका था।

उसके चित्त की अशान्ति और भी बढ़ गई थी जब सुरेश ने कहा, "चन्दन! मुझे तो कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि तुम्हारे पिता किसी भयंकर षड्यन्त्र के शिकार हो रहे हैं।"

"मौसा जी गाँव गए हैं, देखें क्या समाचार लाते हैं।"

: ९ :

कर्मजीत को गए चार दिन हो गए थे। चन्दनसिंह नित्य मौसी के घर मौसा का समाचार लेने जाया करता था। वह किसी भी प्रकार का समाचार के न आने से अधिक चिंतित रहने लगा था। वे सब लोग रविवार को गए थे और राजबहादुर बृहस्पतिवार को लौटा।

इन सब दिनों निर्मला चन्दनसिंह से नहीं मिली थी। बृहस्पतिवार को पहुँचा तो राजबहादुर, सरस्वती और निर्मला मध्याह्नोत्तर की चाय पी रहे थे।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आओ चन्दन! सुना है, तुम नित्य समाचार जानने के लिए आते रहते थे?"

"मौसा जी! क्या हुआ वहाँ?"

"तुम्हारे पिता पचास हज़ार की ज़मानत पर छूट गए हैं। उनके विपरीत भारत दंड-विधान की धारा ३९२ और १०८ के अनुसार मुकद्दमा बनाया गया है। माधो कहार सरकारी गवाह बन गया है।

"माधो का तो यह कहना है कि बाबू दिलजीतसिंह स्वयं भी डाके में उपस्थित थे।

"चन्दन! मुकद्दमा तो होगा ही। यदि तुम्हारे पिता ने रुपया खर्च किया तो बच जाएँगे।"

"कर्मजीत का क्या रहा?"

"वह पहले ही दिन मोहन की बातें सुनकर लौट आया था। उसने उसके साथ काम करने से इन्कार कर दिया है।"

"क्यों?"

"उसका कहना है कि मोहनसिंह चाहता था कि पिता जी के छूटने से पहले ही ज़मींदारी बाँट ली जाए।

"तुम्हारी ताई ने कर्मजीत को ऐसा करने से मना कर दिया था और वह पुनः हवेली में नहीं गया।

"तुम्हारे पिता जी आज प्रतापगढ़ हवालात से छूटे हैं। मैं उन्हें गाँव छोड़ इधर चला आया हूँ।"

"उनकी ज़मानत किसने दी है?"

"मैं और लक्ष्मणसिंह दोनों इकट्ठे ज़ामिन बने हैं।"

"आपने पिता जी को मुकद्दमा लड़ने के लिए वकील इत्यादि करने की सलाह दी है?"

"हाँ, वे एक-दो दिन में लखनऊ आनेवाले हैं और मुकद्दमे के विषय में यहाँ के वकीलों से राय करेंगे।

"परन्तु वे उलटी खोपड़ी के व्यक्ति हैं। हवालात से छूटते ही उन्होंने लक्ष्मणसिंह को गालियाँ देनी आरम्भ कर दीं। उनका विचार था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह डाका लक्ष्मणसिंह ने डलवाया है और उन्हें फँसाने का षड्यंत्र किया है। लक्ष्मणसिंह मुस्कराता रहा, परन्तु उसका मुकद्दमा लड़ने में उत्साह ढीला पड़ गया है।''

''और आप क्या समझते हैं?''

''मैं तो कुछ जानता नहीं। हाँ, लक्ष्मणसिंह का यह अनुमान है कि यह डाका मोहनसिंह की ससुरालवालों ने डलवाया है और उन्होंने बाबू साहब को फँसवाने का यत्न किया है। माधोसिंह हवेली का नौकर ही है। इससे सन्देह होता है कि मोहनसिंह का भी इस पूर्ण कार्यवाही में हाथ है।

''लक्ष्मणसिंह इस डाके का रहस्य खुलवाने का यत्न करना चाहता था, परन्तु तुम्हारे पिता का व्यवहार देख वह अब तटस्थ होने में ही अपना कल्याण मानने लगा है।

''मैंने उसे समझाने का यत्न किया है, परन्तु वह बाबू दिलजीतसिंह को उसके घर तक भी छोड़ने के लिए नहीं आया। लखनऊ से अपनी गाड़ी में ही सब गए थे। कर्मजीत और विश्वजीत को गाँव में तुम्हारी ताई के पास छोड़ मैं महोना में रात रहा। अगले दिन हम फैज़ाबाद चले गए और दिन-भर की भाग-दौड़ रही। अगले दिन ज़मानत-मंजूरी का हुक्म मिला। हमें फिर रात फैज़ाबाद में रहना पड़ा। तीसरे दिन हमने प्रतापगढ़ में ज़मानत के पर्चे दाखिल किए। वहाँ के डिप्टी कमिश्नर बाबू दिलजीत-सिंह के सख्त खिलाफ थे, इस कारण वे ज़मानत के पर्चों में मीन-मेख निकालते रहे। ज़मानत सायं पाँच बजे ले ही ली गई और छूटने का हुक्म हुआ अगले दिन प्रातः का, अर्थात् आज का। अतः बाबू साहब को हवालात से निकालकर लाया तो वे लक्ष्मणसिंह को गालियाँ देने लगे। मैंने बताया भी कि लक्ष्मणसिंह ने ही उनकी ज़मानत दी है, परन्तु वे माने नहीं। अतः जब हम बाबू साहब को लेकर सरवरगंज आ रहे थे और गाड़ी महोना के समीप पहुँची तो वहीं उतर गए और बोले कि वे लखनऊ नहीं आ रहे।

''वहाँ से चलकर मैंने तुम्हारे पिता को बहुत समझाया कि लक्ष्मणसिंह उनका हितैषी है। वे चुप तो हो गए, परन्तु उनके मुख से ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीत होता था कि मेरी बात का उनको विश्वास नहीं आया।

"उन्होंने वचन दिया है कि कल वे लखनऊ आएँगे और किसी योग्य वकील को करेंगे।"

इसपर सरस्वती ने पूछ लिया, "आप शिवकुमार जी से मिले थे?"

"हाँ, उनके सामने ही बाबू साहब का मुकद्दमा है। वे भी बाबू साहब के सख्त खिलाफ थे, परन्तु मेरे वहाँ पहुँचने पर वे नरम पड़ गए और उन्होंने पीछे हमारी बहुत सहायता की है।"

"बाबू लक्ष्मणसिंह के वे परिचित हैं?"

"ये शिवकुमार आपके किस प्रकार परिचित हैं?" चन्दन ने पूछा।

सरस्वती ने बताया, "निर्मला की इन्हीं से सगाई हुई है।" उसने पुनः अपने पति से पूछा, "लक्ष्मणसिंह के सम्मुख आपने सम्बन्ध की बात बताई थी?"

"नहीं, जब उसने मुझसे यह पूछा कि मेरा शिवकुमार जी से परिचय है? तो मैं मुस्करा दिया। इसके आगे कोई बात नहीं हुई। मैं चाहता था कि जो रुचि शिवकुमार ने बाबू साहब के मुकद्दमे में ली है, उसमें कारण विख्यात न हो जाए और पुलिस वहाँ से मुकद्दमा बदलवा न ले।"

"परन्तु विवाह तो मुकद्दमा समाप्त होने से पहले ही हो जाएगा। आखिर बात तो विख्यात होगी ही।"

"मैं विचार कर रहा था कि दिलजीतसिंह की ज़मानत होने के बाद लक्ष्मणसिंह को बता दूँगा, परन्तु हवालात से छूटते ही दिलजीतसिंह ने लक्ष्मणसिंह को गालियाँ देनी आरम्भ कर दीं। सारा समय उनको समझाने-बुझाने में चला गया। लक्ष्मणसिंह मेरे साथ ही लखनऊ आनेवाले थे, परन्तु एकाएक वे महोना में ही उतर गए। इस कारण शिवकुमार जी के विषय में कुछ भी बात नहीं हो सकी।"

निर्मला यह सब वृत्तान्त सामने बैठी सुन रही थी। राजबहादुर ने चाय समाप्त की और कह दिया, "मैं बहुत थका हुआ हूँ। तीन-चार घंटे तक सोना चाहता हूँ।"

जब चन्दनसिंह भारी मन से होस्टल को लौटने के लिए उठा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला ने कह दिया, "परसों शनिवार है, आप तो आएँगे ही।"

"पिता जी कल आनेवाले हैं। मैं उनसे मिलने के लिए आऊँगा।"

चन्दनसिंह होस्टल को लौट आया। अगले दिन वह मध्याह्नोत्तर राजबहादुर की दुकान पर पता करने के लिए आया। उसका पिता उस समय तक वहाँ नहीं पहुँचा था। वह वहीं से निराश लौट आया। वह शनिवार को फिर गया। उस दिन भी न तो उसके पिता का कुछ पता चला और न ही सरवरगंज से किसी प्रकार का सन्देशा आया। चन्दनसिंह सरस्वती के कहने पर रात वहीं ठहर गया।

रात के शो में वे एक अंग्रेज़ी पिक्चर देखने के लिए गए। निर्मला भी साथ थी, परन्तु उससे बात करने का अवसर नहीं मिला। रात बारह बजे वे लौटे और दूध पीकर सो गए। चन्दनसिंह एक क्षीण-सी आशा करता था कि निर्मला से पुनः बातचीत का अवसर मिलेगा। उसने ही उसे शनिवार को आने का निमन्त्रण दिया था। अगले दिन वह निराश ही होस्टल को लौटा।

उसकी निराश मुद्रा को देख सुरेश ने पूछा, "कहाँ से आ रहे हो, चन्दन?"

"मौसी के घर से।"

"उसी लड़की से मिलकर?"

"हाँ।"

"तो काम नहीं बना?"

"कैसा काम नहीं बना?"

"उसे भगा ले-जाने का?"

General Library
167929
Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"मैंने उसे पिछले रविवार को घर से भाग चलने का निमन्त्रण दिया था। मेरी बात सुनकर वह बोली, 'मेरी माँ ठीक कहती थी कि आप मेरी आयु से अभी कम आयु के हैं।' "

सुरेश इसका अर्थ नहीं समझ सका। वह प्रश्न-भरी दृष्टि से चन्दन का मुख देखता रहा। चन्दन ने निर्मला के कहने का अभिप्राय समझाते हुए कहा, "उसके कहने का अर्थ यह है कि मेरी 'मेंटल डेवलपमेंट' अभी सात-आठ वर्ष के बच्चे की-सी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''ओह! तो वह मेन्टली बूढ़ी हो गई है!''

इस पर दोनों हँसने लगे। चन्दनसिंह ने कह दिया, ''हमारे एक अन्य सम्बन्धी भी हैं। वे भी यही कहते थे, परन्तु वे यह भी कहते हैं कि मैं द्रुतगति से बड़ा हो रहा हूँ।''

सुरेश ने मुस्कराते हुए कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि वे दोनों ठीक कहते हैं। यदि तुम सज्ञान होते तो लड़की को भगाने के लिए कहने के स्थान पर उसको भगाकर ले जाते।''

''सुरेश! तुम एक बात नहीं समझे। कदाचित् समझ सकते भी नहीं।''

''क्या?''

''अपनी इच्छाओं को वश में रखना मानसिक विकास का लक्षण है।''

''ओह! यह भी उस लड़की ने बताया है?''

''नहीं, यह उस सम्बन्धी ने बताया है जिसने कहा है कि मैं द्रुतगति से बड़ा होता जाता हूँ।''

सुरेश हँस पड़ा। उसने कहा, ''सब भीरु लोग परमात्मा, आत्मा, सत्य, न्याय और संयम की बातें किया करते हैं। दुनिया में उनके लिए कोई स्थान नहीं। उनको धकेलकर दीवार के साथ कर दिया जाता है।''

चन्दन की जीवन-मीमांसा यह नहीं थी। उसको ताई से शिक्षा मिली थी कि मनुष्य को सब कामों को धर्म के अधीन रखना चाहिए। अत: वह समझता था कि किसी लड़की का उसकी इच्छा के बिना अपहरण धर्म नहीं हो सकता। सुरेश और चन्दन, विचारों में दोनों पृथ्वी के दो ध्रुवों के समान एक-दूसरे से दूर-दूर थे। इसपर भी वे कभी झगड़ते नहीं थे। अपने-अपने मन का उल्लेख कर चुप रहते थे।

सुरेश ने पूछ लिया, ''पर तुम उदास क्यों हो?''

चन्दन ने अपनी चिन्ता का विषय बता दिया। इसपर सुरेश ने कह दिया. ''तुम आज रात की गाड़ी से गाँव क्यों नहीं चले जाते?''

''मौसा जी ने पिता जी की ज़मानत दी हुई है, अत: उनको मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अधिक चिन्ता है। कदाचित् वे स्वयं गाँव जाकर पता करेंगे कि मुकद्दमे के विषय में क्या किया जा रहा है।''

: १० :

दिलजीतसिंह के लक्ष्मणसिंह के प्रति व्यवहार से राजबहादुर भी प्रसन्न नहीं था, अतः उसने उसे उसकी हवेली के बाहर उतारा और फिर लखनऊ के लिए चल पड़ा। दिलजीतसिंह भी इतना असंतुलित-मन हो रहा था कि उसने उसे वहाँ ठहरने अथवा भोजनादि के लिए नहीं कहा। उस समय दिन के ग्यारह बजे थे।

राजबहादुर महोना में अल्पाहार ले चुका था, अतः उसने भी भोजन लखनऊ चलकर ही करने का निश्चय कर लिया था।

दिलजीतसिंह हवेली में पहुँचा तो वह चंचल और मोहनसिंह को वहाँ रहते देख बहुत प्रसन्न हुआ। पद्मा ने बताया, ''यद्यपि मैं चाहती नहीं थी कि चंचल इस घर में नलिनी के बिना आए, परन्तु जब आप चले गए तो मुझे इतनी बड़ी हवेली में अकेले रहते भय लगने लगा। मैंने मोहन से कहा और यह पत्नी-सहित यहाँ आ गया। मुझे भयभीत देख चंचल मुझे अपने कमरे में सुलाती थी और मोहन हमारे कमरे में सोता था।

''मोहन के यहाँ रहने से नौकर-चाकर, जो आपके पकड़े जाने पर कुछ आँखें दिखाने लगे थे, सीधे हो गए और ज्यों-त्यों कर ये पाँच दिन व्यतीत हो गए हैं।''

दिलजीतसिंह ने स्नानादि किया। घर का बना भोजन किया और फिर सोने के लिए अपने कमरे में चला गया। वह हवालात में न तो भलीभाँति खा-पी सका था और न ही सो सका था। इस कारण वह अपने बिस्तर में लेटा तो गहरी नींद सो गया।

वह सायंकाल उठा। मोहनसिंह चंचल को लिये वहाँ आ पहुँचा।

''मोहन! यह जानकर कि तुम यहाँ रहने के लिए आ गए हो, चित्त बहुत प्रसन्न हुआ है।''

''पर बाबा! यह तो माँ के डर जाने के कारण था। अभी हमने
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना मकान छोड़ा नहीं। साथ ही उस मकान में सुख-सुविधा का साधन तो हवेली से अधिक बना लिया है।''

''अब आए हो तो यहीं रहना आरम्भ कर दो। यहाँ भी वह सब सामान बनवा लो, जो वहाँ बनवाया हुआ है।''

''उसके बनने में समय लगेगा। चंचल की राय है कि अब हमारे लिए इस घर का द्वार खुल गया है, इस कारण हम नित्य आया करेंगे, पर रहेंगे वहीं। हाँ, यदि हवेली को ठीक ढंग से बनवा लिया गया तो हम यहाँ पक्के रूप में आकर रहने लगेंगे।''

''तो वहाँ बहुत-कुछ बनवाया है?''

''मकान पिछले वर्ष ही नया बना था। इस कारण उसमें बड़े-बड़े कमरे हैं। प्रांगण में ही कुआँ है। मकान की छत पर एक पक्की सीमेंट की हौदी बनी है और उसमें से नल गुसलखाने में आता है।

''यह सब-कुछ तो मकान बनवाते समय ही बन गया था। हमने वहाँ कमरों में सफेदी, रंग-रोगन और दीवारों पर तस्वीरें, खिड़कियों में पर्दे और बैठकघर में फर्श पर दरी, जाजम तथा खाने के लिए मेज़-कुर्सियाँ लगवाई हुई हैं।''

''अच्छा, ऐसा करो, अभी तुम उसी स्थान पर रहो। परन्तु इस घर में उचित परिवर्तन कराओ और फिर यहाँ आकर रहो। मेरी राय है कि अपनी ताई वाले घर को ठीक करवाओ।''

''आप आज्ञा करेंगे तो दो-तीन मास में हो जाएगा।''

इतना कहकर मोहन और चंचल प्रणाम कर अपने घर चले गए।

उस समय सायंकाल हो रहा था। दिलजीतसिंह ने पत्नी को बुलवाया, ''मेरा पक्का विश्वास है कि मुझे पकड़वाने में लक्ष्मणसिंह का बहुत बड़ा हाथ है।''

''तो राजरानी के घर डाका उसने डलवाया था?''

''सो नहीं। डाका तो मैंने ही डलवाया था।''

''क्यों? किसलिए?''

''मैं उसको सर्वथा अकिंचन बना देना चाहता था जिससे कर्मजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सगाई टूट जाए।''

''यह कोई अच्छी बात नहीं थी। आप भी अत्यन्त हठी हैं। भला जब वह घर छोड़ गई और किसी प्रकार का झगड़ा करना नहीं चाहती थी तो आपने व्यर्थ में यह अपराध कर दिया। ऊपर से यह कहते हैं कि लक्ष्मणसिंह ने आपको पकड़वाया है?''

''हाँ, पकड़वाया उसीने है।''

''और आपके कुकर्म ने नहीं?''

''यह तो जो मैंने किया सो किया। परन्तु माधो को बकाया लक्ष्मणसिंह ने। सुना है वह और डिप्टी कलेक्टर, जिसके पास मुकद्दमा है, दोनों बड़े दोस्त हैं। माधो बका तो मैं पकड़ा गया।''

पद्मा समझ रही थी कि लक्ष्मणसिंह ने क्या किया और क्या नहीं किया, सन्देह-मात्र ही है, परन्तु डाका डलवाना तो एक सत्य बात है। और उसका पति मान रहा है कि डाका उसने ही डलवाया है।

उसने कहा, ''परमात्मा के लिए यह किसीसे कहिएगा नहीं कि डाका आपने ही डलवाया है।''

''नहीं, यह तो तुमको बताया है। अब तो मुकद्दमे के लिए रुपया खर्च होगा। डाके में तो मिला केवल आठ-साढ़े आठ सौ रुपया, परन्तु मैं समझता हूँ कि खर्चा बहुत अधिक हो गया है और मुकद्दमे पर भी खर्च होगा।''

''आप डाका डलवाने से पहले राय तो कर लेते! यह ठीक नहीं हुआ।''

''पर तुम तो राजरानी की हिमायत करती थीं और चंचल का विरोध करती थीं। इस कारण मुझे तुमपर विश्वास नहीं रहा था।''

''मैं समझती हूँ कि जब लक्ष्मणसिंह की डिप्टी कमिश्नर से मित्रता है तो उसके विषय में आपको किसीसे कुछ नहीं कहना चाहिए। मन में कुछ भी हो, प्रत्यक्ष में कुछ कहना ठीक नहीं।''

''पर मैं तो उसको खरी-खरी सुनाकर आया हूँ।''

''सत्य?''

''हाँ, मैंने हवालात से निकलते ही उससे कहा, 'तुम यहाँ किसलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए हो? मुझे कैद भी कराते हो और फिर सहानुभूति प्रकट कर घाव पर नमक भी लगाते हो?' ''

पद्मा का दिल भीतर-ही-भीतर बैठा जा रहा था। इसपर भी उस दिन की मार-पिटाई स्मरण कर चुप रही। जिस दिन कर्मजीत की सगाई की बात थी और उसने अपने पति को समझाने का यत्न किया था, वह बुरी तरह पीटी गई थी। आज तो पति ने उससे भी बड़ा अपराध और भूल की थी। इसपर भी वह मुख से कुछ कह नहीं सकी।

उसे चुप देख दिलजीतसिंह ने कहा, ''कल मुझे लखनऊ जाना है किसी योग्य वकील को करने के लिए। उसके लिए एक सहस्र के लगभग रुपया तोशाखाने से निकाल दो। साथ ही सीतलू को कह दो कि मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो जाए।''

पद्मा उठी और जहाँ तोशाखाने की चाबी रखी जाती थी, वहाँ चाबी लेने के लिए गई, किन्तु चाबी वहाँ पर नहीं थी। उसने उसे बहुत ढूँढी, पर मिली नहीं।

कुछ परेशानी अनुभव करते हुए पद्मा ने पति से पूछा, ''आखिरी बार आपने तोशाखाना कब खोला था?''

''क्यों?''

''चाबी उस गुप्त स्थान पर नहीं है।''

दिलजीतसिंह ने कुछ विचारकर कहा, ''उस दिन खोला था जिस दिन डाका डालनेवालों को शराब पीने के लिए पचास-पचास रुपए दिए थे। आठ सौ रुपये निकाले थे उस दिन।''

''और चाबी कहाँ रखी थी?''

''उसी स्थान पर रख दी थी।''

''वहाँ पर तो नहीं है! याद करिए, किसी अन्य स्थान पर तो नहीं रखी?''

दिलजीतसिंह विचार करने लगा। उसे रह-रहकर यही याद आ रही थी कि चाबी उसी स्थान पर रखी थी। वह बोला, ''उस समय मैं जल्दी में था। कहीं गिर-गिरा गई होगी, जरा ढूँढो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सोने का कमरा जिसमें तहखाना और तोशाखाना था, देखा गया। एक-एक वस्तु को उठा-उठाकर देखा गया। जब वहाँ चाबी नहीं मिली तो फिर घर के दूसरे स्थान ढूँढे जाने लगे। धीरे-धीरे पूर्ण घर ढूँढा गया। रात इसी खोज में व्यतीत हो गई, पर चाबी नहीं मिली।

तलाश करनेवाले थक गए तो सो गए। अगले दिन दिलजीतसिंह कार्यालय में आया तो चाबी वहाँ काम करनेवाली डेस्क पर पड़ी थी। दिलजीतसिंह चकित रह गया। अब वह विचार करने लगा कि चाबी वहाँ कैसे आई ? कभी तो उसके मन में यह विचार आता था कि जिस रात उसने डाका डलवाया था, माधो आया था और शराब के लिए रुपए माँगकर ले गया था। उसे वहीं बैठाकर दिलजीतसिंह तोशाखाने से रुपए निकालने के लिए गया था। उसने रुपए निकाले थे और जहाँ तक उसे स्मरण था उसने चाबी उसी गुप्त स्थान पर रखी थी। परन्तु अब चाबी को वहाँ देख जहाँ उसने रुपये गिनकर माधो को दिए थे, उसे अपनी स्मरण-शक्ति पर सन्देह होने लगा था।

परन्तु विस्मय करने की बात यह थी कि उसके पकड़े जाने के समय पूर्ण घर की तलाशी हुई थी और उस समय दिलजीतसिंह उपस्थित था। उस समय यह चाबी यहाँ नहीं थी। अब यह यहाँ कैसे आ गई ? इससे उसके मन में सन्देह होने लगा। उसे दाल में कुछ काला दिखाई देने लगा।

एकाएक वह उठा और चाबी लेकर सोने के कमरे में चला गया। उसने भीतर से द्वार बन्द किया और तोशाखाना खोल उसमें उतर गया।

वहाँ मोमबत्ती और दियासलाई रखी रहती थी। उसे जलाया गया तो वह स्तब्ध खड़ा रह गया। रुपयों की थैलियाँ लापता थीं। सोने की मुहरों और सलाखों का सन्दूक भी नहीं था। भूषणों की सन्दूकची भी नहीं थी।

उसका तो दिल बैठने लगा था। वह वहीं बैठ गया। कितनी ही देर तक वह बैठा रहा। मोमबत्ती जल रही थी और वह स्वयं को लुट गया समझ अपना जीवनान्त हो रहा अनुभव करता हुआ बैठा था।

कई घंटे इसी प्रकार व्यतीत हो गए। मोमबत्ती समाप्त होकर बुझने लगी तो वह उठा और मोमबत्ती को बुझाकर तोशाखाने से बाहर निकला। उसने सोने के कमरे का द्वार खोला तो नहरगढ़ की छड़ी थी और हथौड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये गाँव का लोहार उसके साथ खड़ा था।

दिलजीतसिंह ने लोहार को उसके साथ खड़ा देख पूछ लिया, "यह क्या कर रहो हो, करीम?"

"बबुआइन कह रही थीं कि यह द्वार तोड़ना है। भीतर से कुंडा चढ़ गया मालूम होता है। मैं देख रहा था कि कहाँ से तोड़ना आरम्भ करूँ? इतने में द्वार खुल गया और भीतर से आप निकल आए हैं।"

"अच्छा जाओ, द्वार तोड़ना नहीं पड़ा।" दिलजीतसिंह ने गम्भीर होकर लोहार को कहा।

लोहार गया तो दिलजीतसिंह ने पद्मा को कहा, "इधर आओ!"

दोनों भीतर गए तो उसने कहा, "सब-कुछ लुट गया।"

"क्या लुट गया?"

"धन-दौलत कुछ नहीं रहा।"

"चाबी कहाँ मिली?"

"कार्यालय में डेस्क के ऊपर रखी थी।"

"कार्यालय में? रात तो वहाँ नहीं थी?"

"कैसे कहती हो?"

"ढूँढते समय मैंने कार्यालय भी देखा था।"

"तो जो शख्स चाबी वहाँ रख गया है, उसीने चोरी की है।"

इसपर चौकीदार को बुलाया गया। जब उससे कई बार पूछा गया तो उसने बताया, "आप सो रहे थे तो बाबू मोहनसिंह आए थे। कुछ देर आपकी प्रतीक्षा करते रहे और फिर चले गए।"

"अच्छा, उसके घर जाओ और उसको बुला लाओ!"

: ११ :

मोहनसिंह के घर को ताला लगा था। चंचल और वह दोनों ही घर पर नहीं थे। भैरोंसिंह के घर से पता किया गया तो मालूम हुआ कि वह भी घर पर नहीं है। परन्तु उसकी पत्नी, चंचल की माँ, ने बताया कि मोहन, चंचल और चंचल के पिता इकट्ठे कहीं गए हैं। पता नहीं कहाँ गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसपर पति-पत्नी में विचार होने लगा कि क्या किया जाए? इस बात से कि मोहनसिंह उसके सोने के कमरे में सोता रहा है, दिलजीतसिंह को विश्वास हो रहा था कि चोरी मोहनसिंह ने ही की है। अतः यह अनुमान लगाना सहज ही था कि वे चोरी का माल छिपाने के लिए गए हैं।

इस अवस्था में क्या किया जाए? यह समस्या थी। दिलजीतसिंह तो तुरन्त थाने में रिपोर्ट लिखाना चाहता था। पद्मा का विचार था कि किसी को उनका गुप्त रूप से पता करने के लिए भेजा जाए कि वे कहाँ गए हैं। जहाँ वे गए होंगे, वहीं धन होगा। जब इतना पता हो जाए तो पुलिस में रिपोर्ट की जाए और अपने सन्देश में वह स्थान बता दिया जाए। इससे निस्सन्देह माल मिल जाएगा।

यह बात युक्तियुक्त लगी। इस कारण सीतलू को तुरन्त प्रतापगढ़ भेजा गया। उसे कहा गया कि वह किसीको बताए नहीं कि वह किसकी तलाश कर रहा है। उसे स्वयं गुप्त रहकर मोहन और उसकी पत्नी जहाँ-जहाँ रहें, उनका पता लगाना है और उनके साथ ही लौटकर आना है।

इसमें तीन दिन लग गए। सीतलू तीसरे दिन आया और उसने बताया कि मोहन और मोहन की पत्नी पहले मौसी के घर रहे हैं और फिर फूफा के घर। वहाँ से वे पुनः मौसी के घर लौट आए थे।

सीतलू आया तो मोहनसिंह और चंचल भी आ गए। पुनः पद्मा और दिलजीतसिंह में विचार-विमर्श होने लगा। यह विचार हुआ कि यदि मोहन मान जाए कि उसने चोरी की है और आधी-आधी बाँटने को तैयार हो जाए तो पुलिस में रिपोर्ट न की जाए।

इसके लिए दिलजीतसिंह ने हवेली के चपरासी को मोहनसिंह को बुलाने के लिए भेजा।

मोहनसिंह ने न आने का बहाना कर दिया। उसने कहा कि उसे तीव्र ज्वर है और वह घर से बाहर नहीं निकल सकता। यह समझने में देरी नहीं लगी कि वह बहाना कर रहा है। कदाचित् वह आना नहीं चाहता अथवा वह कुछ दिन का समय चाहता है और इतने दिनों में माल छिपाने का यत्न किया जाना है। इस विचार के आते ही दिलजीतसिंह मोहन के घर पर जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचा। उसे अपनी धारणा पर विश्वास हो गया कि मोहन बीमार नहीं है; वह न आने के लिए बहाना बना रहा है। वह अभी मकान की ड्योढ़ी पर ही था कि मोहन और चंचल के हँसने का शब्द सुनाई दिया। संयोगवश घर का नौकर वहाँ नहीं था और दिलजीतसिंह दोनों के सामने जा खड़ा हुआ।

मोहन ने एक मुर्गा छुरी से काटा था और आँगन के एक कोने में बैठा उसकी खाल निकाल रहा था। मुर्गे का मांस खाना बकरे के मांस से अधिक गन्दा माना जाता था।

दिलजीतसिंह स्वयं मांस नहीं खाता था। मुर्गी का अण्डा अथवा मांस खाना तो घोर नारकीय कार्य मानता था। वह मोहनसिंह को मुर्गे की सफाई करते देख ग्लानि से भर गया। छुरी, जिससे मुर्गा काटा गया था, मोहनसिंह के पास रखी थी। दिलजीतसिंह ने पहुँचते ही पूछता, "मोहन! क्या कर रहे हो?"

"ओह बाबा, तुम? यहाँ क्यों चले आए?"

"तुम्हें ज्वर था न? देखने चला आया हूँ।"

"वह तो बहाना था। मैं यहाँ के किसी आदमी को बताना नहीं चाहता था कि मैं मुर्गा खाता हूँ।"

"परन्तु मुझे तुमसे ज़रूरी काम था।"

"बताइए, क्या काम है?" उसने मुर्गा वहीं रख दिया और उठकर खड़ा हो गया।

चंचल भागी-भागी कमरे में गई। दो कुर्सियाँ उठा लाई और आँगन में रख दीं। उसका मतलब था कि पिता-पुत्र बैठकर बात करें।

मोहनसिंह ने कह दिया, "बाबा! बैठो। बात यहीं करोगे अथवा हवेली में?"

इस समय तक दिलजीतसिंह ने चंचल के गले में एक हार और कानों में कर्णफूल देखे और पहचान लिये थे। इस कारण श्वसुर ने पतोहू को भी कह दिया, "तुम भी बैठ जाओ!"

आँगन में एक खाट पड़ी थी। चंचल उसको घसीटकर आगे ले आई और फिर उस पर बैठ गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलजीतसिंह ने कहा, ''मेरे घर चोरी हो गई है।''

''क्या चोरी हो गई है ?''

''पूर्ण सम्पत्ति। लगभग एक लाख रुपए कीमत की थी।''

''कहाँ रखी थी ?''

''तो तुम नहीं जानते ?''

''बाबा! मैं कैसे जान सकता हूँ ?''

''तुम तो कई बार तोशाखाने में जा चुके हो।''

''पर बाबा, उसमें क्या और कहाँ रखा है, मुझको मालूम नहीं।''

''मोहन, झूठ मत बोलो! देखो, मैं तुमसे फैसला करने आया हूँ।''

''किस बात का फैसला करने आए हैं ?''

''वह सब माल ले आओ और उसे अपने स्थान पर रख दो। मैं वचन देता हूँ कि उसमें से आधा तुमको दे दूँगा। आधा चन्दन और मदन के लिए रहेगा।''

''पर बाबा! मुझे उसका ज्ञान होगा तभी तो लाऊँगा न ?''

''तो तुम सत्य नहीं बताओगे ?''

''बाबा! मुझे भी ज्ञान नहीं कि तोशाखाना कहाँ था और उसमें क्या था।''

''तो ये बीवी के कर्णफल कहाँ से लाए हो ?''

''बाबा! ये तो आपने अपने हाथ से दिए हैं, अपनी नई पतोहू को।''

''सत्य ?''

''बिलकुल।''

दिलजीतसिंह को क्रोध चढ़ आया। उसने आव देखा न ताव, लपककर छुरी पकड़ ली, जिससे मुर्गा चीरा-फाड़ा जा रहा था। मोहन समझा कि धमकी-मात्र है। उसने कहा, ''बाबा! तुम्हारे पास था ही क्या? यदि कुछ होता तो उस प्रकार के पुराने और गन्दे मकान में रहते ?''

परन्तु मोहनसिंह का अनुमान गलत निकला। दिलजीतसिंह का रक्तचाप बढ़ गया था। उसने वह छुरी मोहनसिंह के पेट में घोंप दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पहिले तो कुर्सी पर से ही नीचे लुढ़क गया। चेचन चीख मारती हुई

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कमरे को भागी। दिलजीतसिंह उसको चुप कराने के लिए अथवा उसकी भी हत्या करने के लिए उसके पीछे भागा। चंचल ने यही समझा कि वह उसकी भी हत्या करने आया है। उसने कमरे का द्वार बन्द कर भीतर से कुण्डा चढ़ा लिया। कमरे की खिड़की मकान के बाहर को थी। उसने खिड़की में खड़े होकर शोर मचाना आरम्भ कर दिया, ''बचाओ, बचाओ!''

गाँव के लोग मकान के प्रांगण में आ गए। सबने दिलजीतसिंह को रक्त से लथपथ छुरी हाथ में लिये कमरे के द्वार को धकेलकर खोलते देखा तो उसको पकड़ने के लिए लपके। दिलजीतसिंह ने छुरी घुमाते हुए वहाँ से भागने का यत्न किया, परन्तु एक मनचले युवक ने उसकी छुरीवाली कलाई पकड़कर उसको पाँव की अड़ेस से नीचे गिरा दिया। इतने में बहुत-से लोग उसको पकड़ने में सफल हो गए। उन्होंने उसके हाथ-पाँव बाँध दिए और गाँव के चौकीदार को बुला लिया। वह अपनी बाइसिकल पर महोना गया और वहाँ की चौकी से एक दर्जन सिपाही बुला लाया।

मोहन के घर पर पुलिस बैठ गई और बयान लिखने लगी। दिलजीतसिंह को और मोहन के शव को एक बैलगाड़ी में रख पुलिस की देखरेख में प्रतापगढ़ ले गए और शव हस्पताल में और कैदी को हवालात में भेज दिया। उसी दिन दिलजीत और अन्य लोगों के बयान लिये गए। दिलजीतसिंह ने तो इतना ही कहा, ''इसने मेरी चोरी की थी। मुझे क्रोध चढ़ आया और मैंने इसकी हत्या कर दी।''

लोगों ने जैसा देखा था, वैसे बयान दे दिए। चंचल के बयान भी हुए। उसने बताया कि हम अभी प्रतापगढ़ से लौटे ही थे कि मेरे श्वसुर आए और पति को गालियाँ देने लगे। मैं और पति उनको शान्त करने का यत्न करते रहे थे कि एकाएक वे उठे और मुर्गा काटनेवाली छुरी पकड़कर अपने पुत्र की हत्या कर बैठे और फिर मेरी हत्या करने के लिए मेरे पीछे भागे। मैं भागकर कमरे में जा भीतर से कुण्डा चढ़ाकर ही बच सकी। इसपर वे दरवाज़ा तोड़ने का यत्न करने लगे तो मैंने शोर मचा दिया। जब बाहर शान्ति हो गई तो मैंने द्वार खोला और बाहर आई। मैंने देखा कि मेरे श्वसुर के हाथ-पाँव बँधे हुए हैं और वे उन बंधनों में छटपटा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय अध्याय

दिलजीतसिंह के व्यवहार से लक्ष्मणसिंह को न केवल सरवरगंज से अरुचि हो गई, प्रत्युत घृणा भी हो गई। यदि उसकी लड़की महेश्वरी की सगाई कर्मजीत से न हुई होती तो मन में अरुचि प्रधान रहती। परन्तु इस संबंध से अरुचि से ग्लानि, ग्लानि से घृणा और घृणा से प्रतिकार की भावना उत्पन्न हो गई।

अपने स्वभावानुसार इस समस्या को सम्मुख देख उसका मस्तिष्क इसके सुझाव में लीन हो गया। पिछले तीन दिन की भाग-दौड़ की थकान तो पाँच-छः घंटे के आराम से दूर हो गई और उसके उपरान्त वह बाबू दिलजीतसिंह का अभिमान मर्दन करने तथा एक मूर्ख को अपने स्थान पर बैठा देने के विचार से योजना बना बैठा।

अभी तक तो उसने नलिनी की ओर से बँटवारे की ही प्रार्थना की थी, परन्तु वह इतने मात्र से दिलजीतसिंह को किसी प्रकार की शिक्षा दे सकना संभव नहीं समझता था। उसने इसकी पूर्ण ज़मींदारी पर अधिकार जमाकर उसे एक साधारण गुज़ारेदार बना देने का विचार बना लिया।

जब से फैज़ाबाद में मुकद्दमा चलाया गया था, नलिनी महोनावालों के घर पर ही रह रही थी। यहाँ से मुकद्दमा चलाने में उसे सुभीता था। वैसे वह रहनेवाली जौनपुर की थी। उसके पिता एक सरकारी रिटायर्ड ऑफिसर थे। भाई सिंगापुर में किसी प्राइवेट फर्म में नौकरी करता था। अतः उसका एकमात्र आश्रय लक्ष्मणसिंह ही था।

लक्ष्मणसिंह ने नलिनी को बुलाकर कहा, ''मैं एक और प्रार्थना करनेवाला हूँ।''

''क्या ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबू दिलजीतसिंह को सर्वथा ज़मींदारी करने के अयोग्य सिद्ध कर ज़मींदारी के बँटवारे तक उसपर रिसीवर बैठा दिया जाए।"

नलिनी ने विचारकर कहा, "यह तो ठीक है।"

"तो आज मेरे साथ फैज़ाबाद चलो। मैं समझता हूँ कि यह पुण्यकर्म भी कर दिया जाए।"

दोनों फैज़ाबाद जा पहुँचे। शिवकुमार के कारण उसका वहाँ के अधिकारियों से परिचय तो था ही, उसने प्रार्थना की और अगले ही दिन लक्ष्मणसिंह ही सरवरगंज के ज़मींदार की ज़मींदारी का प्रबंध करने और उसकी सम्पत्ति की देख-रेख के लिए गृहीता नियुक्त हो गया। आज्ञा यह थी कि गृहीता पूर्ण प्रबंध अपने हाथ में ले ले और यदि उसकी नियुक्ति अथवा उसके प्रबंध पर परिवार के किसी सदस्य को आपत्ति हो तो वह अदालती चाराजोई करे।

यह सब इस कारण हो सका था कि दिलजीतसिंह पर भारत दंडविधान की धारा ३९१, ३९२ के अधीन मुकद्दमा चल पड़ा था। ऐसे व्यक्ति के लिए परिवार के अल्पायु सदस्यों की सम्पत्ति का प्रबंधक रहना उचित नहीं माना गया। साथ ही यह भी समझा गया कि सब सम्पत्ति के अस्त-व्यस्त किए जाने की सम्भावना हो गई है।

लक्ष्मणसिंह और नलिनी और फिर उसका पिता फैज़ाबाद से लखनऊ चले आए। गृहीता नियुक्त करने की आज्ञा सीधी प्रतापगढ़ भेजी गई।

इस सब प्रबंध में सोमवार हो गया। लखनऊ में लक्ष्मणसिंह को कुछ काम था और नलिनी को भी कुछ कागज़ात इत्यादि पर हस्ताक्षर करने थे। नलिनी का पिता नलिनी को जौनपुर ले-जाने के लिए पहुँचा हुआ था।

लखनऊ का काम समाप्त कर नलिनी तो दो बजे की गाड़ी से जौनपुर जाने के लिए अपने पिता के साथ स्टेशन पर पहुँच गई और लक्ष्मणसिंह अपनी कोठी में जा पहुँचा। उसका विचार था कि अगले दिन प्रतापगढ़ से आवश्यक पुलिस की सहायता प्राप्त कर ज़मींदारी पर अधिकार कर लेगा। परन्तु कोठी में पहुँचते ही उसे सरवरगंज में हुई घटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पता चला। उसके बड़े भाई रामसिंह ने यह सन्देश भेजा हुआ था कि उसकी ज़मानत खतरे में है। उसे आकर उसको बचाने का यत्न करना चाहिए।

यह सन्देश पाते ही वह राजबहादुर की दूकान पर गया और उसे सब स्थिति समझा उसे लेकर चन्दन के होस्टल में जा पहुँचा।

''चलो चन्दन! हम तुमको लेने के लिए आए हैं। तुमको तुरन्त गाँव पहुँचना है।''

''क्यों, क्या बात है?'' उसने लक्ष्मणसिंह के मुख पर चिन्ता की रेखाएँ देखीं और पूछ लिया।

''बताते हैं। शीघ्रता करो! पाँच-छः दिन की छुट्टी का प्रबंध कर आओ।''

चन्दनसिंह होस्टल के सुपरिंटेंडेंट के पास गया और मौखिक रूप में स्थिति बता छुट्टी के लिए कह चला आया। जैसे ही खड़ा था वैसे ही वह उनके साथ मोटर में बैठ चल पड़ा।

राजबहादुर ने अति संक्षेप में स्थिति समझा दी। उसने कहा, ''मोहन की हत्या हो गई है और हत्या के आरोप में तुम्हारे पिता पकड़े गए हैं। अतः यह उचित समझा गया है कि हम वहाँ पहुँचें। तुम्हारे लिए भी यही ठीक समझा गया है।''

वे हज़रतगंज पहुँचे तो राजबहादुर की गाड़ी भी तैयार खड़ी थी और सरस्वती तथा निर्मला भी चलने के लिए तैयार थीं। राजबहादुर ने बताया, ''मोहन की मृत्यु के कारण सरस्वती का जाना ठीक समझा गया है। निर्मला तो इसलिए चल रही है कि वह यहाँ अकेली रहकर क्या करेगी।''

लक्ष्मणसिंह जल्दी में था। इस कारण उसने चन्दन को अपनी गाड़ी में बैठा लिया और राजबहादुर, सरस्वती तथा निर्मला दूसरी गाड़ी में बैठे तो दोनों गाड़ियाँ चल पड़ीं।

मार्ग में लक्ष्मणसिंह ने बताया, ''चन्दन! हवालात से छूटते ही तुम्हारे पिता ने मुझे बहुत बुरा-भला कहा था। इससे मैं तुम्हारे पिता को नलिनी तथा तुम्हारे और मदनसिंह के हितों की रक्षा करने के अयोग्य मानने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। जो व्यक्ति ठीक युक्ति नहीं कर सकता, वह किसी भी उत्तरदायित्व के कार्य पर नियुक्त रहने के योग्य नहीं। अतः मैंने नलिनी से जब-जज के यहाँ यह प्रार्थना करा दी थी कि सम्पत्ति पर गृहीता नियुक्त किया जाए।

"इस सम्बन्ध में पिछले तीन दिन फैज़ाबाद में था। कल तक सब काम समाप्त कर मैं और नलिनी आज लखनऊ पहुँचे थे। यहाँ भी कुछ काम था। वह समाप्त कर नलिनी तो जौनपुर चली गई और मैं अपनी कोठी पहुँचा तो भैया का भेजा एक आदमी मिला है और उसने इस घटना का वृत्तान्त बताया है।

"इस स्थिति से तो मैं समझता हूँ कि मेरा गृहीता नियुक्त होना पूर्ण परिवार के लिए हितकर सिद्ध होगा।

"इस सब कार्य में शिवकुमार ने बहुत सहायता की है और मैं उससे अभी और बहुत सहायता की आकांक्षा रखता हूँ।"

इसपर चन्दन ने पूछ लिया, "आप जानते हैं कि शिवकुमार राजबहादुरसिंह जी को भी भलीभाँति जानता है?"

"हाँ, कुछ समझ तो आया था परन्तु इनकी मित्रता कितनी गहरी है, मैं जानता नहीं।"

"मित्रता नहीं, सम्बन्ध है। आपने निर्मला को तो देखा है?"

"हाँ।"

"उसकी सगाई शिवकुमार के साथ हो चुकी है। छब्बीस जनवरी को विवाह होनेवाला है।"

"ओह!"

"आपने एक बार कहा था कि शिवकुमार चरित्र का अच्छा आदमी नहीं है?"

"मुझे स्मरण नहीं कि मैंने ऐसा कहा हो।" लक्ष्मणसिंह के ऐसा कहने से चन्दनसिंह की बात का खंडन तो हुआ नहीं।

इससे उत्साहित हो चन्दन ने कह दिया, "मैं समझता हूँ राजबहादुर जी को आपको बता देना चाहिए था कि उनका शिवकुमार से क्या सम्बन्ध है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं बताया तो ठीक ही किया है।"

"किसलिए?"

"बताते तो मैं ईमानदारी से उनको इस सम्बन्ध के विपरीत राय देता और फिर वे सम्बन्ध तोड़ देते, और कहीं मेरा नाम बीच में आ जाता तो मेरी उससे बाल्यकाल की मैत्री बिगड़ जाती।"

"परन्तु यदि यह विवाह उचित नहीं तो निर्मला के विचार से अब आपको सब-कुछ उसके पिता को बता देना चाहिए।"

"क्यों, निर्मला से मेरा क्या सम्बन्ध है?"

"वह मेरी बहिन लगती है।"

"ओह, बहिन अथवा प्रेमिका?"

चन्दन इस शोकातुर स्थिति में मुस्कराया और बोला, "मैं आपको इस बात का उत्तर निर्मला के शब्दों में ही देता हूँ। एक दिन मैंने उससे पूछा था, 'एक दिन तुमने यह स्वीकार किया था कि तुम मुझसे प्रेम करती हो?'

"उसका उत्तर था, 'सो अब भी करती हूँ। इसपर भी उस विशेष दिन से पूर्व आपके प्रति मेरे प्रेम का रूप बहिन का स्नेह था। उस दिन मुझे समझ आया था कि यह स्नेह नहीं प्रेम है। परन्तु माँ से बात करने के बाद यह समझ आया है कि पहला विचार, कि बहिन का स्नेह है, ही ठीक था। माँ कहती थी कि बहिन-भाई का स्नेह पति-पत्नी के प्रेम से अधिक पवित्र होता है, इस कारण मैं पुनः इस प्रेम को स्नेह के रूप में देखने लगी हूँ।' "

"और तुमने यह स्वीकार कर लिया है?"

"बात यह है कि जब वह मुझे भैया कहकर सम्बोधन करती है तो मेरा उसे पत्नी के रूप में चिन्तन का उत्साह शिथिल पड़ जाता है। मुझे भी कुछ यही समझ आने लगा है कि बहिन ही ठीक है।"

लक्ष्मणसिंह हँस पड़ा और बोला, "तुम अपने परिवार में विलक्षण हो।"

चन्दन गम्भीर विचार में निमग्न हो गया था। वह विचार कर रहा था कि क्या खराबी है शिवकुमारसिंह में जिससे लक्ष्मणसिंह उसे निर्मला के योग्य नहीं समझता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन को गम्भीर भाव में बैठा देख लक्ष्मणसिंह ने कह दिया, ''अच्छा, मैं समय पाकर राजबहादुर को शिवकुमार का इतिहास सुना दूँगा शेष उसके अपने विचार करने की बात है।''

''मैं समझता हूँ कि इतना तो आपको करना ही चाहिए।''

''तुम्हारे विचार से ही कह रहा हूँ। मैं यह कह दूँगा।''

''यह बात आप विवाह से पहले ही बताएँगे न?''

''हाँ, पहले ही बताऊँगा।''

चन्दनसिंह ने बात बदल दी, ''पिता जी का क्या होगा?''

''पहले पूर्ण घटना का विवरण सुन लूँ, तभी कुछ राय दी जा सकेगी।''

ये लोग सायंकाल आठ बजे के लगभग सरवरगंज पहुँचे। मोहन का शव डॉक्टरी परीक्षा के अनन्तर प्रतापगढ़ से देर से आया था और यह उचित समझा गया कि उसका दाह-संस्कार कर दिया जाए। जब राजबहादुर और लक्ष्मणसिंह की मोटरगाड़ियाँ वहाँ पहुँचीं तो संस्कार हो रहा था। ये लोग पता पाकर श्मशान-भूमि में ही जा पहुँचे। लक्ष्मणसिंह और राजबहादुर वहाँ जा खड़े हुए जहाँ पद्मा, राजरानी और राजरानी के लड़के खड़े थे। उनके साथ ही नलिनी भी खड़ी थी। लक्ष्मणसिंह को उसे वहाँ देख विस्मय हुआ। उसने पूछा, ''तो तुम भी आ गई हो? तुम्हें समाचार किस प्रकार मिला?''

''लखनऊ स्टेशन पर ही एक व्यक्ति ने बताया था कि यह दुर्घटना हो गई है। यह हत्या तो कल सायंकाल हुई थी। मैंने समाचार सुन जौनपुर की बजाय यहाँ आना उचित समझा। टिकट वापस करवाया और प्रतापगढ़ चली आई हूँ। प्रतापगढ़ पाँच बजे पहुँची थी और इक्के से यहाँ आ गई।

''यहाँ आकर यह पता चला है कि चंचल के सम्बन्धी ही कर्ता-धर्ता बने हुए हैं। उनके माता तथा अन्य सम्बन्धियों से उन्होंने अपना पूर्ण सम्पर्क छोड़ दिया है।''

संस्कार समाप्त हो चुका था और समाप्त होते ही सब लोग चंचल और उसके पिता के साथ चले गए। बाद में पद्मा, राजरानी, कर्मजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इत्यादि और लखनऊ से आए लोग हवेली में आ गए।

जब सब बैठे तो सरस्वती रसोईघर में गई और सबके लिए खाने-पीने का प्रबन्ध कराने लगी। श्मशान से लौट पद्मा, राजरानी इत्यादि स्नान करने में संलग्न हो गईं।

यह तो भोजन के समय पता चला कि घटना कैसे हुई। पद्मा ने सारा विवरण सुना दिया।

इसपर नलिनी ने एक बात और बताते हुए कहा, "जब मैं अभी प्रसूतिगृह में थी और माता जी मेरे पास रहती थीं तो गुल्लू के पिता मध्याह्न के समय जब बाबू साहब खेतों को गए होते थे, तोशाखाना खोल उसमें से चोरी कर लेते थे। एक दिन उन्होंने मुझको बताया कि वे ऐसा कर रहे हैं, तो मैंने मना किया और कह दिया कि यदि वे रुकेंगे नहीं तो मैं माता जी को सब बता दूँगी।

"इसके बाद उन्होंने इस विषय में मुझे कुछ बताया नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन दिनों उन्होंने इतनी कम चोरी की होगी कि पता नहीं चली। और अब तो चंचल और वे राय कर ही यहाँ आए होंगे। चंचल माता जी को अपने कमरे में ले जाती रही होगी और गुल्लू के पिता तोशाखाना खाली करते रहे होंगे।"

"यह तो संदेह-रहित है," पद्मा ने कह दिया "कि चोरी मोहन ने की थी और चंचल के कानों के कुण्डल बाबू साहब ने पहचाने होंगे और इसपर उनको क्रोध चढ़ आया होगा।"

लक्ष्मणसिंह ने यह सब कथा सुनी तो उसने एक बात बता दी, "राजबहादुर जी! मैं समझता हूँ कि मुझे अभी तो दो घंटे में नलिनी को लेकर फैज़ाबाद जाना होगा। उससे कोई ऐसी कार्यवाही करानी है जिससे चंचल के संबंधी ज़मींदारी पर अधिकार जमाने के यत्न न कर सकें।"

"क्या करेंगे?"

"आप अपने संबंधी शिवकुमारसिंह से और अपने साढ़ू से मिलकर देखिए, आप उसकी क्या सहायता कर सकते हैं। मैं नलिनी के बच्चे, कर्मजीत इत्यादि के हितों की रक्षा करने के लिए जा रहा हूँ।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नलिनी! दो घंटे आराम कर लो। फिर हम चल देंगे और यदि मैं अपनी योजना में सफल हो गया तो सायंकाल तक यहाँ लौट आएँगे।"

चन्दनसिंह देख रहा था कि लक्ष्मणसिंह कितनी रुचि ले रहा है।

नलिनी और लक्ष्मणसिंह वहीं सोए। वे महोना भी नहीं गए। प्रातःकाल तीन बजे वे फैज़ाबाद लौटने के लिए तैयार हो गए। चन्दनसिंह अपनी बदलती परिस्थिति को देख रात-भर सो नहीं सका था। पहले तो वह अपनी माता जी के पास बैठा रहा। फिर ताई से बातें करता रहा। जब लक्ष्मणसिंह जाने लगा तो उसको और नलिनी को विदा करने के लिए गाड़ी के समीप जा खड़ा हुआ।

लक्ष्मणसिंह ने उसे देखा तो कह दिया, "चन्दनसिंह! मैं तीन बजे के उपरान्त ही लौट सकूँगा, तब तक तुम घर पर ही रहना। चंचल के संबंधियों से सतर्क रहना! मुझे ऐसा लग रहा है कि यहाँ के गाँववाले उसकी सहायता करेंगे, और तुम्हारी अथवा तुम्हारी माता जी की सहायता नहीं करेंगे।"

"क्यों? हमने उनका क्या बिगाड़ा है?"

"कुछ नहीं। केवल यही कि वे तुम्हारे-जैसे नहीं हैं?"

: २ :

राजबहादुर को भी अपनी साली पद्मा की स्थिति भययुक्त प्रतीत हुई थी। इस कारण वह बहुत प्रातःकाल चन्दनसिंह को साथ ले शिवकुमार के बँगले पर जा पहुँचा। चन्दनसिंह ने निर्मला के प्रस्तावित पति को पहली बार देखा तो वह उसके व्यक्तित्व से प्रभावित हुआ था। इस व्यक्तित्व में उसके शारीरिक गठन और कानूनी प्रतिभा का बहुत हाथ प्रतीत हुआ। उसने राजबहादुर को बताया, "दिलजीतसिंह के बचने का एक ही उपाय हो सकता है कि उसे पागल घोषित कराया जाए।"

राजबहादुर ने कहा, "पागल का अभिनय करने के लिए भी तो अतीव बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है जोकि दिलजीतसिंह में नहीं है।"

"उसे समझाने का यत्न करिए। शेष मैं सहायता कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजबहादुर ने बताया, "मैं तो इस कारण आया हूँ कि मोहनसिंह की पत्नी के माता-पिता गाँववालों की सहायता से ज़मींदारी और हवेली पर अधिकार जमाने का यत्न करेंगे। यह ठीक नहीं होगा।"

"पर वे ऐसा क्यों करेंगे?"

"इस कारण कि बाबू साहब का मुकद्दमा न लड़ा जा सके और वह फाँसी पा जाए। यह भी संभव है कि गाँववाले बाबू साहब की पत्नी की हत्या कर दें।"

"ऐसी संभावना है क्या?"

"रात संस्कार के समय उनकी आँखों में खून देखकर मैं यह अनुमान लगा रहा हूँ।"

"तो मैं अभी आपके साथ बड़े साहब के पास चलता हूँ और पद्मा जी की सुरक्षा का प्रबंध कर देता हूँ।"

परिणाम यह हुआ कि दिन के आठ बजे तक सरवरगंज में दो दर्जन पुलिस के सिपाही एक हवालदार के साथ बैठ गए।

दस बजे डिप्टी कलक्टर साहब का पत्र लेकर ये बाबू दिलजीतसिंह से मिलने जेल में जा पहुँचे।

जेल के दारोगा ने बताया, "बाबू साहब को एक पृथक् कमरे में बन्द कर रखा है।"

"किसलिए?"

"उसका दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा।"

"क्या किसी पर आक्रमण किया है उन्होंने?"

"नहीं, आक्रमण तो नहीं किया परन्तु वह अपने होश-हवास में नहीं। जेल के डॉक्टर ने तो यह कहा है कि यदि उसे कुछ दिन शान्ति से रहने दिया गया तो उसका दिमाग ठीक हो जाएगा।"

"हम उनसे मिलने आए हैं।"

"अगर उनको क्रोध चढ़ आया तो वे आप पर आक्रमण भी कर सकते हैं।"

"दो सिपाही हमारे साथ भेज दीजिए। मैं समझता हूँ कि मुझे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लड़के को देख उनके मन को शान्ति मिलेगी।''

जेलर ने दो सिपाही और वार्डन को साथ कर दिया। ये दरवाज़ा खोल भीतर गए तो बाबू साहब शोकाकुल घुटनों में सिर दिए बैठे थे।

चन्दन और राजबहादुर कुछ देर तक समीप खड़े रहे। दिलजीतसिंह ने सिर नहीं उठाया। इसपर चन्दन ने आवाज़ दी, ''बाबा!''

''बाबा? नहीं, मैं बाबा नहीं हूँ।'' दिलजीतसिंह ने मुख ऊँचा कर दिया।

''आप मेरे बाबा हैं।''

''तुम कौन हो?''

''मैं चन्दनसिंह हूँ।''

इसपर दिलजीतसिंह चन्दन के मुख पर इस प्रकार देखता रहा मानो कुछ स्मरण करना चाह रहा हो, परन्तु स्मरण नहीं आ रहा हो। अब राजबहादुर ने कह दिया, ''मैं राजबहादुर लखनऊ से आया हूँ।''

''क्यों आए हो?''

''आपको छुड़ाने के लिए।''

''मुझे छुड़ाने?...कहाँ से छुड़ाने?...क्या मैं बँधा हुआ हूँ? मैं तो छूटा हुआ हूँ।''

राजबहादुर और चन्दनसिंह मन से प्रसन्न थे। वे समझ रहे थे कि प्रकृति स्वयं मार्ग दिखा रही है। यह तो अपने-आप अपने विचारों के बोझ से दबा हुआ विक्षिप्त हो रहा है।

''मोहन का देहान्त हो गया है।'' उसने कहा।

''मैं मोहन नहीं हूँ।''

''तो आप कौन हैं?''

''मैं भगवान कृष्ण का अवतार हूँ।''

बहुत यत्न करने पर भी दिलजीतसिंह कोई मतलब की बात नहीं कर सका। वे निराश हो डिप्टी कलेक्टर के पास जा पहुँचे। उसको उसकी वास्तविक स्थिति बताई तो वह हँस पड़ा। शिवकुमार ने कह दिया, ''मालूम होता है कि वह स्वयं ही अपने बचाव का उपाय कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु डॉक्टरों को धोखा दे सकना अति कठिन है। यदि यहाँ यह ठीक नहीं हुआ तो निरीक्षण के लिए लखनऊ भेजा जाएगा। वहाँ के लिए मैं आपको एक पत्र दे देता हूँ। आप वह सिविलसर्जन को दे दीजिएगा। वह उसे पागल घोषित कर देगा। तब हम इसे छुड़ाने का यत्न करेंगे।''

''अब क्या करना चाहिए?''

''एक प्रार्थना उनके लड़के की ओर से दिलवा दीजिए कि उसका पिता पागल मालूम होता है, अतः उसको डॉक्टरी मुआयने के लिए लखनऊ भेजा जाए।

''मैं इसके लिए यह आज्ञा दिलवा दूँगा। तब उसको हिरासत में ही वहाँ से लाया जाएगा। आगे डॉक्टरों की रिपोर्ट और इसके नाटक करने की योग्यता पर निर्भर है।''

राजबहादुर समझ गया कि शिवकुमार अभी भी समझ रहा है कि दिलजीतसिंह पागल होने का नाटक कर रहा है। उसने उसके भ्रम-निवारण का यत्न नहीं किया।

एक प्रार्थना लिखाई गई और वह शिवकुमार को दे दी गई। उसने कह दिया, ''अब आप जा सकते हैं। दो-तीन दिन में कैदी को पहले लखनऊ जेल में और फिर सिविलसर्जन की परीक्षा के उपरान्त पागलखाने में भेज दिया जाएगा। इसके उपरान्त हम यहाँ मुकद्दमे की कार्यवाही पहले स्थगित करेंगे और फिर मुकद्दमा वापस ले लेंगे।''

जब राजबहादुर जाने लगा तो शिवकुमार ने उससे पूछ लिया, ''लक्ष्मणसिंह का आपसे क्या सम्बन्ध है?''

राजबहादुर ने उसके पूछने पर कह दिया, ''वह मेरा दिली दोस्त है।''

''तब तो हमारा उससे दुगुना सम्बन्ध है।''

इन सब बातों के उपरान्त राजबहादुर और चन्दनसिंह तीसरे प्रहर सरवरगंज पहुँचे। अभी तक फैज़ाबाद से कोई समाचार नहीं आया था। गाँव में पुलिस बैठ जाने से आतंक छा गया था और सब शान्ति से अपने-अपने काम पर लगे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इन्होंने मध्याह्न का भोजन नहीं किया था। भोजन कर कुछ आराम करने लगे थे कि शिवकुमार, लक्ष्मणसिंह और नलिनी वहाँ आ पहुँचे।

शिवकुमार ने दिलजीतसिंह की पत्नी पद्मा को बुलाकर कह दिया, ''फैज़ाबाद के सब-जज की यह आज्ञा हुई है कि बाबू लक्ष्मणसिंह को बाबू दिलजीतसिंह की सम्पत्ति का गृहीता नियुक्त किया जाता है। मैं इनको यहाँ पर नियुक्त करने के लिए आया हूँ। साथ ही यहाँ पर मरहूम मोहनसिंह और उसकी बेवा चंचलदेवी के घरों की तलाशी लेने के लिए आया हूँ।''

चाबियाँ लक्ष्मणसिंह के हवाले कर दी गईं और कार्यालय में जो कुछ था, उस सबकी सूची बनाकर उसके हवाले कर, उससे हस्ताक्षर लेकर चार्ज लक्ष्मणसिंह को दे दिया गया।

यद्यपि लक्ष्मणसिंह का अफसर बन जाना सबको अखरा, परन्तु ज़मींदारी लावारिस रह जाने के स्थान पर किसी ज़िम्मेदार आदमी के हाथ में जाने से सुख ही अनुभव हुआ।

सरवरगंज की तलाशी से तो कुछ प्राप्त नहीं हुआ, परन्तु जब प्रतापगढ़ में चंचल के मौसा और फूफा के घरों की तलाशी ली गई तो दिलजीतसिंह के तोशाखाने से चोरी गया प्रायः सब माल बरामद हो गया।

अगले दिन राजबहादुर और चन्दनसिंह लखनऊ जाने के लिए तैयार हो गए। लक्ष्मणसिंह की ही राय से धर्मजीत बनारस से आया हुआ था। विश्वजीत पुनः पंडित तुलसीसहाय से पढ़ने के लिए आने लगा था और चन्दन लखनऊ परीक्षा की तैयारी करने चल पड़ा। धर्मजीत और कर्मजीत को लक्ष्मणसिंह ने अपनी सहायता के लिए वहीं रख लिया।

जब राजबहादुर, चन्दनसिंह, निर्मला और सरस्वती मोटर में सवार होने लगे तो लक्ष्मणसिंह महोना से आ गया और इनके विदा होने से पूर्व वह राजबहादुर को एक ओर ले-जाकर समझाने लगा। उसने पूछा—

''आपसे चन्दनसिंह ने शिवकुमार के विषय में कुछ कहा है?''

''नहीं।''

''वह मेरा बाल्यकाल से मित्र है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो शिवकुमार ने स्वयं बताया है।"

"मैंने चन्दनसिंह को बताया था कि निर्मला का शिवकुमार से विवाह ठीक नहीं।"

"किसलिए?"

इसपर लक्ष्मणसिंह ने शिवकुमार का संक्षिप्त-सा इतिहास बता दिया, "पहली बात यह कि दोनों की आयु में अन्तर बहुत ज्यादा है। उसकी आयु मेरी जितनी ही होनी चाहिए। मैं इस समय पैंतीस वर्ष की आयु का हूँ। मेरा और उसका विवाह एक ही वर्ष और मास में हुआ था। हमारे पिता जी ने तो विवाह के साथ ही गौना ले लिया, परन्तु शिवकुमार के पिता ने विवाह तो कर लिया परन्तु गौना ले-जाने के पूर्व तीस हज़ार रुपया नकद माँग लिया। शिवकुमार का श्वसुर दे नहीं सका और शिवकुमार की पढ़ाई खत्म हो जाने पर भी गौना नहीं आया। यह जौनपुर में कानूनगो नियुक्त हो गया। उन दिनों इसके पास रुपया आवश्यकता से अधिक आने लगा तो यह व्यसनों में फँस गया। पेशेवर औरतों से जीवन भरने लगा। इसको फरंग रोग हो गया तो यह किसी अनुभवविहीन हकीम के जाल में फँस गया। जब हालत बहुत खराब हो गई तो यह भागा-भागा मेरे पास आया। मैंने इसे अपने प्रतापगढ़वाले बँगले में रखा और इसकी चिकित्सा कराई।

"उन दिनों मैंने इसे समझाया कि रुपया व्यर्थ गँवाने और रोग मोल लेने से अच्छा तो यह है कि यह अपनी पत्नी को ले आए। उसमें भी मैंने इसकी सहायता की, परन्तु यह अपनी पत्नी से सन्तुष्ट न रहता हुआ आवारा औरतों के पीछे भागता रहा। यह फिर रोगग्रस्त हो गया। इस बार इसकी पत्नी भी बीमार हो गई। दोनों की चिकित्सा कराई गई। वह उस समय गर्भवती थी। चिकित्सा से उसका गर्भपात हो गया और वह गर्भपात के साथ ही मृत्यु का शिकार हो गई। यह ठीक हो गया, तब से इसने विवाह नहीं किया। मैं समझता हूँ कि फरंग रोग जब किसीको एक बार लग जाता है तो यह न केवल उसमें ही छिपा हुआ विद्यमान रहता है वरंच यह सन्तान से सन्तान तक जाता है।"

राजबहादुर यह इतिहास सुन काँप उठा; बोला, "परन्तु अब यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगाई टूट कैसे सकती है?''

''क्यों, बहुत धन दे चुके हैं?''

''मैं धन की बात नहीं करता। मैं तो वचन-भंग की बात कर रहा हूँ। विशेषरूप में जब वह हमारी इतनी सहायता कर रहा है।''

''यह बात आप मुझपर छोड़िए। आप अपना विचार बताइए कि आप क्या चाहते हैं? यदि सगाई तोड़ने का विचार हो तो बताइए। मैं आपका यह सम्बन्ध उसकी ओर से ही तुड़वा सकता हूँ।''

''तो कर दीजिए।''

''लड़की के विवाह का शीघ्रातिशीघ्र प्रबन्ध करने की तैयारी कर दीजिए। एक बात और करिए। लखनऊ से जाकर एक पत्र लिखिए कि 'मोहनसिंह की मृत्यु के कारण विवाह कम-से-कम तीन महीने स्थगित करना पड़ेगा।' शेष मैं समझ लूँगा।''

''यह लिख दूँगा। एक बात और। निर्मला चन्दन से लगाव रखती है। आप इस विषय में क्या कहते हैं?''

''मुझे इस बात का ज्ञान है। चन्दनसिंह को मैं अयोग्य नहीं मानता। केवल उसको अभी कुछ अल्पायु का मानता हूँ।''

''वह निर्मला से तो बड़ा है।''

''शरीर की आयु में। परन्तु मन और बुद्धि से वह निर्मला से छोटा है। एक बात मैंने देखी है कि पिछले बीस-पचीस दिन में इसने बौद्धिक आयु में वृद्धि की है, परन्तु अभी भी वह उससे पिछड़ा हुआ है।''

राजबहादुर को यह बात समझ नहीं आई। इसपर भी वह इस विषय में कुछ न कहते हुए बोला, ''तो कोई ऐसी बात कर दीजिए जिससे बिना बदमज़गी के सम्बन्ध टूट जाए।''

''आप पत्र लिखकर प्रतीक्षा करिए।''

: ३ :

इन सबको विदा कर लक्ष्मणसिंह जहाँ महोना की ज़मींदारी का प्रबन्ध करने लगा, वहाँ बाबू दिलजीतसिंह की ज़मींदारी की देख-रेख भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगा। कर्मजीत तथा धर्मजीत को उसने अपने साथ काम पर लगा दिया।

एक दिन प्रतापगढ़ से शिवकुमार का विश्वस्त सेवक उसको बुलाने के लिए आया। वह समझ गया कि राजबहादुर ने निश्चयानुसार उसको पत्र लिखा है और शिवकुमार उसे राजबहादुर से सम्बन्धित समझ इस विषय में हस्तक्षेप करने के लिए बुला रहा है। इस कारण वह अपनी मोटर में सवार हो प्रतापगढ़ शिवकुमार के बँगले में पहुँच गया।

शिवकुमार उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था।

''सुनाओ शिव! क्या बात है?''

''दो बातें हैं।''

''तो पहले एक बताओ।''

''बाबू दिलजीतसिंह की रिपोर्ट आई है कि वह सत्य ही पागल हो गया है।''

''मैं तो यह समझता हूँ कि वह अर्द्धपागल तो पहले ही था और बाद में सम्पत्ति के लुट जाने से वह पूरा पागल हो गया होगा और उसी पागलपन में उसने डाका डलवाया और पुत्र की हत्या कर दी।''

''मुकद्दमे में ऐसे प्रमाण उपस्थित किए जाने चाहिएँ कि उसका मस्तिष्क डाका डालने से पहले ही बिगड़ गया था। इससे दोनों मुकद्दमों को वापस लिया जा सकता है।''

''यह तो साबित किया जा सकता है। उसके अर्द्धपागल होने के प्रमाण और उसके बढ़ते हुए पागलपन के प्रमाण दिए जा सकते हैं।''

''ये आने चाहिएँ। मैं मुकद्दमा बाबू साहब से वापस लेकर डाका डालनेवालों को संकेत-मात्र का दण्ड देकर छोड़ दूँगा।

''दूसरी, मुकद्दमे में अभी कुछ देर लगेगी। यदि तीन मास तक भी वह पागल ही रहा तो वह हत्या का मुकद्दमा वापस लिया जा सकता है।''

''यह हो जाएगा। अब दूसरी बात?''

''ये राजबहादुर कैसा आदमी है?''

''क्यों?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक दिन इसकी दूकान पर मैं मोटर ठीक कराने के लिए गया था। वहाँ सरसरी बात हुई और सगाई की बात होने लगी। और फिर तीन-चार दिन में ही उसने लड़की की सगाई कर दी। अब उसका पत्र आया है कि मोहन की मृत्यु के कारण विवाह कुछ काल के लिए स्थगित करना होगा। मैं शीघ्र विवाह करने के लिए उत्सुक था।"

"तो तुमसे सगाई हुई है उस लड़की की?"

"हाँ।"

"तुमने लड़की देखी है?"

"हाँ, देखी है।"

"पसन्द आई है?"

"बहुत पसन्द तो नहीं परन्तु गुज़ारे लायक है। अब जीवन में स्थिर होना चाहता हूँ।"

लक्ष्मणसिंह ने सिर हिलाते हुए कहा, "वह तुम्हारे लायक नहीं। आयु में बहुत छोटी है, बहुत सुन्दर भी नहीं है और साथ ही वह सर्वथा अज्ञान है। तुम्हारे जीवन को देख वह तुम्हारे पास से भाग जाएगी।"

"लक्ष्मण! तुम सदा ही मेरे जीवन का काँटा बदलते रहे हो।"

"दोस्त! कुछ भलाई ही करता रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि उससे विवाह कर तुम सुखी नहीं होगे।"

"यह तो तुमने एक कठिन समस्या में उलझा दिया है। एक तो पाँच सहस्र के लगभग रुपया इन्होंने दिया है। दूसरे, वचन हो चुका है। तीसरे, मैं विवाह करना चाहता हूँ। मैं मुन्नी का मान-मर्दन करना चाहता हूँ।"

"परन्तु वह क्या मान-मर्दन करेगी? मुन्नी उससे अधिक सुन्दर, सुघड़ और चतुर है।"

"तो फिर उससे सुन्दर पत्नी कहाँ से लाऊँ?"

"कहो तो मैं यत्न करूँ।"

"कहाँ यत्न करोगे? कोई देहातन नहीं पकड़ लाना।"

"नहीं, मुन्नी की लड़की कैसी रहेगी?"

शिवकुमार आँखें मूँद विचार करने लगा। विचारकर बोला, "उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह से बदनामी होगी और फिर विवाह के बाद वह माँ की भाँति बनना नहीं चाहेगी क्या?''

''देखो शिव! उसको मोल ले लो। मोल लेकर उसको किसी की लड़की बना विवाह कर लो। ऐसे तो पहली आपत्ति नहीं रहेगी। दूसरे, वह माँ से अधिक समझदार है। समझाओगे तो मान जाएगी।''

''तो कर दो प्रबन्ध! परन्तु राजबहादुर के दिए रुपयों का क्या होगा?''

''रुपया लौटाने की आवश्यकता नहीं। उसने पत्र भेजा है, तुम इसका उत्तर मत दो। इसका अर्थ है कि सगाई टूट गई। यदि उसने कुछ झगड़े की इच्छा प्रकट की तो मैं समझा दूँगा। इस बात की चिन्ता व्यर्थ है।''

''यह विवाह छब्बीस जनवरी के बाद ही होना चाहिए।''

''यत्न करूँगा कि फरवरी मास के भीतर हो जाए।''

लक्ष्मणसिंह मुन्नी से भाव-ताव करने लगा।

राजबहादुर समझ गया था कि वह अपनी लड़की को गड्ढे में धकेलने जा रहा था। वैसे तो उसको चन्दन से व्यवहार में मोटरगाड़ी में ही अन्तर दिखाई देने लगा था।

वह जानता था कि निर्मला के चन्दन से विवाह में सरस्वती को भारी आपत्ति थी। जब से चन्दन लखनऊ में आकर रहने लगा था, वह उसके साथ पुत्र के समान व्यवहार करती थी। बाद में जब राजबहादुर ने चन्दन को अपने कारोबार में उत्तराधिकारी बनाने का विचार किया था, तो उसको इस विवाह में और भी अधिक आपत्ति होने लगी थी। वह दामाद और पुत्र में अन्तर मानती थी और समझती थी कि दामाद पुत्र का स्थानापन्न नहीं हो सकता।

राजबहादुर को सरस्वती का विचार एक भावना-मात्र ही प्रतीत होता था। वह इसमें युक्ति नहीं मानता था। समस्या का विकट रूप तो तब प्रकट हुआ था जब निर्मला ने चन्दन से विवाह में रुचि प्रकट की। राजबहादुर तो इसको स्वाभाविक बात मानता था, पर सरस्वती की भावना को आघात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा था। इस कारण उसने निर्मला को समझाया तो उसको सन्तोष अनुभव हुआ और वह सहज ही मान गई। उसने माता द्वारा लगाए प्रतिबन्धों का भी यथासम्भव पालन किया था।

जब शिवकुमार ढूँढा गया तो निर्मला ने देखा था कि वह एक मध्यम आयु का व्यक्ति है, परन्तु उसे अपने माता-पिता के अपने प्रति प्रेम पर विश्वास था और वह उनको स्वयं से अधिक बुद्धिमान मानती थी। अतः जब उसे यह बताया गया कि उसे जीवन-भर सुख मिलने की आशा करनी चाहिए तो वह सन्तोष कर बैठी।

जहाँ तक उसके चन्दन से लगाव का प्रश्न था, उसका मुख उसने बुद्धि से मोड़ लिया था। उसे चन्दन के प्रति बहिन के स्नेह का रूप दे दिया था।

अब एक नई करवट आई। लक्ष्मणसिंह ने जब शिवकुमार की बीमारी की बात बताई और उसकी बीमारी से उसकी पत्नी के देहान्त होने तथा मृत बालक के पैदा होने की बात बताई तो वह शिवकुमार का विचार छोड़ बैठा।

चन्दनसिंह भी उनके साथ ही मोटर में लखनऊ जा रहा था और वह लक्ष्मणसिंह को राजबहादुर के साथ पृथक् में बातें करते देख समझ गया था कि निर्मला के भावी पति के विषय में बातें हो रही हैं। और फिर मार्ग में राजबहादुर के मुख पर फीकापन देखता रहा था। उसे विश्वास हो गया था कि लक्ष्मणसिंह ने शिवकुमार की कोई भयंकर बात राजबहादुर को बताई है। मार्ग में सरस्वती ने तो बातें कीं, पर राजबहादुर 'हाँ' 'हूँ' के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कह सका।

सरस्वती विस्मय कर रही थी। उसने एक बार पूछा भी था, "यह लक्ष्मणसिंह क्या कहता था?"

राजबहादुर ने बात इतने मात्र से टाल दी, "वह तो कोई दूसरी बात थी।"

सरस्वती समझ रही थी कि उसका पति इस समय मोटर में वह बात बताना नहीं चाहता। मोटर में ड्राइवर था, ड्राइवर के समीप चन्दन बैठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था, फिर निर्मला भी थी। इस कारण उसने बातों को आगे नहीं चलाया।

ज्यों-त्यों कर यात्रा समाप्त हुई। जब सामान मोटर से उतारा जा रहा था, राजबहादुर ने चन्दन से पूछ लिया, "तुम तो कॉलेज जाना चाहोगे?"

इस पूछने के ढंग से चन्दन समझ गया कि उसे आदेश है कि वह होस्टल को जाए। अतः उसने कह दिया, "जी।"

"ठीक है, मोटर छोड़ आएगी।"

निर्मला और सरस्वती मकान पर चढ़ गईं। राजबहादुर ने चन्दन से पूछ लिया, "लक्ष्मणसिंह से शिवकुमार के विषय में कुछ बात हुई थी?"

"जी।"

"क्या कहता है वह?"

"मुझे तो उसने इतना मात्र कहा था निर्मला का विवाह उससे ठीक नहीं!'

"इसपर मैंने कहा था कि यह बात उन्हें आपको बतानी चाहिए।"

"तो तुमने मुझको क्यों नहीं बताया?"

"देखने में मुझे शिवकुमार में कोई दोष नहीं दिखाई दिया। इस कारण एक निराधार बात को मैं कहना नहीं चाहता था।"

"अच्छी बात है। अब तुमको निश्चिन्त होकर अपनी पढ़ाई में लीन हो जाना चाहिए। बहुत दिन व्यर्थ गए हैं।"

इस समय तक सामान मकान पर जा चुका था। केवल चन्दन का सूटकेस गाड़ी में रह गया था। जब ड्राइवर बैठा तो चन्दन भी उसके समीप बैठ गया।

इस समय मध्याह्नोत्तर तीन बज चुके थे और सुरेश कॉलेज से लौट कमरे का द्वार खोल रहा था कि चन्दन वहाँ जा पहुँचा।

"चन्दन! सुनाओ, क्या बात है?" सुरेश ने द्वार खोलते हुए पूछ लिया।

दोनों कमरे में बैठे तो चन्दन ने भाई के मारे जाने और पिता के पकड़े जाने तथा पागल हो जाने का सब वृत्तान्त बता दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेश की भविष्यवाणी थी, "तुम्हारे पिता जी छूट जाएँगे। परन्तु एक बात प्रतीत होती है।"

"क्या?"

"वे अति क्रूर प्रकृति के व्यक्ति प्रतीत होते हैं। तुम तो सर्वथा सज्जन व्यक्ति हो। मैं संदेह करने लगा हूँ कि तुम अपने बाप के बेटे हो भी कि नहीं।"

"हत् तेरी बदमाश की! माँ को गाली देने लगा है?"

सुरेश हँस पड़ा; बोला, "चन्दन, मैंने गाली नहीं दी। एक अन्वेषण करनेवाले विद्यार्थी की भाँति एक समस्या का उल्लेख-मात्र किया है। देखो, तुमने कभी सुना है कि जब यज्ञोपवीत दिया जाता है तो लड़के का दूसरा जन्म होता है। उस समय उसे द्विजन्मा कहते हैं। उस समय उसका माता-पिता कौन होता है?

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा तुम्हारे पिता द्वारा नहीं हुई। इसी कारण तुम्हारा स्वभाव वह नहीं जो तुम्हारे पिता का है।"

"यह बात तो ठीक है।"

"तो तुम मानते हो कि मेरी सूझ-बूझ तुमसे अधिक है।"

चन्दन हँस पड़ा।

: ४ :

चन्दन समझने लगा था कि यदि उसे परीक्षा देनी है तो उसे अब पढ़ाई में जुट जाना चाहिए। इस कारण वह निर्मला को भूल जाने का यत्न करने लगा। इसके लिए उसने मौसी के घर जाना बन्द कर दिया। छब्बीस जनवरी आई और चली गई। उसे निर्मला के विवाह का निमन्त्रण नहीं आया। वह समझ गया कि विवाह, कम-से-कम, स्थगित तो हो ही गया है। इसपर भी वह मौसी से मिलने अथवा पूछने नहीं गया।

इस बीच लक्ष्मणसिंह एक बार आया था और उसके पिता का समाचार दे गया था। उसने बताया था कि उसके पिता की बीमारी लखनऊ आने पर बढ़ी ही है, कम नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब चन्दन इस विषय में चिन्ता व्यक्त करने लगा तो लक्ष्मणसिंह ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि यह ठीक ही हो रहा है। मैं आशा करने लगा हूँ कि हत्या का मुकद्दमा पुलिस वापस ले लेगी। यह समझा जाने लगा है कि उसने हत्या भी पागलपन में ही की है।"

छब्बीस जनवरी को सुरेश ने चन्दन से पूछ लिया, "तुम्हारी बहिन का विवाह नहीं हो रहा क्या?"

"भाई की मृत्यु और पिता जी के मुकद्दमे के कारण विवाह स्थगित हो गया प्रतीत होता है।"

चन्दन अपना अनुमान बता रहा था। वास्तव में वह भी विस्मय अनुभव कर रहा था। इसपर भी उसने मौसी के घर जाकर पता करने की इच्छा प्रकट नहीं की।

एक दिन वह प्लेग्राउँड से हॉकी खेलकर आ रहा था तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने निर्मला को होस्टल के फाटक पर अपनी मोटरगाड़ी में देखा। चन्दन ने नेकर, कमीज़ और 'फ्लीट' डाले हुए थे। हाथ में हॉकी-स्टिक थी।

उसे देख निर्मला ने आगे बढ़कर कहा, "मैं आधे घण्टे से आपकी प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

"क्यों, क्या काम है?"

"माँ ने आपको बुलाया है। आपको देखे एक मास होने जा रहा है।"

"निर्मला! परीक्षा समीप आ रही है।"

"तो क्या प्लेग्राउँड में परीक्षा की तैयारी करके आ रहे हैं?"

चन्दन हँस पड़ा। इसपर निर्मला ने कहा, "इसी कारण मोटर लाई हूँ कि आपका मूल्यवान समय व्यर्थ न जाए।"

"अच्छा आओ। यह वहाँ रख दूँ।" उसने स्टिक की ओर संकेत किया और फिर बोला, "कपड़े बदल लूँ।"

"मैं वहाँ नहीं आऊँगी। आप भागकर जाइए और यह सब करके आ जाइए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यहीं खड़ी रहोगी?"

"हाँ, वहाँ नहीं जाऊँगी।"

"पर क्यों?"

"बस कह दिया, नहीं।"

चन्दनसिंह निर्मला की बात पर विचार करता हुआ कमरे की ओर चल दिया। निर्मला ने यह बात अति कठोरता से कही थी कि, 'बस वह नहीं जाएगी।'

वह कमरे में पहुँचा तो सुरेश उसे देख खिलखिलाकर हँस पड़ा।

"किसलिए हँस रहे हो, सुरेश?"

"तुम्हारी वह आई थी।"

"कौन आई थी?"

"जो तुम्हारे गोरे चिकने मुख पर मुग्ध है।"

"कहाँ देखी है तुमने?"

"यहाँ आई थी। मैंने देखा है कि उसकी मोटर कुछ देर पहले तक होस्टल के फाटक पर खड़ी थी।"

"तुमने कुछ बदतमीज़ी की मालूम होती है।"

"राम-राम! ऐसी बात की तुम मुझसे आशा नहीं कर सकते।"

"करता तो नहीं था। देखो सुरेश! वह मेरी बहिन लगती है।"

"तभी तो मैंने उसे बैठने का निमन्त्रण दिया था। मैं उससे मेलजोल बढ़ाना चाहता था।"

"सब समझ गया हूँ। तुमने ज़रूर कुछ बात कही है जिससे वह नाराज़ हो वहाँ खड़ी है।"

"तो अभी भी खड़ी है? चन्दन, मुझे उसके पास जाकर क्षमा माँगनी चाहिए।"

"अब रहने दो सुरेश! बात और भी बिगड़ेगी।"

चन्दनसिंह कपड़े बदल रहा था। वह चुपचाप तैयार होता रहा। जब तैयार हो वह जाने लगा तो सुरेश ने कह दिया, "चन्दन भैया! मेरी उससे सिफारिश कर दो। मैं उससे मानयुक्त व्यवहार करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन ने उत्तर नहीं दिया और चल दिया। जब वह मोटर में बैठ गया तो निर्मला ने कहा, ''वह बदमाश का बच्चा कुछ कहता था?''

चन्दन समझ तो रहा था, परन्तु अपने को सर्वथा अनभिज्ञ प्रकट करता हुआ पूछने लगा, ''कौन बदमाश का बच्चा?''

''वह जो आपके कमरे में रहता है!''

''तो वह बदमाश का बच्चा है?''

''निस्सन्देह!''

''तुम उसके बाप को जानती हो?''

इस पर दोनों हँसने लगे। निर्मला ने हँसकर कह दिया, ''जैसा बेटा है वैसा ही तो उसका बाप होना चाहिए। बीज से ही पेड़ बनता है।''

चन्दनसिंह ने बात आगे नहीं चलाई। गाड़ी हज़रतगंज की ओर जा रही थी। चन्दन ने कुछ बात करने के लिए ही पूछ लिया, ''आज क्या बात है जो मौसी ने बुलाया है? और फिर उसके लिए भी भेजा तुम्हीं को है।''

निर्मला ने गम्भीर हो कहा, ''कुछ बात है अवश्य, परन्तु मैं नहीं जानती। एक समय माँ ने कहा था कि मुझे आपसे अकेले में नहीं मिलना चाहिए। साथ ही भैया-भैया कहकर पुकारना चाहिए। मैंने उनके आदेश का पालन किया था।

''अब दो-तीन दिन से पिता जी और माता जी आपके विषय में पूछते थे कि आप आते नहीं, क्या कारण है? कहीं बीमार तो नहीं? मैं इन प्रश्नों का उत्तर नहीं जानती थी। आज माँ ने कह दिया, 'घर बैठी क्या कर रही हो? जाओ, चन्दन को ही बुला लाओ!'

''और मैं आज्ञाकारिणी लड़की की भाँति आपको बुलाने चली आई।''

इस पर दोनों हँसने लगे। चन्दन को कुछ यह समझ आया था कि पिता जी का कुछ समाचार है। वह जब घर पर पहुँचा तो सरस्वती के सामने जा नमस्कार करने लगा।

सरस्वती ने उसे बैठाया और निर्मला को चाय तैयार करने के लिए कहा। निर्मला चली गई और नौकर से चाय इत्यादि तैयार करवाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चन्दन ने अपने मन की चिन्ता को प्रकट कर दिया, "मौसी! हस्पताल से कोई समाचार आया है?"

"जीजा जी अधिक बीमार हैं। अब तो वे दूसरों पर आक्रमण भी कर देते हैं और अंटसंट बोलते भी हैं।"

"उनकी चिकित्सा घर पर नहीं हो सकती क्या?"

"हो तो सकती है, पर उनपर कत्ल का मुकद्दमा है। जब तक मुकद्दमा वापस नहीं हो जाता तब तक वे छोड़े नहीं जा सकते। इसी सम्बन्ध में लक्ष्मणसिंह ने निर्मला के पिता को प्रतापगढ़ बुलाया है।"

"मौसी, निर्मला का विवाह कब कर रही हो?"

"तुम्हारे पिता जी के पकड़े जाने और भाई के मारे जाने के कारण विवाह स्थगित हो गया है।"

"मेरा विचार है कि विवाह कर देना चाहिए।"

"क्यों? कुछ कहा है उसने?"

"नहीं, उसने कुछ नहीं कहा। यह तो मैं अपने मन से ही कह रहा हूँ। इस प्रकार संसार की गति रोकी नहीं जा सकती।"

सरस्वती इसका अर्थ न समझती हुई चन्दन का मुख देखने लगी। फिर बात टालने के लिए कह दिया, "हाँ, चिन्ता तो हमको भी है। परन्तु चन्दन! विवाह भाग्य से होता है।"

इस समय नौकर से चाय उठवाए हुए निर्मला आ गई। इस कारण निर्मला की बात समाप्त हो गई। मौसी ने बात बदल दी। जब निर्मला चाय का सामान ट्रे से निकाल रही थी, सरस्वती ने पूछा, "तुम्हारी परीक्षा कब हो रही है, चन्दन?"

"मई के प्रथम सप्ताह में होगी।"

"और परीक्षा-फल कब तक निकलेगा?"

"छुट्टियों के उपरान्त कॉलेज मध्य जुलाई में खुलेंगे। उससे पहले परीक्षा-फल घोषित हो जाना चाहिए।"

"निर्मला के पिता चाहते हैं कि निर्मला का विवाह मई मास में हो जाए तो इस वर्ष हम दो मास के लिए किसी पहाड़ पर चले जाएँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और दूकान?"

"इसके लिए किसी असिस्टैंट की नियुक्ति आवश्यक है। हम विचार कर रहे हैं कि यदि असिस्टैंट कोई घर का आदमी हो तो ठीक है।"

इस पर निर्मला ने कहा, "मैंने एक बार कहा था कि मुझे दुकान का काम दे दें तो मैं असिस्टैंट बन सकती हूँ। परन्तु माता जी कहती थीं कि मेरा तो विवाह होगा। मैं दुकान पर काम नहीं कर सकूँगी।"

सरस्वती ने बात आगे चलाते हुए कहा, "निर्मला के पिता चाहते हैं कि तुम पढ़ाई बन्द कर दुकान पर बैठ जाओ।"

यह बात पहले भी चन्दन के समक्ष रखी गई थी। बाद में उसकी परीक्षा हो जाने के बाद इस बात पर विचार करने को सोचा गया था।

चन्दन ने कह दिया, "मौसी! मैं गाँव में नहीं रहना चाहता, इसलिए मैं इस कार्य को पसंद करूँगा।"

इस समय तीनों चाय पी रहे थे। सरस्वती ने चन्दनसिंह की बात पर अपनी राय दी, "परन्तु ज़मींदारी कौन करेगा?"

"कर्मजीत करेगा।"

"इस विषय पर लक्ष्मणसिंह से बात करनी पड़ेगी। बँटवारा हो अथवा न हो और फिर किसका कितना भाग हो, इस सबके विषय में विचार करना होगा।"

"कुछ भी हो, मौसी! मुझसे ज़मींदारी नहीं होगी।"

"हाँ, जमींदारी का काम है तो कठिन।"

इसपर निर्मला ने पूछ लिया, "माँ! क्या दुकान का काम ज़मींदारी से कम कठिन है?"

"हाँ, लक्ष्मणसिंह बता रहा था कि ज़मींदारी एक प्रकार से राज्य-कार्य है। यद्यपि राज्य से इसके अधिकारों की सीमा छोटी है, तो भी कल्याण करने में यह किसी भी राज्य से कम नहीं।"

"और दुकान क्या है?"

"लक्ष्मणसिंह ने ही बताया था कि कृषि और दुकान एक ही स्तर के व्यवसाय हैं, परन्तु ज़मींदारी कृषि से ऊँची है। दुकान और कृषि तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनोपार्जन के उपाय हैं, परन्तु ज़मींदारी धन को वितरण करने का यन्त्र है। यह राज्य-कार्य है।''

''तो मौसी! इसका अभिप्राय यह हुआ कि तुम मुझको एक घटिया काम करने की बात कह रहीं हो?''

''परन्तु यह तो तुम चाहते हो न! इसका अभिप्राय यह है कि तुम राज्य-कार्य की योग्यता अपने में नहीं पाते। यह रुचि और योग्यता का प्रश्न है, छोटे-बड़े का नहीं। निर्मला के पिता भी ज़मींदार थे। परन्तु इन्होंने ज़मींदारी अपने छोटे भाई के हाथ में छोड़ स्वयं दूकान करनी ठीक समझी।''

चन्दनसिंह मौसी के घर से आया तो निर्मला उसे छोड़ने के लिए नहीं आई। चन्दन ने कुछ यही समझा कि मौसी उससे अपना सम्पर्क बनाए रखना चाहती है जिससे कि वह उनके कारोबार में सम्मिलित हो सके।

गाड़ी में लौटता हुआ वह निर्मला के विषय में विचार कर रहा था कि उससे तो अब निर्मला का विवाह हो सकता नहीं। निर्मला के मन की भावना ही बदल गई है।

: ५ :

अब फिर कभी-कभी निर्मला उससे मिलने के लिए आने लगी थी। वह भी रात के भोजन के समय कभी-कभी मौसी के घर जाने लगा था। चन्दन इसका अर्थ नहीं समझ सका था।

इस आने-जाने को सुरेश भी देख रहा था। अप्रैल आ गया था। एक दिन सुरेश ने चन्दन से कह दिया, ''मालूम होता है कि तुम्हारा बहिन से फिर मेल-जोल बढ़ गया है। क्या उसके विवाह की बात टूट गई है?''

''मुझे पता नहीं।''

''अरे बुद्धू! मैं बताता हूँ। उसका विवाह वहाँ नहीं हो रहा है।''

''कहाँ नहीं हो रहा?''

''जहाँ होनेवाला था और जिस कारण उसपर तुमसे मेल-मुलाकात पर प्रतिबन्ध था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अब मुझसे मिलने पर प्रतिबन्ध नहीं रहा तो उसकी सगाई टूटनी सिद्ध हो गई?"

"हाँ। ठीक वैसे ही जैसे दो और दो मिलकर चार होते हैं।"

"मुझे पता नहीं।"

"तुम तो जन्म से ही बुद्धू हो!"

चन्दन ने इसका उत्तर नहीं दिया। वह चुप रहा। परन्तु बात प्रकट हो गई। इसी मास का अन्तिम रविवार था। चन्दन राजबहादुर के घर जाने की तैयारी कर रहा था। सुरेश पिछले दो दिन से घर गया हुआ था। चन्दन ने घड़ी में समय देखा। उसके जाने में अभी एक घंटे का समय था। इस कारण कपड़े पहने होने पर भी वह एक पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ गया।

इसी समय लक्ष्मणसिंह आ गया। वह उसे अकेला देख वहीं बैठ गया और चन्दन को कपड़े पहने बैठा देख पूछने लगा, "चन्दन, कहाँ जा रहे हो?"

"मौसी के घर।"

"अब उनका तुम्हारे प्रति कैसा व्यवहार है?"

"वैसा ही जैसा आपसे मिलने के पूर्व था।"

"निर्मला का भी?"

चन्दन ने विचारकर संयत भाषा में कहा, "व्यवहार ठीक है। उसके मन में क्या है, मैं जानता नहीं। पर अपने मन की बात समझ रहा हूँ।"

"क्या समझ रहे हो?"

"यही कि वह बहिन की भाँति स्नेहमयी और ऐसी ही ठीक है।"

"ओह! तो अब उससे विवाह की इच्छा नहीं रखते?"

"अब उसे बहिन के रूप में देखने लगा हूँ तो दूसरा विचार मन में आता ही नहीं।"

"परन्तु, उसका विवाह शिवकुमार से नहीं हो रहा।"

"सत्य? क्यों?"

"शिवकुमार ने अपने गाँव की ही एक लड़की से विवाह कर लिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्दन भौंचक्का हो उसका मुख देखता रहा। फिर कुछ विचारकर पूछने लगा, ''तो डिप्टी कलेक्टर साहब को एक देहात की लड़की शहरी लड़की से अच्छी प्रतीत हुई है?''

''हाँ, वह पड़ोसिन है न?''

इसपर दोनों हँसने लगे। हँसकर चन्दनसिंह ने कहा, ''आपकी पड़ोसी की यह मीमांसा मैं ठीक मानने लगा हूँ। मैंने देखा है कि पत्नी पति से कुटिलता कर सकती है, इस कारण वह पड़ोसिन नहीं भी हो सकती। चंचल और मोहन दादा का व्यवहार पड़ोसियों का-सा नहीं था। पिता-पुत्र में भी पड़ोसी का-सा व्यवहार नहीं रह सकता। बाबा और मोहन दादा का परस्पर व्यवहार यही सिद्ध करता है। गाँव के लोग भी पड़ोसी नहीं हो सकते। अपने गाँववालों का व्यवहार भी देख चुका हूँ।''

लक्ष्मणसिंह ने मुस्कराते हुए कहा, ''हाँ, आँख खोलकर देखें तो यह एक व्यापक नियम है। पड़ोसी की भावना शारीरिक सम्बन्धों अथवा काल और अन्तर की समीपता से नहीं बनती। यह बनती है विचारों और भावनाओं से।''

''तो शिवकुमार की भावना उस गाँव की लड़की के अधिक समीप है?''

''हाँ, परन्तु वह इस कारण नहीं कि देहात की है। वह इस कारण कि दोनों में विचार-सामञ्जस्य है। बहुधा तो विचार-समानता समीप रहने से बन जाती है, परन्तु पड़ोसीपन तो विचार-समानता बनने के बाद ही उत्पन्न होता है। परन्तु चन्दन! मैं तुमसे एक अन्य बात करने आया हूँ।''

चन्दन दत्तचित्त हो लक्ष्मणसिंह का मुख देखने लगा। लक्ष्मणसिंह ने कहा, ''तुम्हारे पिता की अवस्था बहुत खराब है। उसने पागलपन में ही कुछ दिन पूर्व अपना माथा दीवार से फोड़ लिया है। फिर अपने वार्डर का गला घोट उसकी हत्या करनेवाला था। अतः उसके हाथ-पाँव बाँधकर एक पिंजरे में बन्द कर दिया गया है।''

''भापा! उसे छुड़ाया नहीं जा सकता? मैं समझता हूँ कि घर आकर वे जल्दी ठीक हो सकते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वर्तमान अवस्था में यह सम्भव नहीं है। डॉक्टर उसको छोड़ने की राय नहीं दे रहे। कोई उसकी यह ज़मानत नहीं दे सकता कि वह और हत्या नहीं करेगा। हत्या का मुकद्दमा तो वापस हो गया है, परन्तु उसको पिंजड़े से बाहर लाना सम्भव नहीं।"

"तो अब क्या बनेगा?"

"मैंने कचहरी में यह अर्ज़ी की है और नलिनी ने इसका समर्थन किया है कि तुम्हारे परिवार की सम्पत्ति बाँट दी जाए। तुम अपने पिता की सम्पत्ति के संरक्षक बनो, कर्मजीत अपने पिता की सम्पत्ति का संरक्षक बने। तुम नलिनी के बच्चे के भी संरक्षक बन जाओ। कोर्ट से परिवार के सब सदस्यों के नाम सम्मन जारी हुए हैं कि वे सब-जज के सम्मुख उपस्थित होकर बताएँ कि वे क्या चाहते हैं।"

इस प्रस्ताव पर चन्दनसिंह उसका मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर उसने पूछा, "तो मैं ज़मींदारी करने गाँव में जाऊँगा?"

"यह ज़रूरी नहीं। तुम अपनी भूमि कर्मजीत के नाम पट्टे पर भी दे सकते हो।"

"तब तो ठीक है। मैं गाँव में जाकर रहना नहीं चाहता। इसपर भी यह एक गम्भीर विषय है। मैं तो बच्चा हूँ। इसको समझ नहीं सकता। आप बताइए, आप क्या राय देते हैं?"

"मैं गृहीता के पद से हटना चाहता हूँ।"

"परन्तु मैं बँटवारे के विषय में पूछ रहा हूँ।"

"यह तुम अपनी माता से राय करना। अपने मौसा से भी पूछना। जो सबकी राय हो वही होना चाहिए। इसपर भी इतना निश्चय है कि मैं अब इस सम्पत्ति पर गृहीता नहीं रहूँगा।"

"आप माता जी से मिले हैं?"

"हाँ, सप्ताह में दो-तीन बार गाँव जाया करता हूँ। जब भी जाता हूँ तुम्हारी माता जी, ताई और नलिनी से मिलता रहता हूँ। नलिनी अब तुम्हारी माता जी के साथ रहती है।"

"[illegible] क्या [illegible]?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसके फूफा और मौसा तो चोरी में पकड़े गए हैं। उनका कोई ज़मानती नहीं मिला, इस कारण वे दोनों हवालात में हैं। चंचल अपनी मौसी के घर में रहती है। चंचल के माता-पिता गाँव छोड़ कहीं अन्यत्र चले गए हैं।"

"आपने माता जी इत्यादि को क्या सम्मति दी है?"

"मैं किसी को राय नहीं दे सकता। इसपर भी उन्होंने अपनी राय बताई है।

"तुम्हारी ताई कहती हैं कि मैं गृहीता बना रहूँ। कर्मजीत मेरे अधीन मैनेजर के रूप में कार्य करे, बँटवारा बाबू जी के राज़ी हो जाने पर हो।

"तुम्हारी माता जी चाहती हैं कि वर्तमान प्रबन्ध हटे और बँटवारा हो जाए। अभी दो भाग किए जाएँ, तुम्हारे बाबा का और तुम्हारे ताया का। तुम्हारे बाबा के भाग का बँटवारा न हो और तुम घर के सरपरस्त बन गाँव में प्रबन्ध करो।"

"यह मुझसे नहीं हो सकेगा।"

"नलिनी चाहती है कि बँटवारा तो हो जाए तुम्हारे बाबा की सम्पत्ति का तीन भाग में, परंतु मोहन का भाग उसके लड़के के नाम हो जाए और नलिनी स्वयं अपने लड़के की सरपरस्त नियुक्त हो।"

"वह ऐसा क्यों चाहती है?"

"इसलिए कि वह चंचल से पृथक् रहना चाहती है। उसके लिए कुछ खर्चा नियत कर दिया जाए।"

"यह भी ठीक है।"

"हाँ, मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि चंचल अपना नया विवाह कर लेगी।"

"मुझे आप क्या राय देते हैं?"

"मैंने अपनी राय तुम्हारी माता जी को बताई है। वे तुमको बता देंगी।"

"मुझको सम्मन मिलेगा तो मैं माता जी से राय करने चला जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यदि तुम सब एक राय पर सहमत हो जाओ और उसको किसी वकील से लिखाकर इकट्ठा जवाब-दावा दे दोगे तो बात सुगम हो सकेगी।"

इस समय लक्ष्मणसिंह ने घड़ी में समय देखा। वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं हजरतगंज की तरफ जा रहा हूँ। आओ, तुमको भी अपनी गाड़ी में ले चलता हूँ।"

चन्दन तैयार हो गया। दोनों कमरे से निकल होस्टल से बाहर आ हजरतगंज की ओर चल पड़े। चन्दन गम्भीर विचार में मग्न था। वह लक्ष्मणसिंह के प्रस्ताव पर विचार कर रहा था।

मोटर में बैठे हुए भी बातचीत नहीं हुई। जब ये राजबहादुर के मकान के नीचे पहुँचे तो वहाँ बहुत-सी गाड़ियाँ खड़ी थीं। परन्तु चन्दन का विचार अभी ज़मींदारी के बँटवारे पर लगा था। इस कारण वह गाड़ियों को देख नहीं रहा था।

जब गाड़ी खड़ी हो गई तो चन्दनसिंह ने पूछ लिया, "आप मौसाजी से मिलेंगे क्या?"

"नहीं, मेरी गवर्नर से भेंट का समय हो गया है। मुझे वहाँ जाना है। आज तो अब समय नहीं मिलेगा, फिर किसी दिन मिलूँगा। तुम उनको मेरी नमस्ते कह देना।"

चन्दनसिंह गाड़ी से उतरा। लक्ष्मणसिंह गया तो चन्दनसिंह मौसी के मकान पर चढ़ने लगा। उसे ऊपर से बहुत-से आदमी उतरते हुए दिखाई दिए।

चन्दन सीढ़ियाँ चढ़ता-चढ़ता रुक गया। उतरनेवालों को मार्ग देने के लिए वह एक ओर को खड़ा हो गया। सीढ़ियों में लोग उसके सामने से निकलकर जा रहे थे। वह आश्चर्यचकित रह गया जब उतरनेवालों में उसने सुरेश को भी देखा। सुरेश फर्स्ट क्लास नया सूट पहने हुए था। उसके सभी वस्त्राभरण नये थे। चन्दनसिंह ने उसे पहचाना नहीं, पर सुरेश उसके सामने आकर खड़ा हो गया—"अरे दादा! कहाँ थे तुम?"

चन्दन ने उसे पहचाना तो आश्चर्य से पूछने लगा, "यहाँ क्या कर रहे हो, सुरेश?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमसे रिश्तेदारी बना रहा था।"

"तो बनी?"

"हाँ, तुम मेरे साले बन गए हो। वह देखो!" उसने पीछे आनेवाले नौकर के सिर पर बड़ा-सा मिठाई का थाल और उसपर रेशमी कपड़ा पड़ा दिखा दिया।

चन्दन समझ गया और चकित हो देखता रह गया। सुरेश ने पूछ लिया, "होस्टल में कब तक आओगे?"

"चार बजे तक पहुँचने का यत्न करूँगा।"

"आना, मिठाई खिलाऊँगा।"

सुरेश नीचे उतर गया तो शेष लोग भी नीचे उतर गए। अब चन्दन ने देखा कि सबके पीछे राजबहादुर और सरस्वती खड़े हैं। राजबहादुर भी दूसरों के साथ नीचे उतर आया। जब वह चन्दन के पास से गुज़रने लगा तो उसने चन्दन से कह दिया, "चन्दन, तुमने देरी कर दी है। अच्छा चलो ऊपर, मैं अभी आ रहा हूँ।"

उतरनेवालों में कुछ स्त्रियाँ भी थीं। सब उतरनेवालों के हाथ में मिठाई के थाल थे। जब राजबहादुर भी उतर गया तो चन्दन ऊपर चढ़ गया। सीढ़ियों के ऊपर सरस्वती खड़ी थी। उसके साथ ही पीछे की ओर निर्मला थी। सरस्वती ने भी चन्दन से कहा, "बैठो, ज़रा इनको विदा कर आऊँ।"

सरस्वती भी नीचे उतर गई। चन्दन ने निर्मला की ओर देखा तो उसकी आँखें भूमि की ओर झुक गईं। चन्दन ने पूछ लिया, "निर्मला! बधाई दूँ न?"

"कैसी?"

"ससुराल की यात्रा पर चलने की।"

निर्मला का मुख पीला पड़ रहा था। चन्दन ने यह देखा और विचार किया कि यह संकोच के कारण है। एकाएक उसे यह समझ आया कि निर्मला की आँखें तरल हो रही हैं। उसने निर्मला से कहा, "इधर आओ!"

वे दोनों बैठक में चले गए। वहाँ पहुँच चन्दन ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पसंद नहीं आया न?''

''क्या?'' निर्मला ने हतोत्साह हो सोफे पर बैठते हुए पूछ लिया।

''यह प्रबन्ध।'' चन्दन अभी भी उसके सामने खड़ा था।

''आप क्या यह ठीक समझते हैं?''

''मैं क्या बताऊँ! सगाई तेरी हो रही है।''

इसपर तो निर्मला के आँसू प्रवाहित होने लगे। सीढ़ियों पर किसीके बातें करते ऊपर आने की आवाज सुनाई दी तो निर्मला उठी और सामने सोने के कमरे में चली गई।

: ६ :

राजबहादुर और सरस्वती आए तो वे बैठे और चन्दन को बैठाकर बोले, ''हमने तुम्हें बुलाया था, तुमने आने में देर कर दी। समय टल रहा था, इस कारण रस्म पूरी कर दी है।''

''मैं समझा था कि आज रविवार है। आपने भोजन पर आने के लिए कहा है। मैं अपने विचार से तो कुछ जल्दी ही आया हूँ।''

राजबहादुर ने समझाते हुए कहा, ''निर्मला की सगाई शिवकुमार से टूट गई है। उसने इलाहाबाद की किसी वेश्या की लड़की से विवाह कर लिया है। इस कारण निर्मला का यह नया सम्बन्ध कर दिया है। सुना है, सुरेशसिंह तुम्हारा सहपाठी है?''

चन्दनसिंह ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह इस प्रबन्ध से न तो प्रसन्न था और न अप्रसन्न। वह और आगे सुनने के लिए मौसा को देखता रहा।

राजबहादुर ने कहा, ''यदि सब-कुछ ठीक है तो लड़का व्यापार में भी मेरा उत्तराधिकारी बनने के योग्य प्रतीत हो रहा है।''

चन्दनसिंह ने इसका भी उत्तर नहीं दिया। एक बात वह समझ रहा था कि राजबहादुर अस्थिर बुद्धि का व्यक्ति है। वह व्यवसाय में उसे सम्मिलित करने की बात कर चुका था। अब वह नये मनसूबे बनाने लगा था।

चन्दनसिंह ने बात बदलकर कहा दिया, ''मैंने तो सुना है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवकुमार का विवाह अपने गाँव की ही किसी लड़की से हुआ है?''

''हाँ, यह इस प्रकार हुआ है कि अपने मान की रक्षा के लिए उसने लड़की दस हज़ार रुपये में उसकी माँ से मोल लेकर अपने एक पड़ोसी गाँव के आदमी की लड़की बना दिया और फिर उसको कन्यादान लेने के लिए तैयार कर लिया। अब विवाह हो गया है।''

चन्दनसिंह ने लक्ष्मणसिंह का प्रस्ताव बताकर उसपर राय पूछी।

राजबहादुर ने कहा, ''लक्ष्मणसिंह तो मिला नहीं। मैं प्रतापगढ़ गया था। तुम्हारे पिता के कत्ल के मुकद्दमे की तारीख थी। मजिस्ट्रेट ने पुलिस को मुकद्दमा वापस लेने की स्वीकृति दे दी है।

''वहाँ से मैं सरवरगंज भी गया था और तुम्हारी माता जी आदि से मिला था। सिवाय तुम्हारी ताई के अन्य सब यह समझते हैं कि लक्ष्मणसिंह ज़मींदारी को बरबाद करने की योजना बना रहा है। मैं जानता नहीं कि क्यों तुम्हारी माता जी लक्ष्मणसिंह के विरुद्ध हैं। तुम्हारी ताई का विचार दूसरा है, परन्तु उसकी सम्मति तो कर्मजीत के उसकी लड़की से सम्बन्ध के कारण समझी जा रही है।''

''आप क्या समझ रहे हैं?''

''मैं लक्ष्मणसिंह को एक अति चतुर और धूर्त व्यक्ति मानता हूँ। इसपर उसके गृहीता होने के विषय में कुछ नहीं कह सकता। मैं उसको हटाने के लिए तो इसलिए राज़ी हूँ कि बिना उसके हटे बँटवारा नहीं होगा। मैं बँटवारे को मुख्य समझता हूँ। यह हो जाना चाहिए।''

''मेरे और मोहन दादा के लड़के में भी?''

''यह बहुत आवश्यक है।''

''किसलिए?''

''चंचल के षड्यन्त्र से बचने के लिए।''

''तो आपकी राय है कि बँटवारा हो जाना चाहिए?''

''बिलकुल! देखो चन्दन! इस लक्ष्मणसिंह से बचकर रहना चाहिए।''

चन्दन उसे चतुर और कार्य-कुशल तो समझता ही था, परन्तु वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूर्त भी था यह वह समझ नहीं सका था। कम-से-कम उसके परिवार के साथ और राजबहादुर के साथ भी उसने किसी प्रकार की धोखा-धड़ी नहीं की थी।

"देखो चन्दन!" राजबहादुर ने आगे बताया, "जो कुछ कर्मजीत की सगाई के उपरान्त हुआ है, उसमें लक्ष्मणसिंह का हाथ दिखाई देता है। और यह कुछ ठीक नहीं हुआ। मोहन मारा गया, तुम्हारे पिता पागल हो गए और अब नलिनी और चंचल में झगड़ा आरम्भ हो गया है। शिवकुमार लक्ष्मणसिंह का मित्र है, और उसकी करतूत तुमने सुन ही ली है।"

चन्दन को यह सब अनिष्ट लक्ष्मणसिंह द्वारा किया प्रतीत नहीं हुआ था। वह अपने पिता के स्वभाव को पहले ही जानता था। उसे सब घटना अपने पिता जी के विकृत मस्तिष्क की उपज लग रही थी। यदि पिता जी कर्मजीत इत्यादि को उनका भाग देने के लिए तैयार हो जाते तो कुछ भी झगड़ा न होता। वह यह भी समझ रहा था कि पिता जी ताई के घर में डाका न डलवाते तो न मोहन को तोशाखाना में से चोरी का अवसर मिलता और न हत्या में कोई कारण उत्पन्न होता। इन सब घटनाओं में उसे कहीं भी लक्ष्मणसिंह का हाथ दिखाई नहीं देता था।

उसे विस्मय हो रहा था कि एकाएक राजबहादुर क्यों लक्ष्मणसिंह के विरुद्ध हो गया है।

राजबहादुर ने चन्दन को विस्मय में बैठा देखा तो और बता दिया, "यह कहा जा रहा है कि तुम्हारे बाबा के पागलखाने में अधिक बीमार होने में भी उसका हाथ है। यह आरोप है कि डॉक्टरों से मिल उसने उसको कुछ ऐसी औषध दिला दी है जिससे उनका मस्तिष्क और भी खराब हो गया है।"

"मौसा जी! आपको यह सब किसने बताया है?"

"मैंने जो कुछ प्रतापगढ़ में देखा, उसका यही परिणाम है।"

चन्दन को राजबहादुर के कथन पर विश्वास नहीं आया। विश्वास न आने में निर्मला के साथ उनका व्यवहार था। वह विचार कर रहा था कि निर्मला सुरेश के साथ भी सुखी नहीं रहेगी। परन्तु न तो वह निर्मला के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय में किसी प्रकार की सम्मति देने में अपने को योग्य समझता था और न ही वह अपने मौसा की लक्ष्मणसिंह के विषय में सम्मति का विरोध करने की सामर्थ्य अपने में पाता था। इस कारण चुप रहा।

उसने बात बदल दी, "यह सुरेश आपको कहाँ मिल गया?"

"लखनऊ में हमारी मोटर की दुकान पर अवध-भर के रईस आते-जाते हैं। सुरेश के पिता जितेन्द्र भी हमारे ग्राहक हैं। यह मैं नहीं जानता कि वह कैसे पता पा गया था कि निर्मला की सगाई टूट गई है। कुछ दिन हुए जितेन्द्रसिंह मेरी दुकान पर आया था। सुरेश उसके साथ था। बात हुई, मैंने लड़के को देखा और फिर तुम्हारी मौसी को दिखाया। निर्मला को भी दिखाया था। उसके उपरान्त आज का दिन शकुन देने का निश्चय हुआ था। सो यह हो गया है।"

"तो यह सुरेश निर्मला बहिन की रुचि का लड़का है?"

"निर्मला ने बताया था कि उसने इस लड़के को देखा है और तुम इसको जानते हो?"

चन्दन निर्मला की आँखों में आँसू देख चुप था और वह समझ नहीं सका था उसके आँसुओं को झूठा समझे अथवा राजबहादुर के इस कथन को गलत समझे।

बात करते-करते भोजन का समय हो गया। नौकर आया और कह गया कि खाना मेज़ पर लगा है।

ये तीनों उठे और खाने के कमरे में चले गए। निर्मला को भी बुलाया गया तो वह अपने माता-पिता के सामने चन्दन के साथ की कुर्सी पर बैठ गई।

जब साग-भाजी प्लेटों में डाली जा रही थी तो चन्दन को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि उसकी कोट की जेब में कुछ डाला जा रहा है। चन्दन ने अपने हाथ से देखा तो जेब में से बाहर निकलता हुआ निर्मला का हाथ उसके हाथ से छू गया। चन्दन ने उसकी ओर देखा तो निर्मला को मुस्कराते हुए अपनी माँ की ओर देखते हुए पाया। उसे अपनी जेब में एक तह किया हुआ कागज पड़ा हुआ मिला। यह समझने में कठिनाई नहीं हुई कि निर्मला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने अपने माता-पिता से छिपाकर कोई सन्देश उसको दिया है।

भोजन आरम्भ हुआ तो निर्मला प्रसन्नतापूर्वक खाती रही। भोजन समाप्त हुआ तो सगाई के सगुन में दी गई मिठाई में से बची मिठाई लाई गई। चन्दन ने खाई तो निर्मला ने भी खाई।

विभिन्न विषयों पर बात होती रही। बातें चल ही रही थीं कि निर्मला फिर उठकर अपने सोने के कमरे में चली गई। भोजन डेढ़ बजे समाप्त हुआ और सब उठ खड़े हुए। निर्मला तो पहले ही जा चुकी थी, अतः चन्दन मौसा और मौसी को नमस्कार कर मकान के नीचे उतर गया।

नीचे उतर सड़क के किनारे खड़े हो उसने पहला काम यह किया कि अपनी जेब से कागज़ निकाला। निर्मला ने लिखा था, 'सिनेमाघर के कुछ अन्तर पर फुटपाथ पर मेरी प्रतीक्षा करें।'

चन्दन समझ गया कि यह उसी प्रकार है जैसे वह शिवकुमार से सगाई के उपरान्त मिली थी। इस बार वह पहले नहीं गई थी। चन्दन को बताए स्थान पर पहुँचकर प्रतीक्षा करनी पड़ी। आधा घंटा-भर प्रतीक्षा करने पर ही वह मकान से उतर उसकी ओर आती दिखाई दी। लगभग सवा दो बजे वह आई। वह समझ नहीं सका था कि शिवकुमार के समय और इस समय में क्या अन्तर है। तब उसने उसे रोते हुए नहीं देखा था। अब वह क्या कहना चाहती है—यह जानने के लिए उत्सुक था।

निर्मला ने आते ही कहा, "क्यों भैया! क्या समझते हो इसका अर्थ?"

"मैं तो कुछ नहीं समझा। मैं इसकी आशा भी नहीं करता था।"

"बहुत बातें हैं जो आशा के बिना घट जाती हैं और उनको सहन करना पड़ता है। अभी उस दिन मैं उसको बदमाश का बच्चा कह रही थी, और आज वह मेरे हाथ से तिलक धारण कर झूमता गया है। आपने उस दिन के विषय में नहीं पूछा था कि मैंने उसको ऐसा क्यों कहा था?"

"मैं उसको ऐसा ही समझता हूँ। इस कारण अनुमान लगा लिया था कि उसने कुछ बदतमीजी की होगी।"

"खैर, अब कल्पना की आवश्यकता नहीं, मैं बता देती हूँ। उस दिन
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आपके कमरे में गई तो वह वहाँ कुर्सी पर बैठा था। मैंने आपके विषय में पूछा तो कहने लगा कि अभी आता ही होगा। मैं बैठ सकती हूँ।

''उसने सामने दूसरी कुर्सी की ओर संकेत कर दिया। मैं विचार ही कर रही थी कि बैठूँ अथवा नहीं कि वह उठा और कमरे का द्वार बन्द करने लगा। मैं समझ गई और मैंने तानकर एक घूँसा उसकी कनपटी पर मारा।

''वह शायद इसकी आशा नहीं करता था। इस कारण चौंककर घूमा। मैं अवसर पा द्वार से बाहर निकल गई और बाहर आकर आपकी प्रतीक्षा करने लगी थी।''

''मैं कुछ ऐसा ही अनुमान लगा रहा था।''

''परन्तु मैंने तो यह पूछा है कि इसका अर्थ क्या समझे हो? वह उस दिन की बात नहीं, आज की है।''

''आज तुम्हारी उस बदमाश के बच्चे से सगाई हुई है। इससे अधिक मैं समझा नहीं।''

''यह सगाई तो पिता जी ने की है। चार-पाँच दिन हुए पिता जी इस बदमाश के बच्चे और इसके पिता को लेकर आए और मुझे उनके लिए चाय लाने का हुक्म हुआ। जब मैं चाय लेकर आई तो पिता जी ने इन दोनों का परिचय करा दिया। मैंने कह दिया कि मैंने उसको देखा है और आप उसको जानते हैं। मेरा अभिप्राय था कि आपसे पूछेंगे और आप बता देंगे कि वह ठीक व्यक्ति नहीं है। मैं उस समय मौन रही, परन्तु पिता जी ने तो सब-कुछ उसी दिन निश्चय कर लिया और सगाई भी हो गई!''

''मुझसे पूछ-ताछ नहीं की गई। मुझे तो आज यहाँ आकर ही पता चला है कि सुरेश तुमको हरकर ले-जा रहा है। मैं यह विचार करने लगा था कि उस दिन बदमाश का बच्चा कहना तुम्हारा उससे प्रेम का लक्षण ही था।''

''बहुत बढ़िया विचार है! मैं आपको इतना बुद्धिमान नहीं समझती थी। आप अब यह बताइए कि यह विवाह होना चाहिए क्या?''

''यदि तुम चाहती हो तो होना चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यदि-वदि की बात छोड़ो। यदि आप मेरे स्थान पर होते तो क्या स्वीकार करते?"

"मैं कैसे तुम्हारे स्थान पर हो सकता हूँ? मैं लड़के से लड़की नहीं हो सकता। मैंने सिवाय तुम्हारे किसी अन्य लड़की को देखा भी नहीं। हमारी कोई बहिन है नहीं। तुमको लड़कों से विलक्षण देखा है। इस कारण मैं समझ ही नहीं सकता कि तुम क्या चाहती हो। तुमने उस डिप्टी कलेक्टर को तो स्वीकार किया ही था।"

"कैसे समझते हैं कि मैंने उसे स्वीकार किया था? मैं तो कुछ अन्य ही विचार कर रही थी। परन्तु अब उसकी बात तो रही नहीं। अब तो यह सत्य है कि वह बदमाश है और मैं उसके घर गई तो वह उसका बदला लेगा ही।"

"मैं तुम्हारी उससे सुलह करवा सकता हूँ।"

"पर वह आपके सामने पीटेगा ही क्यों?"

"तो फिर?"

"मैं इससे विवाह नहीं करूँगी।"

"यह कैसे होगा?"

"मैं घर से भाग जाऊँगी।"

"कहाँ भाग जाओगी?"

"चन्दन भैया के घर।"

"स्मरण है, एक बार मैंने भी भाग जाने के लिए कहा था?"

"हाँ, परन्तु आपने तो पत्नी बनकर भाग जाने के लिए कहा था।"

"वह तुमने स्वयं बनने में रुचि प्रकट की थी।"

"रेल के स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर खड़े होकर न? उस समय कहा अवश्य था, परन्तु वह भूल थी। मैं अपने हृदय की बात समझ नहीं सकी थी। माँ ने समझाया था और तब तक समझ गई थी।"

"तो पत्नी के स्थान पर बहिन बनकर भागने के लिए तैयार हो?"

"यह तो आपका कर्तव्य है कि कष्ट में बहिन की रक्षा करें। मैं तो रक्षा बहिन के अधिकार से माँग रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! बहुत बातें सीख गई हो।"

"ये बातें सीखीं नहीं। ये अन्तरात्मा में प्रस्फुटित हुई हैं।"

"तो कब भागोगी?"

"विवाह से कुछ दिन पूर्व। विवाह जून में होगा।"

"तो माँ को इस षड्यन्त्र में सम्मिलित करना होगा।"

"पहले बताने से मौसी नहीं मानेंगी। इस कारण उनको बताए बिना वहाँ जा पहुँचूँगी।"

"माँ से ताई अधिक सहायक हो सकती हैं। मेरा उनपर अधिक विश्वास है।"

"तो ताई से बात कर रखना। मैं चुपचाप उनके घर पहुँच जाऊँगी।"

"गाँव तक पहुँचोगी कैसे?"

"मैं मोटर चलाना सीख रही हूँ। लाइसेंस भी ले लूँगी। और फिर एक दिन घर की मोटर में वहाँ पहुँच जाऊँगी। मार्ग मैं देख आई हूँ।"

चन्दन उसका मुख देखता रह गया। उसे चुप देख निर्मला ने पूछ लिया, "तो यह ठीक है न?"

"मैं गलत कैसे कह सकता हूँ?" वह उस समय की स्थिति की कल्पना करने लगा था।

निर्मला ने उसे चुप देखा तो कह दिया, "अब मैं जा रही हूँ। बस यही कहने के लिए आई थी।"

इतना कह वह अपने घर की ओर लौट पड़ी। चन्दन कुछ देर तक उसे जाते देखता रहा और फिर वह कॉलेज-होस्टल की ओर चल पड़ा।

जो कुछ लक्ष्मणसिंह के विषय में वह राजबहादुर से सुनकर आया था और जिसका आधार वह समझ नहीं सका था, वह आधार उसे अपने कमरे में पहुँचने से पहले ही मिल गया।

: ७ :

वह होस्टल के फाटक में घुसने लगा था कि एक अपरिचित व्यक्ति उसका मार्ग रोककर 'जैराम जी की' कहने लगा। चन्दन ने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैंने आपको पहचाना नहीं ?''

''मैं चन्दन भैया से मिलने के लिए आया हूँ।''

''पर आप हैं कौन ?''

''मैं चंचल कुमारी का फूफा सुन्दरसिंह हूँ।''

''ओह! आपके पहले कभी दर्शन नहीं हुए, इस कारण पहचाना नहीं। क्षमा चाहता हूँ। आइए, कमरे में चलते हैं। वहाँ बैठकर बातचीत करेंगे।''

''मैं वहाँ गया था। वहाँ कोई और बैठा है। मैं तो अकेले में बात करना चाहता हूँ।''

''तो वहाँ लॉन में टहलते हुए बात कर सकते हैं।''

वे होस्टल के सामने घास के मैदान में चले गए। बात सुन्दरसिंह ने आरम्भ की, ''बेटा चन्दन! तुम घर से दूर यहाँ बैठे जान नहीं रहे कि वहाँ हम लोग कितनी मुसीबत में फँसे हैं। मैं चोरी के आरोप में फँसा हुआ हूँ। बीस हज़ार की ज़मानत पर हवालात से बाहर आया हूँ। चंचल का मौसा अभी अपनी ज़मानत का इन्तज़ाम नहीं कर सका। इस कारण वह अभी भी हवालात में है। आज तीन महीने होने जा रहे हैं और मुकद्दमे की प्रथम पेशी भी नहीं हुई।

''यह तो हमारी अवस्था है। तुम्हारी माता जी और नलिनी भी सुखी नहीं हैं। उनको पैसे-पैसे के लिए हाथ पसारना पड़ता है।

''इसके साथ ही ज़मींदारी बरबाद हो रही है। एक रुपये की वसूली के स्थान पर आठ आने में ही सन्तोष कर लिया जाता है। शेष आठ आना गृहीता की जेब में जा रहा है।

''यह सब और इससे भी अधिक के विषय में तुमको पता चलेगा जब तुम अपनी माता जी से मिलकर पूर्ण वृत्तान्त जानोगे।

''इसमें कारण है महोना का लक्ष्मणसिंह। वह डिप्टी कलेक्टर शिवकुमार और डिप्टी कमिश्नर खुरशीद अहमद के लिए लड़कियाँ लाने का दलाल है, और इस सिलसिले में वह चंचल के विरुद्ध हो गया है। चंचल उसकी बात को मान नहीं सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसने पहले तो मोहनसिंह को भड़काकर पिता की चोरी करवाई और फिर पिता को भड़काकर पुत्र की हत्या करा दी। तब पिता को कह दिया कि पागल होने का बहाना करे। बाद में उसको औषधियाँ दे-देकर अब सत्य ही पागल बना दिया है। वह स्वयं गृहीता बन गया है और ज़मींदारी को लूट रहा है।"

चन्दनसिंह समझ गया कि लक्ष्मणसिंह के विरुद्ध प्रचार का स्रोत कहाँ है। इसपर इस व्यक्ति से शीघ्र ही छुट्टी पाने केलिए उसने कह दिया, "काका! यह सब बात मैं सुन चुका हूँ। इसका प्रबन्ध किया जा रहा है।"

"बात यह है कि इसका होनेवाला दामाद इस लूट में सम्मिलित है और इसको हटाकर उसको गृहीता नियुक्त करना तो इसी को गृहीता बना रखना होगा।"

"वह गृहीता कैसे बनेगा?"

"तुम्हारी ताई यह प्रस्ताव कर रही है कि उसका लड़का कर्मजीत गृहीता बन जाए।"

"हम तो पूर्ण सम्पत्ति के बँटवारे के पक्ष में हैं।"

"परन्तु पिता जी के जीते-जी यह बँटवारा किस प्रकार ठीक हो सकेगा? उनको पागलखाने से निकलवाकर घर पर चिकित्सा कराओ तो तुरन्त ठीक हो जाएँगे।"

"पर बँटवारा तो हमारे और कर्मजीत के बीच में हो रहा है न? इसमें पिता जी के बीमार होने अथवा न होने का संबंध कहाँ है?"

"संबंध है, बेटा! तुम्हारे ताऊ जी ने अपने भाग की पूर्ण सम्पत्ति तुम्हारे पिता के पास बेच दी थी। कर्मजीत इत्यादि एक पैसे के भी हकदार नहीं हैं।"

"बेची क्यों थी?"

"वेश्याओं में व्यय करने के लिए। यही कारण उसकी अकाल मृत्यु का है।"

चन्दनसिंह के लिए यह सब-कुछ नवीन था। वह टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। उससे और जानकारी प्राप्त करने के लिए कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"काका! कुछ और बात हो तो वह भी बता दो जिससे मैं अपना व्यवहार ठीक रख सकूँ।"

"केवल अपना व्यवहार ही ठीक रखने से काम नहीं चलेगा। माता जी और नलिनी भाभी को भी समझाना होगा। करणीय यह है कि लक्ष्मणसिंह को गृहीता पद से हटाया जाए और सम्पत्ति का बँटवारा अभी न किया जाए। तुम स्वयं पिता के स्थान पर प्रबन्धक नियुक्त हो जाओ और चंचल को अपने घर में स्थान दिलवाओ।"

चन्दन ने कुछ विचारकर कहा, "फैज़ाबाद से सम्मन आने पर मैं माता जी से मिलने के लिए जाऊँगा और उचित बात ही की जाएगी।"

सुन्दरसिंह चन्दनसिंह की बात से प्रसन्न हो लौट गया। चन्दनसिंह सुन्दरसिंह की कुछ बातों को तो सर्वथा मिथ्या जानता था। केवल एक बात थी कि लक्ष्मणसिंह और ताई जी पिता जी के स्वस्थ होने से पूर्व ही बँटवारे के लिए किसलिए जल्दी मचा रहे हैं? यह क्या सत्य है? वह विचार कर रहा था कि उसके ताया जी दुराचारी थे और अपने भाग की सम्पत्ति व्यर्थ गँवा चुके हैं। केवल यही एक बात थी जिसने उसके मन में सुन्दरासिंह की बातों पर सन्देह उत्पन्न किया था।

चन्दनसिंह अपनी बातों से परेशान अपने कमरे में पहुँचा तो सुरेश अपने पलँग पर लेटा छत की ओर देखता हुआ गजल गा रहा था। वह उसे मस्ती में गाता सुन द्वार से बाहर ही खड़ा हो सुनने लगा। सुरेश गा रहा था—

नाज़ से चौंकी है यों इक मस्त अल्हड़ कामिनी।
जैसे इठलाती किरण से रसमसाती है नदी।
चाँद-से माथे में जुंबिश में महकती काकुलें।
काकुलों के ज़ेरे-साया झुटपुटे की मोहिनी।

चन्दन कमरे में चला आया। वह समझ रहा था कि सुरेश बहुत प्रसन्न है। इसपर वह निर्मला के विचार को स्मरण कर उसकी मायूसी का अनुमान लगाने लगा।

सुरेश पलँग पर लेटा सिर के नीचे दोनों हाथों के पंजे रखे और
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँखें मूँदे गुनगुना रहा था—

करवटों में कमसिनी के वलवलों की चुटकियाँ
अँखड़ियों में भैरवी अँगड़ाइयाँ लेती हुई।

चन्दन की हँसी निकल गई। सुरेश का गुनगुनाना बन्द हुआ और उसने आँखें खोलीं। उसने कहा, "ओह! कब से खड़े हो?"

"कौन अँगड़ाइयाँ लेती हुई आई है?"

सुरेश उठकर बैठ गया और बोला,

"करवटों से खुल रहा है जिस्म का यों बंद-बंद
खिल रही है नाज़ से गोया चमेली की कली।"

"सुरेश, तुम तो बहुत ही गुणी मालूम होते हो! यह शायरी कब से करने लगे?"

"अरे बुद्धू मियाँ, मैं शायरी नहीं कर रहा। ग़ज़ल गा रहा हूँ। देखो दोस्त! जब मैंने देखा कि तुम तो बहिन-भाई के रिश्ते में बँधे हुए हो और विवाह कर सकते नहीं तो मैंने खुद अपने लिए ही यत्न करना आरम्भ कर दिया। मैं अपने प्रयत्न में सफल हुआ हूँ और उसके लिए खुशी मना रहा हूँ।"

"तो तुम इस सगाई से बहुत प्रसन्न हो?"

"हाँ, तुम्हारे मौसा तो कहते थे कि विवाह मेरी परीक्षा के उपरान्त होगा, पर मैं तो चाहता था कि विवाह आज रात ही हो जाता। परन्तु पिता जी की भी यही राय देखी तो दिल मसोसकर रह गया हूँ। अब इस इंतज़ार को छोटा करने के लिए यह तरीका सोचा है।"

"तो पढ़ाई बन्द! अब ये मुशायरे हुआ करेंगे?"

"पढ़ाई तो अब हो नहीं सकेगी। अब उसे याद करते हुए दो महीने गुज़ारे जाएँगे।"

चन्दन कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "लगता है डॉक्टर को बुलाना पड़ेगा।"

"मतलब अपनी बहिन को?"

"क्या हो गया है तुमको? सुरेश! परीक्षा बहुत समीप है। कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इतिहास का टैस्ट होनेवाला है।''

''टैस्ट! वह तो मैं पास हो जाऊँगा। इस अवस्था में मेरा मस्तिष्क दुगुनी तेज़ी से काम करता है।''

एकाएक सुरेश तेज़ी से उठा और लिफाफों में से तीन टुकड़े मिठाई के निकालकर एक कागज़ पर रख चन्दन के सामने रखकर बोला, ''लो दोस्त! तुम भी मेरी खुशी में शामिल हो जाओ।''

चन्दन ने मिठाई लेकर अपनी मेज़ पर रख ली। फिर बोला, ''अभी पेट भरा है। ज़रा भूख लगे तो इसके खाने का स्वाद दुगुना हो जाएगा।''

''अच्छी बात है। पर मिठाई खाते हुए अपनी बहिन के सुहाग का चिन्तन करना।''

सुरेश कपड़े पहन बाहर जाने की तैयारी करने लगा। चन्दन का मन शान्त नहीं था। वह चिन्ता अनुभव कर रहा था। चिन्ता में लक्ष्मणसिंह, निर्मला, माँ, भाभी इत्यादि कई लोग मस्तिष्क में आ रहे थे।

सुरेश कमरे से निकला तो चन्दन पढ़ाई पर चित्त लगाने लगा।

: ८ :

इसके उपरान्त जीवन नियमित चलने लगा। निर्मला का तो होस्टल में आना तब से ही बन्द था जब उसका सुरेश से झगड़ा हुआ था। रविवार के दिन राजबहादुर की मोटर आती थी और वह मध्याह्न का भोजन करने वहाँ जाता था। उसे निर्मला को शान्त और प्रसन्न देख प्रसन्नता होती थी। वह विचार करने लगा था कि निर्मला ने घर से भागने का विचार छोड़ दिया है। चन्दन मन में विचार करता था कि सुरेश अब अवगुणों के होते हुए भी निर्मला को प्रसन्न रख सकेगा। वह उस घूँसे को भूल जाएगा।

इतना विचार कर उसने भी निर्मला की चिन्ता छोड़ दी थी। एक दिन लक्ष्मणसिंह आया और बोला, ''कल फैज़ाबाद सब-जज के सामने बयान देने के लिए चलना होगा।''

''माता जी इत्यादि कैसे जाएँगी?''

''वे सब यहाँ आई हुई हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कौन-कौन?''

''तुम्हारी माता जी, कर्मजीत, धर्मजीत, विश्वजीत, नलिनी और कर्मजीत की माता जी।''

''तो क्या निर्णय किया है उन्होंने?''

''मैं उनकी गोष्ठियों में भाग नहीं ले रहा। राजबहादुर ही उनको समझा-बुझा रहा है।''

चन्दनसिंह जानता था कि राजबहादुर के विचार क्या हैं, इस कारण उसने यह समझ लिया था कि क्या निर्णय होगा। इसपर लक्ष्मणसिंह ने बताया, ''वे लोग एक साँझा बयान वहाँ उपस्थित करनेवाले हैं।''

''पर वह बयान क्या होगा, यही तो विचार का विषय है।''

''तुमसे वे लोग मिलेंगे, वे सब-के-सब राजबहादुर के घर ही टिके हुए हैं।''

''मेरी परीक्षा बहुत समीप आ गई है और मैं चाहता था कि यह झगड़ा परीक्षा के बाद खड़ा किया जाता।''

''मेरा विचार है कि राजबहादुर आज सायंकाल तुम्हारे पास आएगा और साँझे बयान पर तुम्हारे हस्ताक्षर ले जाएगा। इसपर भी तुम उनके साथ न जाना। मैं तुमको कल प्रातःकाल अपनी मोटर में ले चलूँगा और कल पाँच बजे तक लौट जाऊँगा। अन्यथा तुम्हें आज सायंकाल जाना होगा और परसों सुबह लौटोगे।''

''मैं एक बात पूछूँ? आप इस सब कार्य में इतनी जल्दी क्यों मचा रहे हैं?''

''इसमें कारण चंचल है। वह मुझको बदनाम करने में लगी है। एक समय तो उसके फूफा सुन्दरसिंह ने मेरे और शिवकुमार के संबंध में तूफाने-बदतमीज़ी खड़ा कर दिया था। अब बात कुछ सरल हो रही प्रतीत होती है। अच्छा, अब मैं जाता हूँ। मैं कल पाँच बजे प्रातः यहाँ आऊँगा। यदि तुम रात सबके साथ चले नहीं गए तो मैं साथ ले चलूँगा। अब मैं चलता हूँ।''

लक्ष्मणसिंह के चले जाने के उपरान्त राजबहादुर आया और उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बयान पढ़कर सुनाया जो सबने तैयार किया था। चन्दन ने पूछ लिया, ''मौसा जी! आप तो बँटवारे के विरुद्ध थे?''

''हाँ। पर अब मेरी सम्मति बदल गई है। बँटवारा होने से ही लक्ष्मणसिंह का गृहीता होना हटाया जा सकता है। सुन्दरसिंह ने स्वयं गृहीता होने का यत्न किया था। इसने ही हमारे विचार बदले हैं।''

चन्दन ने हस्ताक्षर तो कर दिए और साथ ही कह दिया, ''मैं समय पर फैज़ाबाद पहुँच जाऊँगा।''

''कैसे पहुँच जाओगे?''

''मैं लक्ष्मणसिंह जी की मोटरगाड़ी में आ जाऊँगा।''

''हमारे साथ क्यों नहीं चलते ?''

''दो रातें ज़ाया जाएँगी। उसको तो जाना ही है, वह मुझको भी साथ ले जाएगा।''

''बहुत दोस्ती हो रही है उससे ?''

''मौसा जी! मैं उसे बेईमान और बदमाश नहीं मानता। इससे मेरी उससे मित्रता है।

''यह मित्रता और सहचारिता तो आत्मा की आत्मा से होती है। मैंने बहुत विचार किया है और इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि असंख्य आत्माएँ एक यात्रा पर चल रही हैं। कई उस यात्रा केआगे हैं और कई पीछे हैं। जो जितनी समीप-समीप होती हैं उतनी ही वे एक-दूसरे से सुस्वर हो जाती हैं। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि मेरा अपने पिता जी से इतना सामीप्य नहीं जितना कि ताई जी से है। मेरा दादा मोहन से इतना सामीप्य नहीं जितना दादा कर्मजीत से है। मैं सुरेश के इतना समीप नहीं जितना निर्मला के। सुरेश और मैं एक ही कमरे में रहते हैं और निर्मला से कभी ही मिलता हूँ। इसी प्रकार आपकी मुझ पर अति कृपा है, परन्तु मैं अनुभव करता हूँ कि आप मेरे इतने समीप नहीं जितना लक्ष्मणसिंह हैं। यह सामीप्य और दूरी शरीर, मन और बुद्धि की नहीं, आत्मा की आत्मा से है।''

राजबहादुर इस सबको पागलपन समझता था। उसने चन्दन के हस्ताक्षर ले लिये थे, इस कारण अब वह लक्ष्मणसिंह के साथ रहे अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथक्, वह चिन्ता नहीं करता था। उसने कह दिया, ''कल आना अवश्य होगा। इन हस्ताक्षरों की पुष्टि वहाँ सब-जज के सामने करनी होगी।''

''मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा।''

अगले दिन चन्दन और लक्ष्मणसिंह चार घंटे की यात्रा कर फैज़ाबाद जा पहुँचे। वहाँ तो आधे घंटे में काम हो गया। राजबहादुर बँटवारे में मध्यस्थ नियुक्त हो गया। सब-जज ने लक्ष्मणसिंह के लिए कहा था, परन्तु उसने स्वयं इन्कार कर दिया। इसपर सबकी राय से राजबहादुर बँटवारा कराने में मध्यस्थ नियुक्त हो गया।

लक्ष्मणसिंह ने अपनी गाड़ी में ही चन्दन को लखनऊ वापस भेज दिया। वह स्वयं वहीं रह गया। अभी कुछ लिखा-पढ़ी शेष थी।

मार्ग में चन्दनसिंह अपने पर लक्ष्मणसिंह की कृपा उसी कारण मानता था जिसका उल्लेख उसने राजबहादुर से पिछले दिन किया था।

यह बात उसे एक दिन कर्मजीत ने बताई थी। चन्दन अपने पिता के हत्या के अपराध में पकड़े जाने के सम्बन्ध में सरवरगंज आया हुआ था और दो रात वह कर्मजीत के साथ एक ही कमरे में सोया था। बात आरम्भ हुई थी चन्दन के पिता की उल्टी मति पर। कर्मजीत ने इस घटना पर यह शास्त्रीय विवेचना बताते हुए कहा था, 'चन्दन! हम यह शरीर नहीं हैं। हम हैं उसमें रहनेवाली आत्मा। शरीर तो उसे यात्रा के लिए रथ मिला हुआ है। कभी-कभी रथों की समीपता से हम एक-दूसरे को अपना सम्बन्धी अथवा पड़ोसी मानने लगते हैं। रथ समीप-समीप चल रहे हैं, इसपर भी आत्माएँ दूर-दूर होती हैं। ये आत्माएँ जितनी एक-दूसरे के समीप होती हैं, उतनी ही पड़ोसी होने से एक-दूसरे की सहायक हो जाती हैं। मैं अपने को तुम्हारे अधिक समीप समझता हूँ और धर्म को बहुत पिछड़ा हुआ देखता हूँ।'

चन्दन इस विवेचना पर अपनी बुद्धि से जोड़-तोड़ लगाने लगा था और वह अपने दूसरों से सम्बन्ध-अर्थ समझने लगा था। हम कार्य तो शरीर के द्वारा ही करते हैं, परन्तु आत्माएँ इन शरीरों से कार्य कराती हैं।

वह एक बात नहीं समझा था। वह यह कि जब शरीर रथ है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आत्मा उस रथ में बैठा हुआ है तो फिर रथों के समीप-समीप होने पर भी आत्मा दूर-दूर अथवा रथों के दूर-दूर होने पर भी आत्माएँ समीप कैसे हो जाती हैं ?

कर्मजीत ने तो इतना ही कहा था कि शरीर का लोक भिन्न है और आत्मा का लोक भिन्न है। अतः यह न हो सकने वाली बात समझी जाती है। चन्दन इसको समझ नहीं सका था।

परन्तु गणित के प्रोफेसर ने एक दिन समझाया था। उसने कहा था, "फासले में एक चौथी दिशा भी है। उसने तीन दिशाएँ—'डाइमेंशन'— तो समझा दीं—लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई, परन्तु उसका कहना था कि एक अन्य दिशा भी है—इसे फोर्थ डाइमेंशन भी कहते हैं। तीन दिशाओं में समीप-समीप होने पर भी चौथी डाइमेंशन दूर हो सकती है।"

प्रोफेसर का कहना था, "संसार में, विशेष रूप में अन्तरिक्ष में घट रही अनेक घटनाएँ चौथी डाइमेंशन माने बिना हम समझ नहीं सकते।"

इस बात से कर्मजीत ने भिन्न-भिन्न लोगों की बात स्पष्ट कर दी। वह समझ गया था कि कर्मजीत का लोक से अभिप्राय डाइमेंशन का सूचक ही था।

इसके उपरान्त उसे निर्मला का पूर्ण व्यवहार निर्मल दर्पण की भाँति स्पष्ट हो गया था। वह लक्ष्मणसिंह को भी समझने लगा था।

: ९ :

निर्मला के विवाह की तैयारियाँ होने लगी थीं। सुरेश इन तैयारियों और अपने घर की तैयारियों में भाग ले रहा था, इस कारण वह पढ़ाई में पिछड़ रहा था। चन्दन उसे सचेत करता रहता था, परन्तु वह अपनी ही धुन में सवार था।

एक दिन पढ़ाई के किसी विषय पर बात चली तो सुरेश उस विषय को सर्वथा भूल चुका था। चन्दन ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "सुरेश! यदि फेल हो गए तो निर्मला के मन में तुम्हारी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी।"

"इसकी चिन्ता नहीं। मैं उससे तो अधिक ही पढ़ा हुआ हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु पास नहीं हुए तो आगे पढ़ोगे कैसे?"

"मैं तो पास होने पर भी नहीं पढ़ूँगा।"

"तो जीवन में क्या करोगे?"

"मैं दूकानदारी करूँगा। निर्मला के पिता कहते हैं कि मैं उनकी दूकान पर उत्तराधिकारी के रूप में कार्य करूँगा।"

"तब ठीक है।" चन्दनसिंह समझ गया कि राजबहादुर एक बालक की भाँति तितलियों के पीछे भागता है और पकड़ किसी को भी नहीं पाता।

यह बात मस्तिष्क में आने पर उसे लक्ष्मणसिंह का उसको सात वर्ष का बच्चा कहना स्मरण हो आया।

परीक्षा मई मास में दो तारीख को आरम्भ हुई और बारह तारीख को समाप्त हो गई। अन्तिम दिन चन्दन और सुरेश दोनों इकट्ठे परीक्षा-भवन से लौटे तो चन्दन ने पूछा, "क्यों सुरेश! कैसी रही परीक्षा?"

"मैं तो पास होने के लिए परीक्षा दे नहीं रहा था। पिता जी कहते थे कि जब दो वर्ष तक पढ़ाई की है और परीक्षा का शुल्क दिया जा चुका है तो परीक्षा दे दी जाए। सो परीक्षा में बैठा था। जो कुछ आता था लिख आया हूँ। फिर भी मैं समझता हूँ कि मैं पास नहीं होऊँगा।"

"मैं तो फर्स्ट डिवीजन लेने की आशा रखता हूँ।"

"तो तुम आगे पढ़ोगे?"

"शायद नहीं।"

"तो क्या करोगे?"

"यह अभी विचार करना है। घर जाकर ज़मींदारी की अवस्था देखकर निश्चय करूँगा।"

"मेरा विचार तो हो चुका है।"

"हाँ, तुमने एक दिन बताया था कि तुम मोटर की दूकान करोगे।"

सुरेश का बिस्तर इत्यादि बँधा हुआ था। वह कमरे में पहुँचते ही सामान उठवाकर चल दिया। चन्दनसिंह राजबहादुर और सरस्वती से मिलने के लिए जाना चाहता था। साथ ही उसको सविधाजनक गाडी अगले दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या प्रात: ही मिल सकती थी। अत: उसने विचार कर लिया था कि सामान रात को बाँधेगा, बिस्तर प्रात:काल।

सुरेश के चले जाने के उपरान्त वह कमरे को ताला लगा राजबहादुर की दूकान पर जा पहुँचा।

आज पहले वह दूकान पर गया। राजबहादुर एक ग्राहक के साथ बातें कर रहा था, इस कारण वह एक ओर हटकर खड़ा हो गया। जब राजबहादुर रिक्त हुआ तो उसने चन्दन से पूछ लिया "कब जा रहे हो?"

"कल प्रात:काल की गाड़ी से।"

"सुरेश तो आज ही चला गया है।"

"उसकी गाड़ी सायं पाँच बजे जाती थी।"

"अच्छा, ऊपर चलो। मैं चाय के लिए आ रहा हूँ।"

चन्दन मकान पर जा पहुँचा। निर्मला और सरस्वती बाज़ार से लौटी थीं। वे साड़ियाँ खरीदकर लाई थीं। चन्दन को आया देख सरस्वती ने कह दिया, "इधर आओ, चन्दन! ये देखो, ये साड़ियाँ मैं निर्मला के दहेज में दे रही हूँ। बताओ कैसी हैं?"

"मौसी! बस ये ही?"

"नहीं, बीस सूट दे रही हूँ। ये तो अभी-अभी खरीदकर लाई हूँ।"

"क्यों निर्मला! पसन्द हैं तुमको?" चन्दन ने पूछा।

निर्मला मुस्कराती रही। उत्तर सरस्वती ने ही दिया, "यह स्वयं ही तो पसन्द कर लाई है।"

"तब तो ठीक है, मौसी! हमारी परीक्षा समाप्त हो गई है। मैं कल सुबह सरवरगंज जाऊँगा। अब तो निर्मला के विवाह का निमन्त्रण आने पर ही यहाँ आना हो सकेगा।"

"निमन्त्रण तो जाएगा ही, परन्तु तुमको अभी बता देती हूँ—छ: जून को बारात आएगी। हमने गोमती-पार महोनावालों की कोठी ले ली है। बारात वहीं ठहरेगी। हम एक पृथक् कोठी में रहेंगे। छ: तारीख की रात को विवाह होगा। सात तारीख को प्रात: के अल्पाहार के उपरान्त विदाई होगी। यह तुम अभी से अपनी नोटबुक में लिख लो। तुमको यहाँ पाँच तारीख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हो सको तो उससे भी पहले आना होगा।''

इसी समय राजबहादुर ऊपर आ गया। उसके आने पर चाय पी जाने लगी। इस सब समय में निर्मला चाय बनाती, पिलाती और पीती रही। चन्दन को यह समझ आ रहा था कि निर्मला ने अपने भविष्य पर सन्तोष कर लिया है। उसकी प्रसन्नता से ही यह अनुमान लग रहा था।

चाय समाप्त हुई तो निर्मला ने कह दिया, ''मैं चन्दन भैया को कल स्वयं मोटर में स्टेशन पर ले-जाने के लिए आऊँगी।''

इस पर सरस्वती ने कह दिया, ''मैं भी चलूँगी। देखो चन्दन! अब निर्मला को ड्राइविंग लाइसेंस मिल गया है। अब यह निधड़क हो मोटरगाड़ी चलाने लगी है।''

चन्दन चलने लगा तो निर्मला ने कहा, ''एक वस्तु आपकी यहाँ रखी है, वह ले जाइए, अपने सन्दूक में रख लीजिएगा।''

चन्दन को स्मरण नहीं था कि उसकी कोई वस्तु वहाँ रखी है। इस कारण वह विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। परन्तु निर्मला उसके विस्मय की ओर ध्यान न देते हुए अपने कमरे में गई और एक पुस्तक कागज़ में लपेटी और ऊपर से तागे में बँधी हुई ले आई। उसने पुस्तक का पैकट चन्दनसिंह को देते हुए कहा, ''यह आपकी पुस्तक आपको वापस कर रही हूँ। मैंने पढ़ी है और बहुत रस आया है। धन्यवाद!''

चन्दन कुछ भी समझ नहीं सका। इसपर भी निर्मला को मुस्कराते देख वह यह समझा था कि कुछ बात है जो अपने कमरे में चलकर समझूँगा। उसने पुस्तक को बगल में दबाते हुए कहा, ''तो कल मोटर किस समय आएगी?''

''ठीक छः बजे।''

''मैं प्रतीक्षा करूँगा।''

वह मकान से उतरा और इक्के में सवार हो होस्टल जा पहुँचा। उसको विस्मय हुआ जब उसने देखा कि लक्ष्मणसिंह उसके कमरे के बाहर उसकी प्रतीक्षा में खड़ा था।

''आप कब आए?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आधे घण्टे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"यदि आने की सूचना होती तो मैं आपकी प्रतीक्षा करता।"

लक्ष्मणसिंह ने उसका सामान बिखरा देखा तो पूछ लिया, तो परीक्षा अभी समाप्त नहीं हुई क्या?"

"हो गई है। जाना तो कल प्रातः की गाड़ी से है, इसलिए अब रात को आराम से सामान बाँध लूँगा।"

"मैं तुमको अपनी गाड़ी में ले चलने के लिए आया हूँ।"

"पर....।" वह निर्मला की बात बतानेवाला था, परन्तु बात बदलकर बोला, "सुबह मौसी जी गाड़ी लेकर यहाँ आनेवाली हैं। वे मुझको स्टेशन तक छोड़ने का निश्चय कर चुकी हैं।"

"तब तो और भी मज़ा रहेगा। वे प्रातःकाल आएँगी और पक्षी को पिंजरे से उड़ा हुआ देखकर चकित रह जाएँगी।"

"उनको निराशा होगी।"

"तो क्या निर्मला भी आनेवाली है?"

"वैसे तो मैं उनसे छुट्टी ले लाया हूँ, परन्तु दोनों ही मुझसे बहुत स्नेह रखती हैं।"

"इसपर भी मैं तुमको ले-जा रहा हूँ। पहले प्रतापगढ़, वहाँ से महोना और फिर सरवरगंज। कुछ काम है, जल्दी तैयार हो जाओ। रात का खाना प्रतापगढ़ में खाएँगे। रात वहीं रहेंगे और कल प्रातः महोना और सरवरगंज जा पहुँचेंगे।"

"ऐसा क्या काम है?"

"देरी हो रही है, जल्दी करो! रास्ते में जाते हुए राजबहादुर को बताते चलेंगे।"

चन्दन ने बगल से पुस्तक निकाल मेज पर रख दी और पुस्तकों की गठरी चादर में बाँधने लगा। लक्ष्मणसिंह ने देखा कि चन्दन कोई नई किताब मोल लाया है। इस कारण उसने चन्दन की रुचि देखने के लिए पुस्तक का पैकेट खोल डाला। पुस्तक नई नहीं थी।

उसके नाम पढ़ा—'[illegible]'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मणसिंह ने जिल्द खोली तो उसके प्रथम पृष्ठ को खोल देखने लगा। उसपर निर्मला का नाम और क्लास आदि लिखा था। पुस्तक उसको डिबेटिंग क्लब की ओर से प्रथम पुरस्कार में मिली थी।

लक्ष्मणसिंह ने कहा, ''तो यह निर्मला के इनाम की पुस्तक उठा लाए हो!''

चन्दन पुस्तकों की गठरी बाँध चुका था और अब सूटकेस ठीक कर रहा था। लक्ष्मणसिंह ने किताब का एक और पन्ना उलटा। उसमें लिखा था—''भैया! मैं चार जून को घर से भागकर एक बजे सरवरगंज पहुँचूँगी। ताई जी से कहकर मेरे छिपने का प्रबन्ध कर रखना—निर्मला।''

लक्ष्मणसिंह यह पढ़कर स्तब्ध रह गया। उसको विदित था कि छः जून को निर्मला का विवाह होनेवाला है। उसने चन्दनसिंह को सम्बोधन कर पूछ लिया, ''यह पुस्तक तुमको निर्मला ने भेंट दी है क्या?''

''हाँ!''

''देखो, इसमें एक भेंट की वस्तु यह भी है।''

लक्ष्मणसिंह ने वह कागज़ निकालकर चन्दन की ओर बढ़ा दिया। चन्दन ने सूटकेस छोड़ कागज़ पकड़ा और पढ़ लिया। वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। फिर सूटकेस बन्द करने में लग गया।

लक्ष्मणसिंह ने कहा, ''तुम सूटकेस बाँधो और यह कागज़ मुझे दे दो और यह पुस्तक भी बीच में रख लो।''

चन्दन इसका अर्थ नहीं समझ सका। वह निर्मला के लिखे का अभिप्राय तो समझ गया था, परन्तु लक्ष्मणसिंह का यह कहना कि कागज़ उसको दे दिया जाए—यह वह समझ नहीं सका। इस कारण गम्भीर हो वह बिस्तर बाँधने लगा।

लक्ष्मणसिंह ने उसका सूटकेस उठाया और कहा, ''ड्राइवर को बिस्तर और किताबें उठाने के लिए भेज रहा हूँ।'' वह कागज़ को जेब में डाल कमरे से निकल गया। चन्दन को निर्मला के भागने की बात पर विस्मय हुआ था। उसके विचार में उसने परिस्थिति से सन्तोष कर लिया था, परन्तु लक्ष्मणसिंह के व्यवहार से वह चिन्ता में डूब गया। उसको यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जान पड़ा था कि लक्ष्मणसिंह सब बात राजबहादुर से कर देने वाला है।

इसपर भी उसने बिस्तर बाँधा और ड्राइवर के आने पर उसे बिस्तर उठवा और किताबों की गठरी स्वयं हाथ में लटकाकर चल पड़ा।

मोटर राजबहादुर की दूकान पर रुकी। चन्दनसिंह अपराधी की भाँति लक्ष्मणसिंह के पीछे-पीछे दूकान पर गया। लक्ष्मणसिंह ने कहा, "मैं आज गाँव को जा रहा था, इस कारण चन्दन को साथ लिये जा रहा हूँ।"

"यह तो ठीक ही है।" राजबहादुर ने कह दिया।

इसके बाद उसने नमस्ते की तो लक्ष्मणसिंह और चन्दनसिंह दोनों की भी नमस्ते हो गई।

जब दोनों मोटर में आकर बैठे तो मोटर चल पड़ी। लक्ष्मणसिंह ने कहा, "मैं आज रायबरेली-कालाकांकर से प्रतापगढ़ जा रहा हूँ। वहाँ से अपने गाँव चलेंगे।"

चन्दन ने अपने मन की बात कह दी, "मैं समझ रहा था कि आप निर्मला का पत्र राजबहादुरसिंह जी को देनेवाले हैं।"

"नहीं," लक्ष्मणसिंह ने चन्दन की तरफ देखकर कहा, "मैं तो तुमसे पूछना चाहता था कि वह क्यों भागकर आ रही है?"

"वह सुरेश से विवाह करना नहीं चाहती।"

"तो तुमसे विवाह करना चाहती है?"

"जी नहीं। आपने पढ़ा नहीं? उसमें मुझे भैया कहकर सम्बोधन किया है। बहिन भाई के संरक्षण में आ रही है।"

"पर तुमने राहबहादुर को यह बताया क्यों नहीं कि वह यहाँ विवाह करना नहीं चाहती?"

"मुझसे किसीने पूछा ही नहीं!"

"पूछते तो क्या कहते तुम?"

"यही कि निर्मला उसको बदमाश और बेईमान समझती है।"

"ओह!" लक्ष्मणसिंह उसका मुख देखता रह गया।

चन्दनसिंह ने पूर्ण बात लक्ष्मणसिंह को बता दी। इसपर लक्ष्मणसिंह ने कुछ देर आँखें मूँदकर विचार किया और फिर कह दिया, "मैं समझता
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ कि मुझे उसकी और तुम्हारी सहायता करनी चाहिए।''

''क्या सहायता करेंगे?''

''सरवरगंज में वह पकड़ ली जाएगी और फिर ज़बर्दस्ती विवाह-वेदी पर बैठा दी जाएगी। इसपर तुम सख्त बदनाम हो जाओगे। मैं यह करना चाहता हूँ कि उसके छिपने का प्रबन्ध मैं कर दूँ, और फिर उसके विवाह का प्रबन्ध भी मैं ही करूँ।''

चन्दन ने कृतज्ञता-भरी दृष्टि से लक्ष्मणसिंह की ओर देखा। इसपर लक्ष्मणसिंह ने कहा, ''तुम्हारी ज़मींदारी का बँटवारा हो गया है। भूमि का निर्णय तो हो गया है, नकदी का फैसला शेष है। वह भी निर्मला के विवाह के बाद हो जाएगा।

''तुमको अब गाँव में ज़मींदारी सँभालनी होगी। इस कारण तुम्हारी पढ़ाई में कुछ अर्थ प्रतीत नहीं होता। जब पढ़ाई नहीं होनी तो विवाह हो जाना चाहिए। मैंने इसका एक प्रबन्ध किया है। लड़की और लड़की के माता-पिता प्रतापगढ़ में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि दोनों पक्ष राज़ी हो गए तो विवाह कर्मजीत के साथ ही हो जाएगा। उसका विवाह दस जून को निश्चय हुआ है।''

चन्दनसिंह खिलखिलाकर हँस पड़ा।

''क्यों, किसलिए हँसे हो?''

''एक समय मैंने कहा था कि मेरा विवाह तो कर्म दादा के विवाह के साथ ही होगा। यह उस दिन की बात है जब मेरी सगाई की बात महेश्वरी की माता जी मेरी माता जी से कर गई थीं। मैं कह रहा था कि कर्म दादा का विवाह भी होना चाहिए।''

''तो यह भविष्यवाणी पूरी हो सकती है, यदि लड़की को तुम पसन्द कर लो और लड़की तुमको पसन्द कर ले।''

''लड़की के माता-पिता तथा मेरी माता जी?''

''लड़की के माता-पिता ने तुमको पसन्द किया है। तुम्हारी माता जी मान जाएँगी। मैं उनके स्वभाव को समझ चुका हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: १ :

लड़की थी विन्ध्येश्वरी देवी। यह लक्ष्मणसिंह के बड़े भाई रामसिंह की पुत्री थी। लड़की के माता-पिता ने चन्दनसिंह को उस दिन देखा था जिस दिन वह कर्मजीत की सगाई के दूसरे दिन लक्ष्मणसिंह के निमन्त्रण पर महोना गया था।

लक्ष्मणसिंह ने बाबू दिलजीतसिंह को यह कहा था, "सगाई हो गई है और विवाह होगा, आप मानें चाहे न मानें।" इतना कहकर लक्ष्मणसिंह कार्यालय से उठकर चला आया था। चन्दनसिंह और कर्मजीतसिंह उसके साथ-साथ मोटर तक आए थे। पंडित तुलसीसहाय भी साथ था।

लक्ष्मणसिंह का विचार था कि कर्मजीत को वह अपने घर ले जाएगा। एकाएक उसने चन्दनसिंह को भी निमन्त्रण दे दिया। वह इस लड़के के लिए, इसकी अविकसित बुद्धि के होते हुए भी, अपने मन में एक आकर्षण पाता था। उसने कहा था, "चन्दनसिंह, मोटर की सैर करोगे?"

इस प्रकार अनायास ही चन्दनसिंह को भी वह अपने साथ ले गया। महोना पहुँचकर उसने उनको चाय का निमन्त्रण दे दिया। जब घर की स्त्रियों को पता चला कि उनका दामाद कर्मजीत घर आया है तो वे भी चाय पीने वहाँ आ पहुँचीं। रामसिंह भी आ गया। रामसिंह ने चन्दनसिंह को पहली बार देखा था और उसको भी वह लड़का अच्छा प्रतीत हुआ था।

यह तो उस चाय के कई दिन पीछे की बात है कि रामसिंह की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पत्नी सदारानी ने अपने मन में उठ रहे विचार प्रकट किए थे। उसने कहा, "आपने दिलजीतसिंह के लड़के को देखा था?"

"वह जो कर्मजीत के साथ आया था?"

"हाँ, वही। वह अपनी विन्ध्येश्वरी के लिए कैसा रहेगा?"

"लड़का तो अच्छा मालूम होता है, परन्तु उसके पिता और भाई के विषय में संशय उत्पन्न हो रहे हैं। बात तो मेरे मन में भी उठी थी। उस दिन भैया कह रहे थे कि लड़का बहुत ही समझदार है।"

"तो तुम ही उससे बात करो। अगर वह उससे और उसके घरवालों से संतुष्ट हो सकता है तो मैं राज़ी हो जाऊँगा।"

सदारानी ने लक्ष्मणसिंह से बात कही तो उसने कह दिया, "चन्दन को मैं उतना विद्वान तो नहीं मानता जितना कर्मजीत है, इसपर भी वह सच्चरित्र और श्रेष्ठ बुद्धि रखता है। परन्तु, उनके घर में भारी झगड़ा उठ खड़ा हुआ है।"

"क्या झगड़ा उठ खड़ा हुआ है?"

"महेश्वरी की सास के घर में डाका पड़ गया है। आज ही गाँव का एक आदमी बक गया है कि डाका कर्मजीत के चाचा ने डलवाया है। उसके वारंट निकल गए हैं। अभी तक वह पकड़ा जा चुका होगा।"

"लक्ष्मण भैया! मैं लड़के की बात कह रही हूँ। क्या लड़का भी पिता जैसा ही गँवार है?"

इसपर लक्ष्मणसिंह ने कह दिया, "भाभी! कुछ दिन ठहरो। मैं लड़के के विषय में और जाँच-पड़ताल कर लूँ। तब विचार करेंगे।"

परन्तु सरवरगंज में घटनाएँ द्रुतगति से चलने लगी थीं। दिलजीतसिंह पकड़ा गया और फिर राजबहादुर और लक्ष्मणसिंह के प्रयत्नों से ज़मानत पर छूट गया।

हवालात में रहते हुए दिलजीतसिंह को यह समझ आया था कि लक्ष्मणसिंह उसके विषय में रुचि इसी कारण ले रहा है कि वह अपने दामाद को घर से निकाले जाने का बदला लेना चाहता है। उसको यह समझ आया कि माधो कहार भी लक्ष्मणसिंह और उसके मित्र शिवकुमार
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कहने पर ही बका है। उन्होंने उसे इस बकने के लिए भारी प्रलोभन दिया होगा।

इस प्रकार के विचारों से वह ज़मानत पर छूटा और जब हवालात के द्वार पर ही राजबहादुर के साथ लक्ष्मणसिंह को खड़ा देखा तो वह क्रोध से उबल पड़ा। वह अपने को काबू में नहीं रख सका। उसने उसे जी भरकर गालियाँ दीं।

राजबहादुर समझाता रहा कि लक्ष्मणसिंह ने उसके लिए अनथक परिश्रम किया है और उसके कारण ही वह इतनी जल्दी छूट सका है। अब वह अपने मुकद्दमे की पैरवी बहुत अच्छी प्रकार कर सकेगा।

परन्तु दिलजीतसिंह हवाई घोड़े पर सवार था। जब लक्ष्मणसिंह अपनी हवेली के सामने उतर गया तो राजबहादुर ने फिर समझाया कि उसने ठीक नहीं किया।

लक्ष्मणसिंह तो चन्दन के पिता के कामों में और अधिक हस्तक्षेप न करने का निश्चय किए था, परन्तु घटनाओं ने ऐसी स्थिति उत्पन्न की कि वह और राजबहादुर पुनः इस विषय में साथ आने पर विवश हुए। लक्ष्मणसिंह ने कर्मजीत और नलिनी के हितों की रक्षा के लिए तथा ज़मींदारी के चंचल के संबंधियों के हाथ में जाने से रोकने के लिए स्वयं गृहीता बन जाना उचित समझा।

उसने नलिनी से प्रार्थना करा दी और फिर सिफारिश के बल पर गृहीता नियुक्त हो गया। सौभाग्य से दिलजीतसिंह पागल हो गया और उसके मुकद्दमे में देरी लगने लगी।

इस काल में लक्ष्मणसिंह का चन्दन से सम्पर्क अधिक हो गया। इस समय उसे अपनी भाभी सदारानी की बात स्मरण हो आई। उसने एक दिन बड़े भाई के सामने ही भाभी से पूछ लिया, "भाभी! सरवरगंज के बाबू तो पागल हो गए हैं और उनकी ज़मींदारी का प्रबन्ध मैं कर रहा हूँ।"

"हाँ, सुना है।"

"इस प्रबन्ध में वहाँ के बाबू के लड़के से मेरा सम्पर्क बढ़ गया है और मैं उसको अब अधिक अच्छी तरह जान गया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या कहते हो?"

"लड़का ठीक है, परन्तु विन्ध्येश्वरी के पिता से छोटे दर्जे का ज़मींदार है। इनकी ज़मींदारी बँटेगी और उसकी आय लगभग पचास हज़ार वार्षिक की रह जाएगी।"

इसपर रामसिंह ने पूछ लिया, "लक्ष्मण! तुमने दामाद बनाने के लिए रुपये-पैसे की योग्यता कब से देखनी आरम्भ कर दी है?"

"जब से भाभी के लिए दामाद ढूँढने लगा हूँ।"

सदारानी ने पूछ लिया, "पर तुम मेरे और अपने दामाद में अन्तर मानते हो?"

"दामादों में अन्तर नहीं मानता, पर भाभी में और इन्द्रमणि में अन्तर मानता हूँ। इन्द्रमणि को तो मैं जानता हूँ कि वह एक निर्धन सरकारी कर्मचारी की लड़की है। उसके सब संबंधी, मेरा मतलब है उसकी माँ की ओर के, साधारण वृत्ति के हैं। भाभी तो एक राजा कहे जानेवाले जमींदार की लड़की है। क्यों भाभी! ठीक नहीं है क्या?"

"यह वस्तुस्थिति तो ठीक है, परन्तु जब मेरे पिता ने अपनी लड़की को अपने से कम आयवाले ज़मींदार को दे दिया है तो तुम मुझको इसमें संकोच करनेवाली कैसे समझते हो?"

"जब दिलजीतसिंह सरवरगंज में गूँजता था, मैंने चन्दनसिंह के विषय में पूछा था।"

"वह तो अब है ही नहीं।"

"पर मुझे याद है।" लक्ष्मणसिंह ने कहा, "जब कर्मजीत की निर्धनता का उल्लेख कर मैंने भाभी से उसकी राय पूछी थी तो भाभी ने कुछ कहा था कि पेट भरने के लिए कुछ तो चाहिए। इससे मेरे मन में भ्रम बन गया था। यदि यह भ्रम ही है तो भाभी, मैं चन्दनसिंह की सिफारिश कर सकता हूँ।"

"इतनी जल्दी नहीं।" रामसिंह ने कह दिया, "पहले यह बताओ कि कौन-सी विशेषता तुमने कर्मजीत में देखी थी और अब क्या गुण तुमने चन्दनसिंह में देखा है जो एक को दामाद बना चुके हो और दूसरे को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने की सिफारिश कर रहे हो?''

लक्ष्मणसिंह अपने विचारों और अनुभवों को सुव्यवस्थित करके बोला, ''देखो दादा! कर्मजीत के विषय में जब पण्डित जी ने यह बताया कि वह संयमी और ईश्वरनिष्ठ युवक है, तो मैं मान गया था।

''मैं समझता हूँ कि इस संसार में सुख की उपलब्धि ही मुख्य है और इसकी प्राप्ति के दो मार्ग हैं—एक दैवी और दूसरा आसुरी। ईसाइयों में दूसरे मार्ग को शैतान के पास अपने को बेचकर कुछ प्राप्त करने का नाम है।

''दैवी मार्ग, बिना परमात्मा और इस शरीर में आत्मा की अनुभूति किए, ग्रहण नहीं किया जा सकता।

''जब मैंने यह जाना कि कर्मजीत परमात्मा और आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखता है तो मेरा निर्वाचन हो गया।

''जिस दिन भाभी और महेश्वरी की माँ दिलजीतसिंह के लड़के को देखकर आई थीं, मैं उसके लड़के से छः घंटे तक विविध विषयों पर बातचीत करके आया था। मुझे वह ऐसा प्रतीत होता था कि उसके शरीर में उसका आत्मा ऐसे बँधा हुआ है जैसे किसी जेलखाने में कोई भला कैदी। अतः जब मुझे यह पता चला कि ये दोनों दिलजीतसिंह के लड़के की बात कर आई हैं तो मैंने उसे अस्वीकार कर दिया।

''वैसे मुझे चन्दन का आत्मा अपने शरीर में किसी पक्षी के पिंजरे में फड़फड़ाने की भाँति छटपटाता प्रतीत हुआ था, परन्तु पिंजरा उसके अस्तित्व को अनुभव नहीं कर रहा था।

''कर्मजीत से सम्बन्ध के कारण मुझे दिलजीतसिंह के कामों में रुचि लेनी पड़ी। इस सन्दर्भ में मैं चन्दन से मिलता रहा। कुछ घटनाएँ घटी हैं जिनका कारण पिंजरे में पक्षी को अपने अस्तित्व का केवल ज्ञान ही नहीं परन्तु उसको आत्मा और शरीर के सम्बन्ध का सत्य ज्ञान भी हुआ है।

''इसमें कुछ तो कारण हुआ है कर्मजीत की चन्दन से सम्पर्क में वृद्धि और कुछ एक लड़की के बुद्धियुक्त व्यवहार के कारण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

''अब मैं यह समझता हूँ कि उसका आत्मा उसी लोक में विचरने

लगा है जिसमें कर्मजीत अथवा मैं विचरते हैं।''

रामसिंह आत्मा-परमात्मा की बात तो समझता था, परन्तु यह लोक की बात उसके लिए नई थी। उसने पूछा, ''लक्ष्मण! तुम किस लोक में विचरते हो?''

''देखो दादा! उपनिषद् में कहा है कि आत्मा पाँच कोषों—खोलों—में बंद किया हुआ इस संसार में फँसा है। एक कोष है पंच-भौतिक शरीर। इसे अन्नमय कोष कहते हैं। शरीर का पालन-पोषण अन्न से होता है।

''दूसरा कोष अर्थात् बन्धन है प्राणमय कोष। यह इन्द्रियों का कोष है। दादा! इसे 'नर्व कवरिंग' भी कहते हैं। तीसरा कोष है मनोमय कोष। इसे 'मैंटल कवरिंग' कहते हैं। इसे संस्कारों का ढाँचा भी कह सकते हैं। चौथा ग्लाफ है ज्ञानमय कोष। इसे 'इंटैलेक्चुअल कवरिंग' कहते हैं। यह शास्त्र पढ़ने से बनता है। पाँचवाँ कोष है आनन्दमय कोष। इसे आत्मा की परमात्मा से सम्पर्क की स्थिति कहते हैं।

''ये हैं लोक। मैं अपने आत्मा को ज्ञानमय कोष में समझता हूँ जो आनन्दमय कोष में जाने का यत्न कर रहा है। यही अवस्था मैं कर्मजीत और अब चन्दन की पाता हूँ। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि वह लड़की भी लगभग इसी कोष में पहुँची हुई है जिसका प्रभाव चन्दनसिंह पर हुआ है।

''इसीलिए इन सबको अपना पड़ोसी कहो, साथी कहो, सहयात्री कहो, यह सब मानता हूँ। ऐसे व्यक्ति को मैं सुख के द्वार पर खड़ा पाता हूँ।

''भाभी! कुछ समझी हो?''

सदारानी हँस पड़ी और बोली, ''तुम यह बताओ कि चन्दन से विन्ध्येश्वरी के विवाह की सिफारिश करते हो?''

''हाँ भाभी! वह सजातीय है।''

''तो फिर उसको यहाँ लाकर यह प्रबन्ध कर दो।''

''अच्छा भाभी! मैं उसको [illegible] की बारह तारीख की रात को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतापगढ़ की कोठी में ले आऊँगा। और यदि ठीक समझो तो विन्ध्येश्वरी को भी वहाँ ले चलना। शेष बात उसके बाद होगी।''

: २ :

वे प्रतापगढ़ नौ बजे रात पहुँच गए। जाते ही हाथ-मुख धो भोजन पर जा बैठे। वहाँ रामसिंह, उसकी पत्नी तथा विन्ध्येश्वरी उपस्थित थे। भोजन और बातचीत साथ-साथ होती रही। इसके उपरान्त वहीं रात को आराम किया गया। अगले दिन प्रातःकाल लक्ष्मणसिंह ने चन्दनसिंह से पूछा, ''चन्दन! मेरी योजना ठीक है न?''

''जी! मुझे स्वीकार है। इसपर भी माता जी की स्वीकृति आवश्यक है।''

''हो जाएगी। चलो!''

प्रातः का अल्पाहार महोना में लिया गया और वहाँ से चौदह छुहारे और नारियल लेकर रामसिंह तथा विन्ध्येश्वरी की माता सदारानी एक गाड़ी में और चन्दन तथा लक्ष्मणसिंह दूसरी गाड़ी में सरवरगंज जा पहुँचे।

लक्ष्मणसिंह का अनुमान ठीक था। जब चन्दन की माँ के सामने नारियल, छुहारे तथा एक सहस्र और एक रुपया रखा गया तो उसने उठाकर उन्हें अपने माथे से लगा लिया। अब दोनों ओर से दो-दो विवाह एक ही दिन करने की तैयारी होने लगी।

चार जून को लक्ष्मणसिंह बारह बजे सरवरगंज पहुँचा और चन्दनसिंह को लेकर सरवरगंज से सुलतानपुर की सड़क पर आधा मील जाकर खड़ा हो गया। ठीक डेढ़ बजे निर्मला गाड़ी भगाती हुई वहाँ पहुँच गई। निर्मला ने उनको सड़क के किनारे खड़े देख गाड़ी खड़ी कर ली। वह इस बात से चिन्तित थी कि लक्ष्मणसिंह भी वहाँ उपस्थित था।

चन्दनसिंह ने निर्मला को पृथक् ले-जाकर समझा दिया कि उनकी हवेली उसके छिपने के लिए उचित स्थान समझ आया है। निर्मला को भी यह प्रबन्ध अधिक श्रेष्ठ प्रतीत हुआ।

पाँच तारीख के प्रातःकाल सरस्वती और राजबहादुर सरवरगंज आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचे। वहाँ उन्होंने चन्दन से निर्मला के विषय में पूछा तो उसने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की।

वहाँ से वे महोना लक्ष्मणसिंह की राय पूछने जा पहुँचे। लक्ष्मणसिंह ने उनके शोक में शोक व्यक्त करते हुए कहा, ''मैं स्वयं तो जा नहीं सकता। कारण यह कि दस तारीख को हमारे घर में दो लड़कियों का विवाह एक-साथ हो रहा है।

''इसपर भी मैं तीन-चार आदमी यहाँ से सौ मील के अंतर पर सब पैट्रोल बेचने की दूकानों पर पूछताछ के लिए भेज देता हूँ। इससे पता चल जाएगा कि वह किधर गई है। मेरा अनुमान है कि वह कलकत्ता चली गई होगी।''

सरस्वती सरवरगंज में लड़की के न मिलने पर रोने लगी थी। वह निरन्तर आँसू बहा रही थी। लक्ष्मणसिंह ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, ''भाभी! धीरज धरो। मैं उसे खोज निकालूँगा। मेरी पहुँच कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, लाहौर और कराची तक है।''

''मुझे डर लग रहा है कि गाड़ी का कहीं एक्सीडेंट न कर बैठी हो और सड़क के किनारे कहीं उसका शव गीदड़ और कौवे न खा रहे हों। हमको विश्वास था कि वह सरवरगंज में मिल जाएगी।''

''देखो भाभी! अब उसका विवाह यहाँ तो हो नहीं सकता। इस कारण घर जाकर विवाह रद्द कर दो और यह काम मुझपर छोड़ो। मैं उसको ढूँढूँगा और यदि मिल गई तो विवाह करने में सहायता कर दूँगा।''

विवश राजबहादुर और सरस्वती विवाह-कार्य रोकने के लिए लखनऊ चल पड़े।

राजबहादुर को चन्दन के और कर्मजीत के विवाहों का निमंत्रण मिला था। उनका विचार इन विवाहों में सम्मिलित होने का नहीं था।

आठ तारीख को राजबहादुर को तार मिला, 'निर्मला मिल गई। अगले समाचार की प्रतीक्षा करो।'

दस तारीख को एक अन्य तार मिला—'फौरन आ जाओ!'

राजबहादुर अपनी पत्नी के साथ मोटर में महोना आ पहुँचा। वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेश्वरी और विन्ध्येश्वरी के विवाहों की तैयारी हो रही थी।

राजबहादुर की मोटर हवेली के बाहर खड़ी हुई तो लक्ष्मणसिंह बाहर आ गया। सरस्वती के मुख से निकल गया—"निर्मला?"

"वह रात यहाँ पहुँची थी। मैंने उसे सरवरगंज उसकी मौसी के घर भेज दिया है। इस समय वह अपने भाइयों के विवाह में सम्मिलित हो रही है।"

राजबहादुर पुनः गाड़ी में बैठने लगा तो लक्ष्मणसिंह भी उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। तीनों वहाँ पहुँचे तो पद्मा ने उनको निर्मला से मिला दिया।

माँ प्रसन्नता से आँसू बहाती हुई लड़की से गले मिली। राजबहादुर ने निर्मला की पीठ पर हाथ फेरकर प्यार दिया और कहा, "तुम बिना बताए क्यों चली आई थीं? देखो, माँ का क्या हाल हो गया है!"

"पिता जी!" निर्मला ने आँखें नीची किए हुए कह दिया, "आप भी तो बिना मुझसे पूछे मेरी सगाइयाँ करते चले जा रहे थे।"

"तो अब?"

"चन्दन भैया का विवाह हो जाए तो आपके साथ लखनऊ चलूँगी।"

लक्ष्मणसिंह ने बताया, "बनारस में एक पेट्रोलवाले ने बताया कि एक बहुत ही कमसिन लड़की मोटर का टैंक पेट्रोल से पूरा भरवाकर चार तारीख शाम को कलकत्ता गई है। वहाँ धर्म और मेरा ड्राइवर उसको ढूँढने के लिए गए थे। वे उसे एक होटल में रहते हुए पकड़ लाए हैं। ये कल शाम को महोना पहुँचे थे। मैंने आपको प्रतापगढ़ से तार करवा दिया और इसे अपनी मौसी के घर पहुँचवा दिया था।"

"लक्ष्मणसिंह जी! आपने इस लड़की को दोबारा मुसीबत से बचाया है। मैं आपका बहुत ही आभारी हूँ। मैं विचार करता हूँ कि आपका और मेरा क्या संबंध है जो आप मेरे लिए इतना-कुछ कर रहे हैं?"

"आपके साथ तो कोई संबंध नहीं। हाँ, यह लड़की तो मेरी और चन्दन की बिलकुल पड़ोसिन प्रतीत होती है। इसकी आत्मा और मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा समीप-समीप के लोकों में रहनेवाली हैं।''

राजबहादुर यही बात चन्दन से सुन चुका था। अत: वही फिर लक्ष्मणसिंह के मुख से सुन विस्मय में उसका मुख देखता रह गया।

: ३ :

पद्मा ने राजबहादुर और सरस्वती को हवेली के कमरे में ठहरा दिया। निर्मला तो वहाँ पहले ही टिकी थी। चन्दनसिंह सरस्वती मौसी से मिलने आया तो उसने कह दिया, ''चन्दन! तुम भी सुरेश को निर्मला के लिए ठीक नहीं मानते थे?''

''मौसी! अब जल मथने से क्या लाभ! अब आगे की बात विचार करो। मैं तो आप जितनी बुद्धि नहीं रखता।''

''तुमने निर्मला से पूछा तो होगा कि उसने सुरेश को क्यों अस्वीकार किया है और फिर उसने हमको क्यों नहीं बताया? हम उसकी इच्छाओं का कभी अनादर नहीं करते।''

''मौसी! कल सायं वह यहाँ पहुँची थी। धर्मजीत और बाबू रामसिंह का ड्राइवर महोना की एक मोटर में कलकत्ता गए थे। उनको यह कहा गया था कि कलकत्ता की सड़क पर जब किसी पेट्रोल की दूकान पर पता चले तो तार दे दें। विश्वजीत और एक मुंशी कानपुर, झाँसी, फिर भोपाल इत्यादि स्टेशनों पर पता करते हुए गए। उन्हें दूसरी गाड़ी में भेजा गया था। बाबू लक्ष्मणसिंह कह रहे थे कि वह इन मार्गों से ही जा सकती है। वह अवश्य मिल जाएगी।

''पाँच तारीख सायं ही धर्मजीत का तार बनारस से मिला था। फिर सात तारीख को कलकत्ता से तार मिला और आठ तारीख को तार आया कि वे निर्मला के साथ आ रहे हैं।

''वहाँ यह 'मैट्रोपोलिटन' होटल में ठहरी हुई थी। वह नौ तारीख को लौटने का विचार रखती थी और दस या ग्यारह तारीख को लखनऊ पहुँचनेवाली थी। उसको विश्वास था कि तब तक विवाह रद्द हो चुका होगा।

''धर्म के वहाँ पहुँचने पर वह तुरी वापस वापस चलने को तैयार हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गई। इसी कारण वह कल सायंकाल ही यहाँ पहुँच गई थी।''

''ज़रा धर्म को बुलाओ! हम उसका धन्यवाद करना चाहते हैं।''

''वह अपनी माँ के साथ दूसरे घर में है। कहें तो बुला देता हूँ। वैसे धन्यवाद की आवश्यकता नहीं।''

''फिर भी।''

''मौसी! वह धन्यवाद नहीं, कुछ और चाहता है।''

''क्या?''

''मिठाई खाना।''

सरस्वती इसका अर्थ नहीं समझ सकी। राजबहादुर समझ गया था। उसने कहा, ''तो इस काम का इतना बड़ा पुरस्कार माँगता है?''

''परन्तु मौसा जी! आप तो फोकट में दो बार दूसरों को मिठाई खिला चुके हैं। इसने तो फिर भी कुछ काम किया है।''

अब सरस्वती समझी। दो बार मिठाई खिलाने की बात से उसको चन्दन का प्रस्ताव समझ आया। फिर कुछ विचार कर बोली, ''अब हम जल्दी में निर्णय नहीं करेंगे। बहुत विचार के बाद ही यह बात हो सकेगी।''

''ठीक है, मौसी! धर्म ने कल मेरे कान में यह बात कही थी। मैंने अभी किसी को बताया नहीं है।''

चन्दन के विवाह की बात आरम्भ हुई तो राजबहादुर ने पूछ लिया, ''यह कैसे हुआ है?''

''बाबू लक्ष्मणसिंह ने ही यह सब प्रबन्ध किया है। कैसे और क्यों, सो तो मैं जानता नहीं। एक बार सगाई से पहले लड़की दिखाई थी। मैंने स्वीकार की तो मिठाई खाने को मिल गई।''

''यह लक्ष्मणसिंह बहुत ही चतुर व्यक्ति है।'' राजबहादुर का कहना था।

''जी! परन्तु धूर्त प्रतीत नहीं हुआ।''

''ठीक है। अब वह तुम्हारे श्वसुर का भाई बन गया है। अब तो तुम उसकी प्रशंसा करोगे ही।''
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मौसा जी! मैंने तो अपनी यह सम्मति आपको पहले भी बताई थी।"

"सगाई के समय क्या मिला था?" सरस्वती का प्रश्न था।

"मुझे तो एक लड्डू मुँह मीठा करने के लिए, पर माँ को एक सहस्र और एक रुपया दिया गया था।"

"और विवाह पर कुछ लेन-देन की बात हुई है?"

"हाँ।"

"क्या?"

"कम-से-कम पाँच फुट पाँच इंच ऊँची स्वस्थ सुन्दर लड़की।"

"और उसके साथ?" मुस्कराते हुए सरस्वती ने पूछ लिया।

"यह अभी पता नहीं। पर मौसी, अब हमारे घर पर बँटवारा हो चुका है। मेरे भाग में तीन गाँव आए हैं, तीन मदन और तीन नलिनी के लड़के गुल्लू के। एक चंचल भाभी को उसके जीवन-काल के लिए, यदि वह विवाह न करे तो। सात गाँव ताई को मिले हैं। वे कुछ बड़े हैं। नकदी का बँटवारा हो गया है। लिखत-पढ़त हो चुकी है।"

"तुमको नकद कितना मिला है?"

"पचास हज़ार हम तीनों को। चंचल भाभी को दस हज़ार और पचास हज़ार ताई को।"

"अब ज़मींदारी करोगे?"

"मैं अपनी ज़मींदारी का मैनेजर धर्म को नियुक्त कर रहा हूँ। जब वह ठीक ढंग से काम करने लगेगा तो मैं लखनऊ अथवा बम्बई-कलकत्ता में कोई कारोबार करूँगा।"

इसपर राजबहादुर ने कह दिया, "तो हमारी दूकान पर क्यों नहीं आ जाते?"

"आपके प्रस्ताव पर विचार करने की आवश्यकता है।"

"पर पहले तो तुम मान चुके थे?"

"ठीक है। निर्मला की सगाइयों की भाँति अब विचार कर ही माना करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राजबहादुर हँस पड़ा। वह समझ गया था कि चन्दन उसको अस्थिरबुद्धि समझ रहा है।

चन्दन मुस्करा रहा था। उसने कहा, ''मौसीजी! एक तो यह देखना है कि सत्य ही आप मुझे दूकान पर चाहते हैं क्या? दूसरे, एक और बात है।''

''वह भी बता दो।'' सरस्वती ने पूछ लिया। वह समझी थी कि चन्दन उसके विषय में निश्चय करना चाहता था।

''मौसी! अब विचार करनेवाला मैं अकेला नहीं। एक साथी और आ रहा है।''

''ओह! अभी से उसकी चिन्ता लगने लगी है?''

''मौसी, अब देर ही कितनी है उसके आने में! सायंकाल बारात जा रही है। हमने मोटर, ताँगे और इक्के लखनऊ-इलाहाबाद से मँगवाए हैं। सब पहुँच गए हैं। सब मिल-मिलाकर एक सौ गाड़ियाँ हैं। गैस के हंडे भी कानपुर तक से आए हैं। गैस के हंडे तो महोना से दो फर्लांग इधर पहुँच गए हैं। बाराती यहाँ से पाँच बजे चलेंगे और सात और आठ बजे के लिए भीतर हम वहाँ पहुँचेंगे। बाराती रात-भर वहाँ रहेंगे। रात विवाह होगा और कल प्रातःकाल विदाई होगी। उन्हीं गाड़ियों में हम लौट आएँगे।''

''बहुत जल्दी कर रहे हो?''

''यह सब लक्ष्मणसिंह और माँ ने निश्चय किया है।''

''कितना खर्च कर रहे हो?''

''दोनों भाइयों की शादी पर साँझा खर्च हो रहा है, जो कुछ भी हो जाए।''

''यह सब प्रबंध किसने किया है?''

''नलिनी के पिता पिछले एक मास से इस सब प्रबंध में लगे हुए हैं।''

सरस्वती ने निर्मला से भी पृथक् में बात की। निर्मला ने पहले तो यह कहा, ''माँ! अब लखनऊ चलकर बताऊँगी।''

''इतना बता दो कि यह भागने की सब योजना किसने बनाई थी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला मुस्कराई और उसने अपनी उँगली माथे पर रखकर कहा, "इसने।"

"मैं तुमको इतनी चतुर नहीं समझती थी।"

"पर माँ! पिता जी से तो कम ही चतुर हूँ। जब भी विचार आया उन्होंने तुरन्त मेरी सगाई कर दी। मैंने तो अपनी योजना पर विचार करने और फिर उसका प्रबन्ध करने में साढ़े तीन महीने लगाए थे। जिस दिन पिता जी ने उस बदमाश के बच्चे को लाकर दिखाया था, उसी दिन से मैं योजना बनाने और फिर उसकी तैयारी करने लगी थी। उसी दिन से भागने के लिए रुपए इकट्ठे करने लगी थी।

"यह सब-कुछ विचार हुआ था मार्च के अन्त में। कार्य आरम्भ हुआ था अप्रैल में। मोटर-ड्राइविंग का लाइसेंस मिल गया था मई मास के आरम्भ में। और घर से निकली थी जून की चार तारीख की प्रात:काल पाँच बजे। बताओ माँ, क्या यह उतनी जल्दी है जितनी जल्दी आप सगाइयों का प्रबंध करते थे?"

"अब सगाई का प्रबंध भी तुम ही करोगी।"

"पर मैं तो उतनी जल्दी नहीं कर सकूँगी।"

"चन्दन की सगाई तो चुपचाप दस मिनट में हो गई थी।"

"नहीं माँ! महेश्वरी के पिता जी ने बताया है कि उन्हें चन्दन की परीक्षा लेते हुए और उसको अपने अनुकूल करते हुए चार मास लग गए हैं।"

"और तुम कितने महीने लगाओगी?"

"पहले किसी का पता चलेगा, फिर विचार करने में कुछ तो समय लगेगा ही।"

सरस्वती समझ गई थी कि अभी धर्म की बात उसके सामने नहीं आई है।

बारात ठीक समय पर चली और उचित समय पर महोना पहुँच गई।

रात का भोजन बारातियों को मिला। गाने-बजाने का कार्यक्रम भी हुआ। रात विवाह-संस्कार सम्पन्न हुआ और अगले दिन प्रात:काल विदाई हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार-पाँच दिन तक सरवरगंज में उत्सव रहा। बाहर से आए लोग तो विदा हो गए थे, परन्तु घर के लोग और अति समीप के संबंधी घर पर टिके थे।

राजबहादुर और सरस्वती तो दूसरे दिन ही विदा हो गए थे, पर निर्मला ने अपना जाना स्थगित कर दिया। उसने कहा, "माँ! चन्दन भैया पन्द्रह जून को नैनीताल जाने के लिए लखनऊ जाएँगे। मैं उनके साथ ही जाऊँगी। वे एक दिन लखनऊ ठहरेंगे और फिर मोटरगाड़ी से नैनीताल जाएँगे।"

"और तुम भी उनके साथ जाओगी?"

"माँ! तुम चलो तो मैं चल सकती हूँ।"

"यह तो तुम्हारे पिता जी से पूछना होगा।"

जाने से पूर्व सरस्वती ने पद्मा से चन्दन की कही हुई बात कह दी। "दीदी! चन्दन कहता है कि निर्मला के लिए धर्मजीत उचित वर है।"

पद्मा टुकर-टुकर उसका मुख देखती रही। फिर कुछ विचार कर बोली, "और निर्मला क्या कहती है?"

"उसको अभी इस प्रस्ताव का ज्ञान प्रतीत नहीं होता। मैंने एक ढंग से पूछा था और उसके उत्तर से यही विदित होता है कि वह इस विषय में कुछ नहीं जानती।"

"देखो सरस्वती! तुम कहो तो धर्म की माँ से बात करूँ। यदि विचार न हो तो चुप रहो और राजरानी अथवा धर्म की ओर से प्रस्ताव आने दो।"

"अच्छा, विचार कर पत्र लिखूँगी।"

बात यहीं समाप्त हो गई।

: ४ :

चन्दन और विन्ध्येश्वरी नैनीताल गए और कर्मजीत तथा महेश्वरी शिमला। यह लक्ष्मणसिंह की योजना थी कि कर्मजीत शिमला जाए, धर्म उसकी अनुपस्थिति में दोनों जमींदारियों का प्रबंध करता रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला लखनऊ तो चन्दन इत्यादि के साथ ही चली आई थी, परन्तु वह नैनीताल नहीं जा सकी। माँ ने साधारण रूप में उससे भी पूछा था, ''निर्मला! चन्दन भैया के साथ जाना चाहोगी?''

''नहीं माँ! मैं तुम्हारे साथ जाना चाहूँगी।''

''पर मैं तो तुम्हारे पिता के बिना जा नहीं सकती, और तुम्हारे पिता को दूकान छोड़कर जाना ठीक प्रतीत नहीं होता।''

''तो मैं भी नहीं जाऊँगी।''

बात समाप्त हो गई। परन्तु इसका अभिप्राय राजबहादुर ने सरस्वती को बताते हुए कहा, ''मैं इसका अभिप्राय यह समझा हूँ कि वह इच्छा तो करती है जाने के लिए, परन्तु नवीन दम्पती के परस्पर मिलन में बाधा बनना नहीं चाहती।''

''मैं तो चाहती थी कि इसके विवाह का भी प्रबन्ध हो जाता तो ठीक था।''

''परन्तु हम दो बार भूल कर चुके हैं। अब फिर उसी मार्ग पर कैसे चल सकते हैं?''

''मैं समझती हूँ कि यदि अपने में कार्यकुशलता न हो तो किसी दूसरे से राय क्यों न कर ली जाए?''

''परिचित तो बहुत हैं, परन्तु पहले दो बार उन परिचितों से ही तो राय की थी और दोनों बार ही ठोकर खाई है।''

''आप लक्ष्मणसिंह को परिचितों में गिनते हैं अथवा नहीं?''

''वह महास्वार्थी है। देखो न, अपने घर की दोनों लड़कियों का विवाह एक ही घर में कर लिया है। निस्संदेह यह सरवरगंज की पूर्ण ज़मींदारी एक दिन महोना में विलीन हो जाएगी।''

''तो इसका मतलब यह हुआ कि आपके निःस्वार्थी मित्र तो आपको मिथ्या मार्ग ही दिखा सके थे, और जो स्वार्थी परिचित है उसने दो बार आपकी सहायता की है। मेरी समझ में नहीं आता कि उसने कौन-सा स्वार्थ सिद्ध किया था अपने मित्र शिवकुमार का कच्चा चिट्ठा बताने में और निर्मला को ढूंढ निकालने में सैकड़ों रुपयों की पेट्रोल फूंक देने में?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"युक्ति से तो तुम बात ठीक कहती हो। परन्तु इस सबको न समझ आते हुए भी, उसका स्वार्थ तो सिद्ध हुआ ही है। चन्दन और कर्मजीत दो अति श्रेष्ठ युवकों को अपने परिवार में खींच सका है और अपने परिवार की उन्नति के द्वार खोल लिये हैं।

"देखो रानी! चन्दन को प्रसन्न करने के लिए ये दोनों आयोजन सम्भव नहीं थे क्या? इसी कारण मेरा यह कहना है कि लक्ष्मणसिंह अति चतुर परन्तु अति धूर्त व्यक्ति है।".

सरस्वती कभी विवाहित जीवन के आरम्भ में गीता पढ़ा करती थी। वह राजबहादुर की संगति में आने से छूट गई थी। राजबहादुर उसकी हँसी उड़ाया करता था। परिणामस्वरूप उनका गीता-पाठ समाप्त हो गया। आज उसे अपने पति की बातें सुनकर गीता की एक बात स्मरण आ गई थी। गीता में कहा है—

अधर्मं धर्ममिति यो मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥[१]

वह विचार करने लगी थी कि ठीक यही बात उसके पति के साथ हो रही थी। वह चुप रही। उसने समझ लिया कि अब उसको स्वयं इस काम में अग्रसर होना चाहिए। वह स्वयं को तामसी बुद्धि की नहीं मानती थी।

परिणाम यह हुआ कि जब चन्दन नैनीताल से लौटा और पति-पत्नी एक रात के लिए उसके घर में ठहरे तो उसने चन्दन को पृथक् में पूछ लिया, "चन्दन! तुम्हारे एक भाई ने तुम्हारे कान में कुछ कहा था—स्मरण है?"

"हाँ।"

"तो उसने फिर कभी वही बात कान में नहीं कही?"

"मुझे गाँव से आए हुए डेढ़ मास से अधिक हो गया है और कान में

---

१. जो धर्म को अधर्म मानता है और अज्ञान से आवृत है, उसको सब काम उलटे दिखाई देते हैं। ऐसी बुद्धि तामसी कहाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्त्र डालनेवाले व्यक्ति से मिलने का अवसर नहीं मिला। परन्तु एक बात मैं कह देना चाहता हूँ कि मैंने गाँव से आने से पूर्व वह संदेश निर्मला को दे दिया था और उसने कोई उत्तर नहीं दिया था। इस कारण मैंने इस विषय में अधिक विचार भी नहीं किया।''

''तो एक बात करो। अपने पथप्रदर्शक बाबू लक्ष्मणसिंह से ही इसके विषय में कभी राय कर लो।''

''उनसे इस विषय पर बात हुई है। उनका कहना है कि मौसाजी संसार में चलनेवाली दौड़ में बहुत पीछे रह गए हैं। कभी-कभी तो वे विपरीत दिशा में दौड़ने लगते हैं। उनके विचार में निर्मला उनसे आगे निकल गई है। इस कारण दोनों की विचार-सरणी में अन्तर पड़ गया है।

''इस कारण वे कहते थे कि निर्मला का विवाह निर्मला के सज्ञान हो जाने पर उसकी अपनी इच्छा से होना चाहिए। यदि पहले हुआ तो या तो निर्मला दुःखी होगी अथवा मौसा जी दुःख अनुभव करेंगे। दोनों एक ही दिशा और एक ही स्तर पर विचार नहीं करते।''

इन दिनों एक बात हो रही थी। निर्मला अपने पिता की दूकान पर जा दूकान के कार्यालय का कार्य देखने लगी थी। राजबहादुर ने एक दिन कहा था, ''निर्मला, यदि दूकान का काम करना है तो थोड़ी पढ़ाई और कर लो।''

निर्मला जानती थी कि उसके पिता ने भी मैट्रिकुलेशन परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सकने पर दुकान करने का विचार बनाया था। वह तो दो-तीन मास में निश्चय ही उत्तीर्ण होनेवाली थी। इस कारण उसने धीरे-धीरे हिसाब-किताब रखने, चिट्ठी-पत्री करने और टाइप इत्यादि करने का ढंग सीखना आरम्भ कर दिया था। राजबहादुर ने जब देखा कि वह काम सीख रही है और उसके बी० ए० पास अकाउँटेंट से अच्छा काम करने लगी है तो वह मौन रहा और उसे उसने काम करने से रोका नहीं।

इस प्रकार जीवन सरस चल रहा था। दिसम्बर मास आ गया था और अब वह काउँटर पर बैठ ग्राहकों से बातचीत भी करने लगी थी।

एक दिन सुरेश अपनी विवाहिता के साथ अपनी गाड़ी में पेट्रोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
डलवाने आया तो निर्मला को काउँटर पर बैठे देख चकित रह गया। उसने मोटर का टैंक भरने के लिए कह काउँटर के सामने आ हाथ जोड़ नमस्ते कर दी।

निर्मला ने उसे देखा तो मुस्कराकर हाथ जोड़ पूछ लिया, ''हाँ, और क्या चाहिए?''

''एक बात पूछना चाहता हूँ।''

''मेरे विषय में?''

''नहीं, चन्दनसिंह के विषय में।''

''पूछिए।''

'वह कहाँ है?''

''कलकत्ता गया हुआ है।''

''किसलिए?''

''अपनी पत्नी को सैर कराने के लिए।''

''तो···?'' वह अवाक्मुख उसे देखता रह गया।

''तो क्या? पूछिए। आपके मन की बात वैसे जान तो गई हूँ, फिर भी आप पूछिए तो ठीक रहेगा।''

सुरेश पूछनेवाला तो यह था कि उसका विवाह चन्दन से नहीं हुआ क्या? परन्तु अब इस प्रश्न को निरर्थक समझ उसने पूछा, ''तो आप चार जून को घर से भाग क्यों गई थीं?''

निर्मला मुस्कराई और उसकी पत्नी की ओर देखकर बोली, ''इन देवीजी से सहानुभूति उमड़ पड़ी थी।''

सुरेश की पत्नी पेट्रोल भरवा बताने आई थी कि एक डिब्बा मोबिल-ऑइल का भी लिया जाए। परन्तु वह सेल्स-विमैन से अपने पति को हँसते हुए बातें करते देख चुप खड़ी हो गई थी।

सुरेश ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, ''तो आप इनको जानती थीं?''

''सहानुभूति रखने के लिए जानने की आवश्यकता होती है क्या? इतना तो ज्ञात था कि मेरे आपको रिजैक्ट कर देने पर आपका विवाह होगा
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही। जिससे भी होगा उसका कल्याण तो मैं कर ही रही हूँ।''

सुरेश हँस पड़ा। उसने कहा, ''तो आपका इनसे परिचय करा दूँ—ये हैं श्रीमती सुरेशसिंह, हरदोई के वकील श्री अवधेशसिंह की पुत्री। आपके घर से भाग जाने के एक सप्ताह के भीतर ही पिता जी ने इनको घर लाने का प्रबन्ध कर दिया था।

''और मोहिनी! ये हैं निर्मला देवी, इस दूकान के मालिक की लड़की। एक समय इनकी सगाई मुझसे हुई थी और विवाह से दो दिन पूर्व ये घर से लापता हो गई थीं। पिता जी का विचार था कि इनको लापता करने में इनके पिता का ही हाथ था। वे सगाई तोड़ने का यह सुगम उपाय करते प्रतीत हुए थे।

''मैं पिता जी से मतभेद रखता था। मेरा विचार था कि इनका एक मौसेरा भाई ही इनको भगाकर ले गया है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि हम दोनों ही गलत थे।''

सुरेश की पत्नी को यह वार्तालाप सुहाया नहीं। उसने कहा, ''हमको लम्बी यात्रा पर जाना है। एक मोबिल-ऑइल का डिब्बा ले मूल्य चुका शीघ्र मोटर पर आ जाइए।'' इतना कह वह निर्मला को एक भी शब्द कहे बिना मोटर की ओर चली गई।

निर्मला ने कहा, ''आपकी पत्नी को मुझसे गिला प्रतीत होता है। अब चल दीजिए। कहीं वह गिला आप पर न प्रकट होने लगे।''

निर्मला ने नौकर को मोबिल-ऑइल का डिब्बा लाने के लिए कहकर कैश-मीमो बना दिया।

सुरेश ने दाम देते हुए कहा, ''मैं अपनी पत्नी से प्रसन्न नहीं हूँ।''

''भगवान से प्रार्थना करिए कि वह इसे सद्बुद्धि दे।''

निर्मला जब रुपये गिन रही थी, सुरेश ने कहा, ''पर कुछ अपने लिए आप भी भगवान से कहती हैं कि नहीं?'' इतना कह वह चल दिया।

चन्दन के विवाह से दो वर्ष उपरान्त की बात है। धर्म मोटरगाड़ी में आया और पेट्रोल भरवाने लगा था। ज़मींदारी की ओर से गाड़ी ले ली गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला मकान से नीचे उतरी तो धर्म को खड़ा देख समीप आकर सुख-समाचार पूछने लगी—मौसी, चन्दन, उसकी पत्नी आदि का। चन्दन के घर लड़का हुआ था और कर्मजीत के घर लड़की। यह सुन निर्मला हँस पड़ी।

धर्म इस हँसने का अर्थ समझने के लिए प्रश्न-भरी दृष्टि से निर्मला का मुख देखने लगा। निर्मला ने बात बदलकर पूछ लिया, "और आपके घर क्या हुआ है?"

"अभी कुछ नहीं। हो सकता भी नहीं था। अभी घर ही नहीं है।"

"तो अभी विवाह नहीं किया?"

"लड़की-पक्ष की ओर से अभी प्रस्ताव ही नहीं आया।"

"तो स्वयं अपनी ओर से प्रस्ताव कर देना था।"

"किया हुआ है, उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"कितना समय हुआ है प्रस्ताव किए?"

"प्रस्ताव दूत के हाथ भेजा था ९ जून सन् १९२६ के दिन।"

"बहुत प्रतीक्षा की है।" निर्मला समझ गई थी कि उसके भेजे प्रस्ताव का उल्लेख हो रहा है।

परन्तु धर्मजीत ने कह दिया, "जब तक एक प्रस्ताव का हाँ अथवा ना में उत्तर न आ जाए, तब तक किसी अन्य स्थान पर प्रस्ताव कैसे किया जा सकता है?"

"तो लड़की-पक्षवालों ने कुछ उत्तर नहीं भेजा?"

धर्म प्रश्न-भरी दृष्टि से निर्मला की ओर देख रहा था। निर्मला गम्भीर हो विचार करने लगी थी। एकाएक उसने कहा, "किधर जा रहे हैं?"

"कल से आया हुआ हूँ। यहाँ कुछ काम था। अब गाँव को जा रहा हूँ।"

"मोटर में जगह है? मैं आपके साथ चलना चाहती हूँ।"

"इस गाड़ी में तो आपके लिए सदैव स्थान रहेगा। चलिए!"

"ठहरिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दूकान में गई। राजबहादुर अभी घर पर ही था। जब से निर्मला दूकान पर काम करने लगी थी, वह देरी से दूकान पर आनें लगा था। निर्मला काउँटर पर गई तो दूकान के सेवक ने बता दिया कि उसके पेट्रोल और मोबिल-ऑइल का कितना बिल है। निर्मला ने बिल बनाया और चपरासी को देकर कह दिया कि दाम वसूल कर लो। स्वयं वह एक कागज पर यह लिखने लगी—"पिता जी! मैं अपना विवाह करने जा रही हूँ। समाचार भेज दूँगी। चिन्ता नहीं करिएगा।—निर्मला।"

उसने इसे एक लिफाफे में बन्द कर दिया और काउँटर पर पेपरवेट से दबाकर रख दिया। चपरासी रुपए लाया तो उसने वह रकम कैशबॉक्स में रख दी और धर्मजीत के समीप आकर बोली, "चलिए, मौसी और चन्दन भैया से मिलने को जी कर आया है।"

दोनों गाड़ी में बैठे और गाड़ी चल पड़ी।

●●●

167929
Gurukul Kangri University, Haridwar
081
167929

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R089.9143 GUR-P आगत संख्या 167929

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 & 1989)

शिक्षा : एम. एस–सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

हिन्दी साहित्य सदन

नई दिल्ली - 110 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar